Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com   For evaluation only.

ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - ८ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मई (प्रथम) २०१३

स्वामी अमृतानन्द

डॉ. धर्मवीर

आचार्य ज्ञानेश्वर

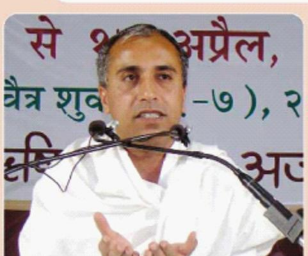
आचार्य आशीष

ध्यान प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर
११-१७ अप्रैल २०१३
ऋषि उद्यान, अजमेर

आचार्य सत्यजित्

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com   For evaluation only.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ **अंक :** ०९
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: वैशाख कृष्ण, २०७०
कलि संवत्: ५११४
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक–परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर– ३०५००१
दूरभाष: ०१४५–२४६०१६४

मुद्रक–श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५–२४६०८३१

–परोपकारी का शुल्क–

भारत में

वार्षिक–२०० रु., **द्विवार्षिक**–३९० रु., **त्रिवार्षिक**–५८० रु., **आजीवन**–(=१५ वर्ष)–२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक–५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**–९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**–१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**–(=१५ वर्ष)–५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५–२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५–२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मई प्रथम २०१३

अनुक्रम

१. ९० वर्ष के युवा महाशय जी	सम्पादकीय	०४
२. संस्कार का स्वरूप	स्वामी विष्वङ्	०६
३. कुछ तड़प–कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
४. जिज्ञासा–समाधान–४४	सत्यजित्	१२
५. मीमांसा एक मनोहारी दर्शन	शीतल	१७
६. आर्य नवयुवकों से	बनारसीदास	२२
७. ऋषि भक्ता, साहसी, वीरांगना.......	हंसमुनि योगार्थी	२७
८. स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि से...	शिवनारायण	२९
९. पुस्तक परिचय	सोमदेव	३१
१०. पाठकों के विचार		३३
११. पाठकों की प्रतिक्रिया		३४
१२. संस्था समाचार		३६
१३. आर्यजगत् के समाचार		३८

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

– उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं –
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

९० वर्ष के युवा महाशय जी

गत २६ मार्च को एम.डी.एच. के मालिक महाशय धर्मपाल जी का जन्मदिन सोल्लास, तालकटोरा स्टेडियम में मनाया गया। महाशय जी का जन्मदिन मनाने का अन्दाज निराला होता है। पहले भी अनेक बार उनके जन्मदिन के अवसर पर उपस्थित होने का और शुभकामनाएँ देने का अवसर मिला है। प्रातः यज्ञ के साथ ही उनका समारोह प्रारम्भ होता है, तो देर रात्रि तक अनेक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होता है। उनका व्यापारिक क्षेत्र बहुत बड़ा है उसमें सभी लोग सम्मिलित होते हैं। सब अपने-अपने तरीके से उनके प्रति सम्मान स्नेह प्रकट करते हैं। महाशय जी सभी लोगों का आदरपूर्वक सम्मान ग्रहण करते हैं। इस बार भी उनका आयोजन भव्य तरीके से मनाया गया।

प्रतिवर्ष उनका आयोजन उनके कार्यस्थल पर मनाया जाता था। इस बार क्योंकि महाशय जी का ९०वां जन्म दिन था, उसे भव्य बनाने का प्रयास महाशय जी के शुभ चिन्तकों का हो यह स्वाभाविक है। महाशय जी के जीवन की अनेक विशेषतायें हैं, जिन पर इस समारोह में प्रकाश डाला गया। महाशय जी, जहाँ व्यवसाय की दक्षता रखते हैं, परन्तु उनके जीवन की सादगी और सरलता उनको अन्य व्यवसायी लोगों से भिन्न करती है। मनुष्य के पास थोड़ा सा धन आ जाता है, तो उसमें अहंकार धन से पहले आ जाता है। परन्तु महाशय जी एक व्यवसायी और उद्योगपति हैं, परन्तु उनके मन में अहंकार का भाव नितान्त नहीं। उनसे मिलने कोई भी जा सकता है। सबसे सरलता पूर्वक मिलते हैं। सहजता से उपलब्ध होते हैं। उनके स्नेह और सरलता का एक उदाहरण देखने को मिला।

एक युवक आया, उसने महाशय जी को प्रणाम किया बड़े सहज भाव से उनके पास जाकर बोला देखिये न, आपने कोट दिया तो मैं इसे पहनकर इन-इन स्थानों पर गया, ऐसा-ऐसा कार्य किया। मुझे आपके कारण सफलता मिली। उसने जिस सहज भाव से यह बात महाशय जी को कही, महाशय जी ने उसी आत्मीय भाव से उसकी प्रशंसा की उसका उत्साह बढ़ाया। महाशय जी के पास कोई व्यक्ति जाता है, तो वे उसका यथासंभव मार्गदर्शन और सहयोग करते हैं। महाशय जी ने अपने जीवन का परिचय मसालों की भांति कराया है। उनकी तांगे वाले से उद्योगपति बनने की कहानी सभी दूरदर्शन पर देखते हैं। उन्होंने अपने जीवन में जो किया कभी उसे छोटा नहीं समझा, कभी उसे छिपाया नहीं। वे जब भी अपने जीवन के संस्मरण सुनाते हैं, तो विभाजन के बाद पाकिस्तान से दिल्ली आने और कैसे तांगा चलाते हुए मसालों के व्यवसायी बन गये, इस चर्चा को करना नहीं भूलते। महाशय जी पर न आयु का बन्धन, न प्रतिष्ठा के बड़प्पन का बोझ लदा हुआ दीखता है। वे विवाह समारोह में नाचने वालों के साथ नाच सकते हैं। आर्यसमाज के समारोहों पर उन्हें अपने सम्मान चिह्न को सिर पर रखकर उल्लसित होते देखा जा सकता है। नब्बे वर्ष की आयु में शरीर में शिथिलता आनी स्वाभाविक है, परन्तु जब तालकटोरा स्टेडियम में एक पुराने दृश्य में बच्चों के साथ अपने को नाचते देखा तो, तुरन्त मन्च पर पहुँचकर बच्चों के साथ नाचना प्रारम्भ कर दिया। यह उनका सरल स्वभाव उनको सबके लिए सहज उपलब्धता का कारण है।

महाशय जी का अनूठापन उनके व्यापार में लक्षित होता है। दुनिया के सभी व्यापारी अपने उत्पाद का विज्ञापन करते हैं। इसके लिये वे अभिनेताओं को, विज्ञापनकर्त्ताओं को करोड़ों रुपये देते हैं, परन्तु महाशय जी पैसे तो मसाले के विज्ञापन के लिए देते हैं, परन्तु अपना विज्ञापन मुफ्त में करा लेते हैं। यह निश्चय करना कठिन है कि मसाले महाशय जी से जाने जाते हैं या महाशय जी मसाले से जाने जाते हैं। यह विज्ञापन जगत में अद्‌भुत प्रयोग है। इसके एक मात्र उदाहरण महाशय जी हैं। महाशय जी को अपने चित्रों से बच्चों की तरह का प्रेम है। महाशय जी एक दिन में दर्जनों दूरदर्शन के कार्यक्रमों में होते हैं, जितने चित्र दूरदर्शन और समाचार पत्रों में प्रतिदिन होते हैं। करोड़ों लोग देखते हैं, परन्तु आप यदि अपने कार्यक्रम में उन्हें बुलाते हैं और उसके चित्र उन्हें भेंट करते हैं, तो उसकी प्रसन्नता देखने लायक होती है।

महाशय जी की सफलता उनके परिश्रमी, ईमानदार, दीर्घ जीवन में छिपी है। उनकी बड़ी आयु का रहस्य उनकी दिनचर्या और प्रभु विश्वास में है। कौन मनुष्य है जिसके जीवन में दुःख दुर्घटना और मृत्यु के अवसर नहीं आते? वे सब अवसर महाशय जी के जीवन में भी आये हैं, परन्तु उन्होंने इसे परमेश्वर की व्यवस्था समझकर सहज स्वीकार किया। फिर चाहे परिवार में किसी की मृत्यु हो या फैक्ट्री का कोई विवाद हो। सब परिस्थितियों को सहना, सुलझाना और अपने जीवन को सहज रखना कोई भी महाशय जी से सीख सकता है। उनकी दिनचर्या आज भी उन्हें स्वस्थ रखे है। व्यायाम, मालिश नियमित भ्रमण करना इसका आधार है। उनका अपने कर्मचारियों, व्यापारियों, संस्थानों, कार्यकर्त्ताओं से बड़ा मधुर व्यवहार रहता है।

समाज कल्याण के कार्यों की लम्बी शृंखला है। उनके द्वारा लाखों से करोड़ों तक व्यय करके जो सामाजिक कार्य किये जा रहे हैं। समारोह में ऐसे अट्ठाइस कार्यों की सूची प्रस्तुत की गई जिनमें विद्यालय, चिकित्सालय, आर्यसमाज मन्दिर,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गोशाला, स्मारक, आदि सम्मिलित हैं। २००८ में अजमेर पधार कर महाशय चून्नीलाल जी व माता चनन देवी की स्मृति में पच्चीस लाख रुपये की लागत से गोशाला का निर्माण कराया। जो आज अपने क्षेत्र की आदर्श गोशाला है।

उनके सहज व्यवहार का एक प्रसंग मुझे स्मरण है। जब महाशय जी ने अजमेर के महर्षि के बलिदान स्थल के विकास में सहयोग देने की घोषणा की, तो मैंने उनसे निवेदन किया। इतिहास पुरातत्व का संरक्षण निर्माण से अधिक महत्त्व रखता है। हमारे लिए आदर्श स्थिति होगी, स्मारक भवन को पूरा अपने आधीन ले और जैसा ऋषि के बलिदान के समय उसका स्वरूप था उसे वैसा ही रखें। नई जगह पर नये भवन बनायें। यह कार्य कठिन नहीं था। जब अजमेर में बलिदान शताब्दी मनाई गई थी तब भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने उस स्थान को आर्यसमाज को देने की घोषणा की थी।

समारोह के अवसर पर जब राजस्थान के मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर यहाँ पधारे, तो उन्होंने भी यह स्थान आर्यसमाज को देने की घोषणा की थी। इस पर कार्यवाही भी प्रारम्भ हो गई थी। किन्तु अपने ही प्रमाद व उपेक्षा वृत्ति से यह कार्य संभव नहीं हुआ। जब तीन सौ वर्ष बाद दिल्ली की कोतवाली सिक्खों को दी जा सकती है, तो बलिदान भवन का परिसर आर्यसमाज को न मिले इसका कोई कारण नहीं। अस्तु जब मैंने महाशय जी से इस दिशा में विचार करने का निवेदन किया, तो वे बड़े सहज भाव से बोले तेरी बात मेरी समझ से परे है, मैं केवल धन दे सकता हूँ, क्या होना चाहिये, यह मेरी बुद्धि का विषय नहीं है। जो मेरे परामर्शदाता हैं, उनको तुम समझा दो उनकी समझ में आ जायेगा, तो वैसा कर लेंगे। वह नहीं हो सका, परन्तु महाशय जी के प्रयास और सहयोग में कोई कमी नहीं रही।

ऋषि दयानन्द का कोई भी भक्त अपने पूर्ण प्रयास से उनका कार्य करे यह स्वाभाविक है। जिसके पास जितने साधन हैं, वह उतना करने का यत्न करता है, परन्तु ऋषि के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए महाशय जी ने तन-मन-धन से जो योगदान दिया है, वह आर्यसमाज के इतिहास में अविस्मरणीय है। ऋषि दयानन्द के जीवन के जब एक सौ पच्चीस वर्ष मनाये गये तब महाशय जी करोड़ों रुपये व्यय कर दूरदर्शन, समाचार पत्रों द्वारा ऋषि का जो प्रचार किया, उससे ऋषि के विचार व चित्र विश्व के कोने में पहुँचे। यह उनकी ऋषि-निष्ठा का द्योतक है। आर्यसमाज कितना भी प्रचार करना चाहे, परन्तु साधनों के अभाव में वह कार्य नहीं कर सकता था, जो महाशय जी के सहयोग से संभव हुआ। महाशय जी के कार्यालय में नियमित रूप से यज्ञ होता है। यह उनके आर्य सिद्धान्त व दिनचर्या में निष्ठा का द्योतक है।

महाशय जी के ९०वें जन्मदिन का समारोह, उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक राजनेताओं ने उद्योगपतियों ने, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने इस अवसर पर उपस्थित होकर महाशय जी के जीवन पर प्रकाश डाला उनके स्वस्थ दीर्घ जीवन की कामना की। स्कूल के बच्चों ने अपने नृत्य और गान से महाशय जी के जीवन पर प्रकाश डाला और प्रेरणप्रद बनाया।

हजारों की संख्या में बच्चे, स्त्री, पुरुष महाशय जी को इस अवसर पर अपनी शुभकामना देने के लिए समारोह में उपस्थित थे। यह महाशय जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में सम्पन्न हुआ। इसमें विद्यालयों के बच्चों की भागीदारी, उनके माता-पिता का सम्मिलित होना। व्यवसायी, सम्बन्धी, मित्रगण, व्यक्तिगत परिचित लोग समारोह में आना, यह तो स्वाभाविक था, परन्तु इस कार्यक्रम में सैंकड़ों की संख्या में साधुओं, संन्यासी, आचार्यों की उपस्थिति आश्चर्य उत्पन्न करने वाली थी।

संन्यासीगण आर्यसमाज का कार्यक्रम समझकर आये होंगे और उनको उन्हीं की ओर से निमन्त्रित किया गया होगा। और जो भी लोग वहाँ उपस्थित थे उनका कार्यक्रम था, उन्होंने अपने विचार रखे, जिनके बालकों ने भाग लिया, उनके माता-पिताओं की उपस्थिति महाशय जी के लिए तथा बच्चों के लिए उत्साहवर्द्धक होना स्वाभाविक है। परन्तु वहाँ पर न तो कोई साधु-संन्यासियों का कार्यक्रम था न वहाँ उपस्थित जनता के लिए साधुओं ने कोई कार्यक्रम दिया। तीन-चार घण्टे उनका बैठकर बालक-बालिकाओं के नृत्य और गान कार्यक्रम में भाग लेना उनके कार्य और दिनचर्या से मेल नहीं खाता। इतना ही नहीं वे संन्यासी लोग बीच से उठकर बाहर क्यों बैठे। लोगों में इसकी उत्सुकता रही। फिर इन आचार्यों और साधुओं में अनेक लोग ऐसे थे, जिन्होंने अनेक समारोहों में अपने डण्डे खड़ेकर सिद्धान्त के नाम पर कार्यक्रम को बन्द कराने का प्रयास किया। वे आज सहज भाव से कार्यक्रम का आनन्द ले रहे थे।

जब आयोजन के साथ बड़े नाम जुड़ते हैं तो गम्भीर कार्यक्रम की कल्पना होती है। सांस्कृतिक कार्यक्रम भजन-सन्ध्या जैसे आयोजन न सभाओं के महत्त्व को प्रकाशित करते हैं न साधुओं की उपस्थिति के औचित्य को ही प्रदर्शित करते हैं। फिर भी इस सब के साथ महाशय जी का सम्बन्ध है, अतः इस समारोह के माध्यम से हम सब महाशय जी के दीर्घायुष्य व स्वस्थ, सुखी जीवन की कामना करते हैं। वेद के मन्त्र में बहुत सुन्दर कहा है-

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि, चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।।

''वह परमैश्वर्यवान् परमेश्वर आपको श्रेष्ठ ऐश्वर्य, चित्त की दक्षता, उत्तम सौभाग्य, वाणी की मधुरता और जीवन के प्रत्येक दिन की सुदिनता प्रदान करे।''

-**धर्मवीर**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्कार का स्वरूप

-स्वामी विष्वङ्

मनुष्य के जीवन में संस्कारों का गहरा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य-जीवन की सफलता-उन्नति में और असफलता-अवनति में संस्कारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। संस्कार ऐसे गुण-धर्म हैं, जो आत्मा के साथ हजारों, लाखों, करोड़ों नहीं बल्कि अरबों वर्षों तक चलते हैं। इस कारण मानो कि आत्मा संस्कारों के विशाल जाल में फंसा हुआ है। बहुत बड़े जाल रूपी संस्कारों से आत्मा को बाहर निकलना हो, तो एक मात्र मार्ग है। वह है, आध्यात्म मार्ग, जिस आध्यात्म मार्ग में चलते हुए मनुष्य संस्कारों को जानने-समझने में समर्थ होता है।

संस्कार का अभिप्राय है, मन में पड़ने वाली छाप। अर्थात् मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों से जो कुछ भी जानता और करता है, वह मन पर अंकित होता है, उस अंकन-मुद्रण को संस्कार कहते हैं। मन पर पड़ने वाले संस्कारों का क्रम इस प्रकार है कि प्रातःकाल उठने से लेकर रात्रि में शयन पर्यन्त और जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त निरन्तर मन पर अनगिनत संस्कार पड़ रहे हैं, और यह क्रम जन्म-जन्मान्तरों से निरन्तर चल रहा है। इस क्रम का रुकना-बन्द होना अध्यात्म-मार्ग में सम्भव है।

अध्यात्म-मार्ग में चलने वाले व्यक्ति योग के माध्यम से संस्कारों को जान लेते हैं। योग को बतलाने वाले महर्षि पतञ्जलि और महर्षि वेद व्यास के अनुसार संस्कार-दो प्रकार के होते हैं। एक वासना रूप संस्कार, दूसरा धर्माधर्म रूप संस्कार। वासना रूप संस्कार वे होते हैं, जो मनुष्य को बार-बार स्मरण-याद-स्मृति दिलाते रहते हैं और अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश को उत्पन्न कराते रहते हैं। मनुष्य स्मरण-स्मृति से फिर नया ज्ञान व कर्म करने में प्रवृत्त होता है। इसी प्रकार अविद्या, अस्मिता आदि क्लेशों से प्रेरित होकर फिर नया ज्ञान व कर्म करने लगता है। और यह क्रम अनवरत चलता रहता है।

धर्माधर्म रूप संस्कार वे होते हैं जो मनुष्य को जाति, आयु और भोग रूपी फल को देने वाले होते हैं। जिस फल से मनुष्य सुख या दुःख का अनुभव करता है। मनुष्य ने यदि कर्म किया है, तो उसका संस्कार-उचित कर्म का उचित संस्कार-धर्म के रूप में और अनुचित कर्म का अनुचित संस्कार, अधर्म के रूप में मन पर पड़ता है। और वह धर्म-अधर्म रूप संस्कार तब तक मन में रहता है, जब तक उसका फल मनुष्य को प्राप्त नहीं होता है। इस धर्म-अधर्म रूपी संस्कार का मिटना-हटना या न मिटना-न हटना ईश्वर के आधीन होता है। यह सर्व-विदत है कि न्यायकारी ईश्वर न्याय-पूर्वक ही धर्माधर्म संस्कारों को व्यय-समाप्त करता है। इस व्यवस्था को मनुष्य नहीं कर सकता है। कर्म किया है, तो कर्म का फल मनुष्य को अवश्य भोगना पड़ता है।

धर्माधर्म रूप संस्कारों को उत्पन्न करना और मन पर अंकित करना, तो मनुष्य के हाथ में है। परन्तु उनको मिटाना-हटाना मनुष्य के हाथ में नहीं है। पहले प्रकार के जो वासना रूप संस्कार हैं, उनको उत्पन्न करना और मन पर अंकित करना मनुष्य के हाथ में है और अध्यात्म मार्ग में चलकर उनको मिटाना-हटाना भी मनुष्य के हाथ में है। मनुष्य जो भी जानता व करता है, वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त साधनों के माध्यम से जान व कर पाता है। उसी प्रकार वासना रूपी संस्कारों को भी मिटाना-हटाना ईश्वर के सहयोग के बिना असम्भव है। ईश्वर का सर्वाधिक सहयोग अध्यात्म-मार्गी ही ले पाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन करने वाला ही ईश्वर का सर्वाधिक सहयोग ले पाता है। इसलिए ईश्वर-आज्ञा का प्रतिशत पूर्ण करना हमारे हाथ में है।

वासना रूपी संस्कारों को मिटाने से पहले अध्यात्म-मार्गी को यह जानना आवश्यक है कि वासनाएँ मनुष्य को कितना दुःखी, अशान्त, अतृप्त, असन्तुष्ट, अप्रसन्न, उद्विग्न करती हैं। वासनाओं के कारण जीवन कितना अव्यवस्थित होता जा रहा है। अनेकों बाधाओं को सहते हुए लौकिक-मार्ग को त्याग कर अध्यात्म-मार्ग को अपनाया गया है। मन को ईश्वर में लगाकर ईश्वर की अनुभूति करना चाहते हैं। परन्तु मन ईश्वर में एकाग्र न हो कर नाना प्रकार की स्मृतियों को उठाता रहता है। उन स्मृतियों को रोकते-रोकते सारा समय बीत जाता है। पर स्मृतियाँ समाप्त नहीं होती हैं। ऐसा लगता है कि कहाँ-कहाँ से ऐसी स्मृतियाँ आ रही हैं। स्मृतियों को रोकते-रोकते सम्पूर्ण जीवन ही समाप्त हो जायेगा पर स्मृतियाँ समाप्त नहीं हो पायेंगी। क्योंकि जन्म-जन्मान्तरों से चली आ रही हैं। उनको रोकने के लिए केवल अभ्यास पर्याप्त नहीं होता है। अभ्यास के साथ विवेक-वैराग्य की आवश्यकता अत्यधिक है।

प्रायः आध्यात्मिक व्यक्ति अभ्यास में अधिक पुरुषार्थ करता हुआ विवेक-वैराग्य को गौण करता हुआ चलता है। इस कारण सफलता उतनी नहीं मिलती है, जितनी अपेक्षित होती है। अध्यात्म-मार्गी स्मृतियों के कारण वासनाओं को न हटाकर स्मृतियों को हटाने का अभ्यास करता रहता है। स्मृतियाँ कार्य स्वरूप हैं और वासनाएँ कारण स्वरूप हैं। कारणों को हटाये बिना कार्य नहीं हट पायेंगे। इसलिए कारणों को हटाने में अधिक पुरुषार्थ करना अपेक्षित है। वासना रूपी कारण बिना विवेक-वैराग्य के हट नहीं सकता है। इसलिए अध्यात्म-पथ पर चलने वाले प्रत्येक अध्यात्म मार्गी का परम कर्त्तव्य बनता है कि वह वासना रूपी संस्कारों को जानकर-समझकर उनको हटाने के लिए अभ्यास के साथ-साथ विवेक-वैराग्य को जीवन में अत्यधिक अपनाएँ। जिससे वासना रूपी संस्कार मिट सके और जीवन धन्य हो सके।

ऋषि उद्यान, अजमेर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्यसमाज पर खुशवन्त सिंह का प्रहार-वयोवृद्ध पत्रकार श्री खुशवन्त सिंह अनेक बार अपने लेखों में स्वयं को नास्तिक बता चुके हैं। आपने सिख मत के मान्य ग्रन्थ के कुछ भाग का अंग्रेजी अनुवाद भी किया है। सिख इतिहास पर लिखी आपकी एक पुस्तक हमने भी पढ़ी है। नास्तिक होते हुए भी आप यदा-कदा धार्मिक विषयों पर भी कुछ लिखकर अपने प्रशंसक-पाठकों को रिझाते रहते हैं। आपके ऐसे लेखन की एक विशेषता यह है कि आपने सिख मत, इस्लाम व ईसाइयत की किसी मूलभूत मान्यता पर कभी वार-प्रहार नहीं किया। गायत्री मन्त्र की महिमा में सारे विश्व में बड़े-बड़े विचारकों ने लिखा है। खुशवन्त सिंह ने गायत्री मन्त्र पर भी निर्दयता से वार किया था।

आपको तब यह भी ध्यान न आया कि गुरुद्वारों में सदा यह मधुर गान सुनाई देता है :-

दिया तले अन्धेरा जाहं। वेद पाठ मति पापां खाई।

आप यह भी भूल गये कि सिखों की मान्य वाणी में एक महात्मा जी ने इस आशय का भी एक शब्द दिया है कि जिस मुख से वेद व गायत्री का पाठ किया जाता है, वह कैसे पाप-कर्म कर सकता है, अर्थात् वेदानुसार जीवन बिताने वाला पाप से दूर-दूर रहता है।

श्रीमान् जी यह अच्छी प्रकार से जानते हैं कि सिख मत की यह पवित्र वाणी है-**असंख ग्रन्थ मुखि वेद पाठ।** और वेदों में एक से अधिक बार गायत्री मन्त्र आता है। आपने इतना भी न सोचा कि गायत्री पर वार करेंगे तो यह गुरु ग्रन्थ साहिब पर भी आक्षेप समझा जावेगा।

अपने किये पर तब आपने स्पष्टीकरण देते हुए खेद भी प्रकट किया था, परन्तु अब फिर न जाने किसके तुष्टिकरण के लिये आपने ओ३म् पर वार करते हुए एक दैनिक अंग्रेजी समाचार-पत्र में एक लेख दिया है। बुढ़ापे में श्रीमान् दूसरों की भावनाओं को आहत करने का यश लूटने में लगे हैं। आपकी पीड़ा यह है कि ओ३म् का अंग्रेजी भाषा में कोई पर्याय नहीं। यह शब्द ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश में भी आपको नहीं मिला। आप इसके अर्थ जानने के लिये अंग्रेजी के शब्द कोश पर माथा-पच्ची करते रहे। आपके पुरुषार्थ पर बलिहारी। यह तो वैसी ही कहानी बन गई कि एक वृद्धा माता की सूई घर में गुम हो गई। घर में अंधेरा था। रात का समय था। गली में लैम्प देखकर प्रकाश में कुछ खोज रही थी तो गली के बच्चों ने पूछा, "माँ क्या खोज रही है?"

बूढ़ी माता ने कहा, 'सूई गुम गई है। वही खोज रही हूँ"। उन बच्चों ने भी इधर-उधर खोजने में कोई कमी नहीं छोड़ी, परन्तु सूई नहीं मिली।

एक बच्चे ने कहा, "सूई गुम गई है। वही खोज रही हूँ"। उन बच्चों ने भी इधर-उधर खोजने में कोई कमी नहीं छोड़ी, परन्तु सूई नहीं मिली।

एक बच्चे ने पूछा, "माता सूई गिरी कहाँ थी?

माई बोली, "बेटा घर की पिछली कोठरी में गिरी थी।" सब बच्चे खिलखिलाकर हँसे और सबने कहा, "माँ सूई घर में गिरी और तू यहाँ टक्करें मार रही है।'

माता बोली-"बच्चों! क्या करूँ घर में अंधेरा है। यहाँ तो नगरपालिका ने गली में प्रकाश की व्यवस्था कर रखी है"।

खुशवन्त जी ने उस माता का इतिहास दोहरा दिया है। आर्ष साहित्य में इनकी गति व रूचि नहीं। संस्कृत साहित्य के किसी मर्मज्ञ की शरण में जाने से डर लगता है। संस्कृत अंग्रेजी शब्द कोश को देखना किसी ने सुझाया नहीं। अंग्रेजी भाषा के लेखक होने का अभिमान इनको ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्द में ले घुसा। हम अपने देश के इस अनुभवी वयोवृद्ध पत्रकार को क्या कहें? इनकी दयनीय दशा देखकर रोना आता है। कोई अल्पज्ञानी ऐसी बात कहता व लिखता तो लोग कहते-**बुद्धि बड़ी या भैंस?**

गुरुवाणी की आड़ लेकर आप ओ३म् के मनगढ़न्त अर्थ बताते हैं अहंकार अथवा अहंमन्यता। ज़ोर देकर आगे गुरुवाणी का नाम लेकर इसको (ओ३म् को) बहुत कुछ समझने से बचने की चेतावनी देते हैं। गुरुवाणी इसे दीर्घ रोग बताती है। अहंकार एक भयंकर रोग है यह तो ठीक है। इससे बचना चाहिये। यही रोग खुशवन्त जी को चिपक गया लगता है।

सबकुछ जानते हुए यह भूल गये कि गुरुवाणी का शब्द है-

ओंकार ब्रह्मा उत्पत्ति। ओंकार किया जिन चिति।।
ओंकार सैल जुग भए। ओंकार वेद निरमए।।
ओंकार शब्द उधरे। ओंकार गुरमुखि तरे।।

श्रीमान् खुशवन्त सिंह जी ओ३म् तथा गायत्री पर प्रहार करते हुए (Pride or Egotism) अर्थात् अहंमन्यता इसका अर्थ लेते हैं। इसे एक (Foul Disease) घिनौना रोग घोषित करते हैं। श्रीमान् जी जो कुछ आपने लिखा है उसे गुरुवाणी के उपर्युक्त शब्दों की कसौटी पर कसिये। दोनों का मिलान करके निर्णय किसी भी विद्वान् या अंजान से करवा लीजिये। सब आपको गुरुवाणी का निन्दक व मिथ्यावादी ही कहेगा। ओंकार का जप करने वाला तर जाता है। पार उतर जाता है। यह गुरुवाणी का घोष है। आप इससे उलट कुछ कह रहे हैं। हम

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आपसे जानना चाहते हैं कि आपने क्या सिखों के धर्मध्वज पर एकोंकार नहीं देखा? क्या सब गुरुद्वारों पर ओंकार लिखा मिलता है या नहीं?

सिखों का प्रभातवन्द ही **'एकोंकार'** से आरम्भ होता है। यही एक शब्द है जो सिख मत को प्राचीन वैदिक धर्म, दर्शन व सभ्यता के खूँटे से दूर जाने से रोकता है। हम यही भी जानते हैं कि कई सिख ज्ञानियों ने ओ३म् अथवा ओंकार की महिमा पर कई पुस्तकें लिखी हैं। आप आयु में हमसे बहुत बड़े हैं। हमें आपकी यह स्थिति देखकर दया आती है। रोना आता है। इतना खुल खेलना तो ठीक नहीं। हम और भी पचासों प्रमाण सिख विद्वानों के देते, परन्तु बुद्धिमानों के लिये संकेत ही पर्याप्त हैं। जब जी साहिब को खोलकर एक बार पहले पृष्ठ को ही पढ़ लीजिये, कल्याण हो जावेगा। यह भी सुन लो–**''प्रणवो आदि एकंकारा''** के अर्थ किसी बड़े ज्ञानी से ही पूछकर लोगों को बता दीजिये। सत्य का ग्रहण करने की प्रभु आपको शक्ति दें। हम तो आपके लिये यही प्रार्थना कर सकते हैं, परन्तु आप तो ईश्वर की सत्ता ही नहीं मानते, उसकी प्रेरणा को प्राप्त क्या करेंगे?

श्री अभिमन्यु जी खुल्लर के प्रश्नों का उत्तर–हमारे कृपालु श्री अभिमन्यु खुल्लर ने कुछ प्रश्न पूछे हैं। आप कुछ वर्ष पूर्व मुझे मिलने अबोहर आये थे तभी से ही परोपकारी परिवार के सदस्य हैं। आपके प्रश्नों के उत्तर सर्वोपयोगी होने से परोपकारी में देना उपयोगी समझा।

आपने सन् २००८ में परोपकारी में प्रकाशित मेरी एक टिप्पणी का स्मरण करवाते हुए यह पूछा है, ''श्रद्धेय लक्ष्मण जी लिखित ऋषि जी के सबसे बड़े जीवन चरित्र में देवबन्द के मदरसा को चार सौ रुपये देने की घटना का कहीं संकेत मिलता है?''

मान्य अभिमन्यु जी यह भूल गये कि तब उनके यहाँ आने पर मैंने मेज़ पर रखे लक्ष्मण जी के ग्रन्थ को उठाकर कहा था कि आपकी आज्ञा लेकर इसमें से मौलाना कासिम जी के कुछ वाक्य सुनाकर आपको सत्य का साक्षात करवा देता हूँ। पढ़कर सुनाने की आवश्यकता ही न पड़ी। आपने आर्यत्व का परिचय देते हुए मौखिक प्रमाण को स्वीकार कर झट से तथ्य को जान लिया, मान लिया। अब इधर मान्य अभिमन्यु जी ने उस विषय को लक्ष्मण जी के ग्रन्थ के संदर्भ में उठाकर बहुत सूझबूझ का परिचय दिया है। ऐसा लगता है कि आपने हैदराबाद के वेश गज़ट 'आर्य जीवन' में श्री कैलाश सत्यार्थी के छपे लेख को पढ़कर यह प्रश्न पूछा है।

१. हमारा निवेदन है कि लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में इस गप्प का कोई संकेत नहीं है।

२. गप्प तो गप्प ही होती है। गप्प गढ़ने वाले पहले ४००/– रु. दान देना बताते थे। अब देश गज़ट में महंगाई को देखते हुए यह राशि ४५०/– कर दी गई है। इसी को फ़ारसी में कहते हैं–**'दरोग़ गो रा हाफिज़ा न बाशद'** अर्थात् झूठे की स्मृति नहीं होती।

३. वेश बन्धु इस घटना को १८६६ का बताते हैं। अच्छी बात है कि गप्प को Potency (शक्ति) बढ़ाने के लिए निश्चित समय भी खोज निकाला।

४. वेशों ने ताल ठोक कर यह राग भी छेड़ दिया है कि ऋषि ने मौलाना कासिम जी के सौरों आने पर १९६६ में उन्हें यह राशि भेंटकर दी। यहाँ वेशपंथी चूक गये। ऐसा कहकर ऋषि को देवबन्द की जियारत (तीर्थाटन) से वञ्चित कर दिया। ऋषि जी इस पुण्य को न लूट पाये जो अग्निवेश जी के प्रारब्ध में था जो देवबन्द का दीदार कर पाये।

५. अभिमन्यु जी ने प्रश्न उठाया है तो हम इस प्रसंग में झूठे के घर तक पीछा करते हुए गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आज्ञा का पालन करते हैं। मौलाना कासिम जी ने मार्च १८७७ में चाँदापुर में ऋषि जी से प्रथम बार भेंट की थी। मौलाना के अपने लेख का प्रमाण हमारे पास है जो हम ऋषि जीवन के दूसरे भाग के एक परिशिष्ट में देंगे।

६. वेश गज़ट में छपा है कि देवबन्द में लगी 'नामपट्टिका' तथा कागजात में ऋषि जी को 'रहबरे आजम' कहकर सम्बोधित किया गया है और कागज़ात में भी ऐसा ही लिखा है। देवबन्द में ऐसी कोई नामपट्टिका स्वमी जगदीश्वरानन्द जी को तो दिखाई न दी। कोई किसी कागज़ व रिपोर्ट में ऋषि का नाम नहीं। यदि वहाँ नामपट्टिका होता तो श्री अग्निवेश उसके पास खड़ा होकर अपना फोटो खिंचवाकर भारत से बाहर भी इस्लामी देशों में यह फोटो दिखाता फिरता।

७. लो मित्रों! और नोट कर लो 'रहबरे आज़म' (शिरोमणि नेता) का तो कहीं देवबन्दियों ने ऋषि के लिये प्रयोग किया नहीं, हाँ कुछ गालियाँ मौलाना कासिम जी ने ऋषि को अवश्य लिखित रूप में दी हैं, जिन्हें हम यहाँ नहीं देते। अब ग्रन्थ के दूसरे भाग में दो गालियाँ तो नमूने के रूप में परिशिष्ट में अवश्य देंगे। है तो बहुत कुछ परन्तु इतने से ही बुद्धिमान् जनता सब समझ जावेगी। वेशों के गज़ट में छपी अन्य गप्पों की शव परीक्षा किसी अगले अङ्क में की जायेगी। इतिहास का उपहास उड़ाना तथा इतिहास को प्रदूषित करना तो बड़ा सरल कार्य है परन्तु, इतिहास को समझना व पचाना हर किसी के बस की बात नहीं। जैसे हिमालय की गोदी में पढ़ा पत्थर 'कोहिनूर' हीरा नहीं हो सकता वैसे ही ऋषि-जीवन पर लिखने वाला प्रत्येक भद्रपुरुष पं. लेखराम, पं. लक्ष्मण, श्री देवेन्द्र बाबू, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, दीवान हरबिलास, महात्मा मुंशीराम तथा पं. युधिष्ठर तथा श्री पं. इन्द्र व पं. विष्णुदत्त नहीं हो सकता।

श्री अभिमन्यु जी के कुछ और प्रश्न–हदीसें गढ़ने वालों तथा प्रक्षेप करने वालों ने जनता को इतना शङ्कित कर दिया है

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कि सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश में दिन के बारह बजे आँखों वालों को सामने खड़े हाथी के अस्तित्व पर शङ्का होने लगी है। महर्षि की अर्थी को १६ व्यक्तियों ने उठाया। इसका प्रमाण भी श्री अभिमन्यु जी जैसे कई सुपठित बन्धु पूछते रहते हैं। सब आर्य भाई जान लें कि श्री हरबिलास जी ने महाराज की अर्थी को कन्धा दिया था। उन्होंने अर्थी उठाने वालों की गिनती तभी की।

सोलह व्यक्तियों ने उस विभूति की अर्थी को कन्धा दिया था। तब तत्काल आपको श्री महाराज का कथन स्मरण हो आया, "Even after my death sixteen men will take my dead body for cremation." (**द्रष्टव्य** Life of Dayanand saraswati; Page 335 By Shri Harbilas) अर्थात् कि मरने के पश्चात् भी मेरे मृतक शरीर को सोलह मनुष्य उठाकर श्मशान भूमि लेकर जायेंगे।

आपने लिखा है कि शवयात्रा में सम्मिलित लोगों की संख्या भी भिन्न-भिन्न बताई जाती है। हमारा निवेदन है कि किसी सभा, उत्सव तथा ऐसे अवसरों पर कोई Attendance Register उपस्थिति पंजिका तो होती नहीं। दर्शक अपनी-अपनी समझ से अनुमान से बता देते व लिख देते हैं। दैनिक पत्रों में किसी बड़ी रैली व महासम्मेलन के समाचार पढ़कर आप ऐसा निर्णय कर सकते हैं।

इसी प्रसंग में सिख भाई भी थे-इस बारे में भी जानना चाहा है। हमारा निवेदन है कि इस विषय में श्रीयुत् इन्द्रजीत जी परोपकारी में पहले कभी लिख चुके हैं। सिख भी होंगे। इसमें अचम्भे की क्या बात? अनेक सिख ऋषि के भक्त, प्रशंसक व शिष्य थे। श्री पं. भगवद्दत्त जी को महर्षि दयानन्द जी के पत्रों के संग्रह करने की प्रेरणा देने वाले पहले व्यक्ति थे-आर्यवीर श्री रूपसिंह जी, जो पहले सिख मत अनुयायी थे और दूसरे थे श्री महाशय कृष्ण जी। स्यालकोट के विशाल आर्य मन्दिर की भूमि का दानदाता महाराजा रणजीत सिंह का पौत्र श्री जंगजोध सिंह था।

यह बात जो प्रचारित कर दी गई है कि ऋषि की इच्छा या आदेशानुसार हुक्का, तम्बाखू का सेवन न करने वाला ही मेरी अर्थी को कन्धा देवे-तब ऐसे व्यक्ति अजमेर में न मिलने से सिख भाई आगे आये, यह कोरी गप्प है। यह रोचक हदीस है। हरबिलास जी ने कन्धा दिया। वह आर्य पुरुष थे। क्या वह हुक्का पीते थे? ऐसे ही अन्य आर्य पुरुषों के बारे में समझें।

'आर्य समाचार' मासिक का वह अंक-अभिमन्यु जी ने आर्य जनता तक यह आनन्ददायक समाचार पहुँचाने का हमें अवसर प्रदान किया है कि हम परोपकारी के माध्यम से समस्त ऋषि भक्तों को यह शुभ सूचना देवें कि महर्षि के अन्तिम दिनों के तथा दाहकर्म आदि वृत्तान्त का सब लेखकों का सबसे बड़ा स्रोत वीर शिरोमणि पं. लेखराम जी का ग्रन्थ है। श्री पण्डित जी की जानकारी के कई स्रोत थे, परन्तु उनका एक बड़ा स्रोत 'आर्यसमाज' उर्दू मासिक मेरठ है। पण्डित जी ने आर्यसमाचार का इस प्रसंग में नामोल्लेख भी किया है। उसी की भाषा कई महत्त्वपूर्ण बातें पण्डित जी ने लिखी हैं। आर्य समाचार को यह सब सामग्री अजमेर के आर्यों ने भेजी थी। यह कई वर्ष पूर्व हमने बताया था।

'आर्यसमाचार' का यह ऐतिहासिक अब किसी भी सभा संस्था के पास नहीं। किसी आर्य पुरुष ने कृपा करके इसे नष्ट होने से बचाने के लिये यह अमूल्य निधि हमें सौंप दी। श्री पं. लेखराम जी ने ऋषि के महाबलिदान के बहुत सी सामग्री इसी अङ्क से ली, फिर भी कई छोटी-बड़ी घटनायें पण्डित जी से छूट गईं या वे न दे पाये। लगता है कि यह हमारे प्रारब्ध में था कि आर्य जाति को यह छूट गई सामग्री हमारे द्वारा प्राप्त हो। ऋषि जी के सम्पूर्ण जीवन चरित्र में हम आर्यसमाचार में छपी ऐसी कई घटनायें परिशिष्ट में दे रहे हैं। कुछ पृष्ठों की प्रतिछाया भी दे रहे हैं। इस अंक के साथ अन्य कई अंकों की सुरक्षा का भार आगे परोपकारिणी सभा के कर्णधारों के कन्धों पर होगा। हम इस सामग्री को बेचेंगे नहीं। श्रद्धा से भरपूर हृदय से आगामी ऋषि मेला पर परोपकारिणी सभा को सौंप देंगे।

नाई को पाँच रुपये दिये गये-श्रीमान् भारतीय जी ने कुछ समय पूर्व अन्तिम वेला में ऋषि का क्षौर करने वाले नाई को उस युग में पाँच रुपये दिलवाने की घटना पर प्रश्न उठाया था। कहाँ लिखा है कि ऋषि ने नाई को पाँच रुपये दिलवाये? प्रश्न तो अच्छा ही है। तब तो दो पैसे में नाई हजामत बना देता था। हमने भारतीय जी के प्रश्नों का सप्रमाण उत्तर दिया था। श्री पं. लेखराम जी के ग्रन्थ में यह घटना नहीं है। लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में तो अस्थान पर मिलती है। हमारा अनुमान है कि लक्ष्मण जी को ला. जीवनदास जी से यह जानकारी मिली होगी। 'आर्यसमाचार' मेरठ के उपरोक्त अङ्क में यह महत्त्वपूर्ण घटना पूरी की पूरी दे रखी है। इस पृष्ठ की प्रतिछाया हम ग्रन्थ के दूसरे भाग में दे रहे हैं।

जोधपुर वालों की भक्ति व कृपा तो देखिये-जोधपुर के राज परिवार के वकीलों ने बड़ाई, चतुराई से जोधपुर में घटी दुर्घटनाओं व ऋषि से किये गये क्रूर व्यवहार को छुपाने के लिये क्या नहीं किया? प्रत्येक प्रमाण व कथन की मित्रों ने नई-नई व्याख्याएँ घड़ीं। यह बात लोगों के सामने आने ही न दी गई कि जोधपुर से अजमेर पहुँचते ही आर्यों ने ऋषि की चिकित्सा व सेवा करने की सब व्यवस्था करने के लिये एक बैठक बुलाई। इसमें यह भी निश्चय हुआ कि आर्यसमाजें तथा आर्य भाई उपचार के लिये अपना-अपना योगदान देवें। जोधपुर से प्रस्थान करते हुए जो राजपरिवार ने भेंट दी थी, वह कहाँ गई?

हमने एक लेख में यह रहस्य खोला था कि वह राशि हुण्डी के रूप में थी। वह भेंट Cash (नगद) नहीं थी। इस पर जोधपुर वालों के एक घन सयाने वकील ने हमें एक अच्छा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पाठ पढ़ाया। कोई बात नहीं हम झाड़ सुनकर चुप हो गये। जोधपुर वालों की श्रद्धा भक्ति का पोल हमने खोला, यह ठीक है परन्तु हमें इसका प्रमाण अजमेर वालों की कृपा से ही प्राप्त हुआ। अब इसको सप्रमाण इतिहास प्रेमियों के सामने रखेंगे।

महर्षि तो इतने उदार व परोपकारी थे कि ब्र. रामानन्द की माता के दाहकर्म की राशि अपने पास से बिन मांगे उपलब्ध करवाते हैं और महर्षि की चिकित्सा के लिये अजमेर में आर्यों को बैठक बुलानी पड़ गई। आज तक सयाने लोगों ने इस बैठक की बात क्या किसी व्याख्यान व लेख अथवा ग्रन्थ में लिखी क्या? यह दर्दीला प्रसंग, निष्ठुर जोधपुरियों की गाथा कब तक लुकी-छिपी रहेगी? शाहपुराधीश का राज्य बहुत छोटा था, मसूदा कितना बड़ा था? महाराणा सज्जन सिंह ने भी हुण्डी न दी। जोधपुर का राजपरिवार ही इतना दयालु-कृपालु निकला कि उन्हें ऋषि का अन्त स्पष्ट दीख रहा था। फिर भी हुण्डी दी कि जाओ जाकर वसूल करते रहना। हरबिलास जी ने व अन्यों ने भी यथार्थ ही लिखा है कि उदयपुराधीश के मेवाड़ तथा प्रताप सिंह, जसवन्त सिंह तथा नन्दी के मारवाड़ में अन्तर है और बहुत बड़ा अन्तर है। महर्षि के एक भक्त ने एक बार हमें कहा कि यह तो पं. युधिष्ठिर जी, हरबिलास जी व आप जैसे व्यक्ति नन्ही को वेश्या लिखते चले आ रहे हो, जोधपुर राजपरिवार के चतुर प्रतिनिधि तथा प्रवक्ता उसे भगतन व वैष्णव ही लिखते व बताते हैं। जब आर्य लोग नन्ही को वेश्या लिखते व बताते हैं तो उन लोगों के कलेजे धड़कते हैं।

उस बन्धु से हमने कहा कि जसवन्त सिंह के निधन पर जब नन्ही राजभवनों से निकाली गई तो वह कहाँ गई? उस भाई ने इस प्रश्न का उत्तर उलटा हमीं से पूछ लिया। हमने उसे बताया कि उसका बहुत बढ़िया निजी घर आज भी जोधपुर में है। वह वहाँ रहने लगी। यह निवास रण्डी मुहल्ले में है। हमने भी उसका घर दूर खड़े होकर देखा था। श्री ओम्मुनि जी ने देखा है। हमने उस विद्वान् भाई से कहा, अरे भाई हमीं नहीं महर्षि भी नन्ही को वेश्या ही लिखते हैं। क्या ऋषि झूठ लिखते हैं?

कर्नाटक का प्रथम आर्य पुरुष-कई वर्षों पूर्व हमने अपने माननीय कृपालु व स्नेही श्री डॉ. राधाकृष्ण जी तथा श्री सत्यव्रत जी की प्रेरणा से कर्नाटक के आर्यसमाज के इतिहास लेखन का कार्य अपने हाथ में लिया। किसी सभा के कहने पर इस कार्य को करना हमारी महामूर्खता थी। इतिहास लिखते समय वहाँ की सभा ने एक बैठक में हमसे पूछा, आपको सर्वथा नई क्या घटना व क्या सामग्री मिली? हमें वे लोग बता चुके थे कि सात खण्डों के इतिहास के लेखक उन्हें पहले बता चुके थे कि कर्नाटक में आर्यसमाज स्वामी नित्यानन्द जी पहले लाये। हमने उन्हें बताया कि उससे दस वर्ष पूर्व कर्नाटक में ऋषि के जीवन काल में आर्यसमाज स्थापित हो गया था। उसके अधिकारियों के नाम भी बता दिये। यह भी बताया कि श्री कृष्ण शास्त्री कन्नड़ भाषी प्रथम विद्वान् था जिसने पूना में ऋषि के उपदेश सुने, वह ऋषि भक्त तो था, आर्यसमाजी नहीं था। सप्रमाण यह जानकारी पाकर वे सब आनन्दित हुए।

अब महर्षि का जीवन चरित्र लिखते हुए यह नई खोज हम सप्रमाण आर्य जाति को अर्पित करते हैं कि कर्नाटक का प्रथम आर्य पुरुष मैंगलूर का एक प्रतिष्ठित पण्डित था। उसने १८७५ में मुम्बई में ऋषि दर्शन किये थे। उसका नाम हमसे स्पष्ट पढ़ा नहीं जा सका। महात्मा ब्रह्मदेव जी के सहयोग से नाम का पता कर लिया जावेगा।

(........ शेष फिर)

-वेद सदन, अबोहर।

नये संस्करण बिक्री हेतु उपलब्ध

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक का नाम	मूल्य
१. दयानन्द ग्रन्थमाला-३ भागों का १ सैट	५५०.००
२. ऋग्वेद भाष्य भाग-५	२५०.००
३. यजुर्वेद भाष्य भाग-२	३५०.००
४. यजुर्वेद भाष्य भाग-३	२५०.००

उपरोक्त पुस्तकें नई छपकर बिक्री हेतु आ गई हैं, जो पाठकगण पुस्तकें मंगाना चाहें, तो कृपया वैदिक पुस्तकालय, केसरगंज, अजमेर से सम्पर्क करें। **-व्यवस्थापक, दूरभाष: ०१४५-२४६०१२०**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

॥ ओ३म्॥

योग-साधना शिविर

(दि. १६ से २३ जून २०१३। १६ जून को शाम ४ बजे तक पहुँचना है।)

आपके मन के किसी कोने में साधना करने की इच्छा बीज रूप में अंकुरित हो रही हो, अपने सर्वश्रेष्ठ जीवन को वेद एवं ऋषियों के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हों, विधेयात्मक एवं सृजनात्मक जीवन चाहते हों, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हों, वैदिक साधना-पद्धति को जानना समझना चाहते हों, वैदिक सिद्धांतों को समझना चाहते हों या अपने को वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित करने की अभिलाषा रखते हों तो यह शिविर आपको आपके चिंतन के अनुरूप उचित दिशानिर्देश एवं उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

शिविरार्थियों को पूर्ण लाभ मिल सके एतदर्थ अनुशासन में चलना नितांत आवश्यक होगा। शिविर के दिनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन एवं मौन के निर्धारित समय में मौन रहना अनिवार्य होगा। शिविर के पूरे काल में साधक को पत्र दूरभाष आदि किसी भी प्रकार से बाह्य संपर्क निषेध है। ऋषि उद्यान के अंदर ही निवास करना होगा। समाचार-पत्र पढ़ने, आकाशवाणी सुनने, दूरदर्शन देखने की अनुमति नहीं है। धूम्रपान, तम्बाकू या अन्य किसी भी प्रकार के मादक द्रव्य का सेवन निषिद्ध रहेगा।

जो साधक इन नियमों तथा शिविर की दिनचर्या को स्वीकार करें वे मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५००-१००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था उपलब्धता व पूर्व सूचना के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बरतन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएं। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएं अन्यथा यहां भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुंचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएं साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबंधी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अंतिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

Web Site :- www.paropkarinisabha.com　(: मार्ग :)　E.mail address:- psabhaa@gmail.com

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जिज्ञासा-समाधान-४४

-सत्यजित्

(जिज्ञासा-समाधान ३८, परोपकारी दिसम्बर-प्रथम २०१२ में श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर के लेख का समाधान किया गया था। उस समाधान पर लेखक ने अपना अभिमत लिखा है। यह लेख अप्रैल के आरम्भ में प्राप्त हुआ। इस बार के जिज्ञासा-समाधान में लेखक का अभिमत दिया जा रहा है। साथ में लेखक द्वारा किये गये प्रश्नों-आक्षेपों का समाधान भी किया जा रहा है।-**संपादक**)

श्रीमान् संपादक महोदय, आपने अपनी सम्मानित पत्रिका में मेरा संदर्भित लेख प्रकाशित कर मुझे गौरवान्वित किया है। ''**परोपकारी**'' में आचार्य सत्यजित् ने उसको जिज्ञासा, उलझन, प्रश्न, आशंका मानकर उनका समाधान प्रस्तुत किया है। इस समाधान पर मेरा अभिमत भी ''**परोपकारी**'' को प्रकाशित करना उचित होगा, पर मुझे इसकी कम ही संभावना दिखती है। अतः यह अभिमत आपकी सेवा में भेजकर अपनी सम्मानित पत्रिका में प्रकाशित करने का निवेदन है, जिससे आपकी पत्रिका के सुधि पाठकों को विषयवस्तु के अन्य पहलुओं की भी जानकारी हो सके।

''**कर्मफल सिद्धान्त एक अलग दृष्टिकोण**'' पर परोपकारी अंक २३ दिसम्बर (प्रथम) २०१२ में प्रकाशित **जिज्ञासा-समाधान-३८** पर लेखक का अभिमत-'**कर्मफल सिद्धान्त-एक अलग दृष्टिकोण**' लेख पाप-पुण्य की मान्य, स्वीकृत विचारधारा के विपरीत है और इस प्रतिक्रिया के लिये मैं तैयार था।

यह लेख साप्ताहिक आर्यजगत् नई दिल्ली; आर्य प्रतिनिधि, रोहतक; नूतन निष्काम पत्रिका, मुम्बई में प्रकाशित होने की सूचना के साथ श्री टीकाराम आर्य के समाधान का सन्दर्भ देते हुए जिज्ञासा-समाधान-३८, दिसम्बर (प्रथम) २०१२ में सम्पूर्ण लेख प्रकाशित कर समाधान प्रस्तुत किया है। अब यह लेख साप्ताहिक आर्य मर्यादा, जालन्धर; मासिक आर्यवन्दना, सुन्दरनगर (हिमाचल); साप्ताहिक अयोध्या संवाद, जानकीपुरम्, अयोध्या (उत्तरप्रदेश) में भी प्रकाशित हो चुका है। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख भेजकर मैं रक्तसाक्षी पं. लेखराम के एक आदेश 'तहरीर' का काम बन्द नहीं होना चाहिये का ही पालन करता हूँ। न ''छपास'' की भूख मिटाने को और न आर्थिक लाभ के लिये। धार्मिक विषयों वाली पत्र-पत्रिकाओं के लेखकों को कोई पारिश्रमिक नहीं मिलता और न वे उसकी अपेक्षा रखते हैं।

निःसन्देह मैं आचार्य सत्यजित् जी का हृदय से सम्मान करता हूँ। आर्य परम्परा में विद्वानों का आदर करना सिखाया जाता है। मैंने जिज्ञासा समाधान ३८ का गहराई से अध्ययन किया है। इस समाधान (परोपकारी) के पूर्व कर्मफल सिद्धान्त पर जिज्ञासा-समाधान के सभी पूर्व अंकों का भी मैंने मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया है।

सम्पूर्ण लेख को आचार्य जी ने जिज्ञासा (क्रमांक-३८) मानकर उसका समाधान प्रस्तुत किया है। मुझे प्रसन्नता है कि परोपकारी के सुधी पाठकों को मेरा द्वितीय लेख पढ़ने को मिला। इससे पूर्व मेरा लेख ''एक अनोखा ब्राह्मण और उसके द्वारा स्थापित कीर्तिमान'' नवम्बर-२००८ में प्रकाशित हुआ था।

आचार्य जी ने लेख के समाधान का वर्गीकरण चार भागों में यथा क, ख, ग, घ में किया है। मैं अपना अभिमत इसी वर्गीकरण के अन्तर्गत प्रस्तुत करता हूँ। आशा है परोपकारी इसे प्रकाशित करने का सौहार्द प्रदर्शित करेगी।

(क) मैंने अपने लेख में क्रियमाण व संचित कर्म शब्दावली का उपयोग न कर सिर्फ इतना ही लिखा है कि पाप-पुण्य तुल्य वाले जीव को मनुष्य शरीर मिलता है। इसका आशय स्पष्ट ही है कि यहाँ संचित-कर्म ही अभिप्रेत है, क्रियमाण-कर्म नहीं।

आचार्य जी ने अंकित किया है कि 'संचित कर्मों' में जब पाप-पुण्य की तुल्यता होती है तो साधारण मनुष्य का जन्म मिलता है। यहाँ साधारण विशेषण भ्रमोत्मादक एवं अनावश्यक है। सब मनुष्य ''साधारण'' ही उत्पन्न होते हैं। उन्हें असाधारणता उनके कर्मों से प्राप्त होती है। आदि शंकराचार्य, गौतम बुद्ध, स्वयं महर्षि दयानन्द भी साधारण मनुष्यों की साधारण सन्तानें थीं। इसी प्रकार अब्राहम लिंकन, महात्मा गाँधी, गणितज्ञ रामानुजम्, विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटीन, हिटलर एवं स्टालिन भी साधारण मनुष्य की साधारण सन्तानें थीं। जिन असाधारण मनुष्यों ने गृहस्थाश्रम धर्म का पालन किया उनकी सन्तानों को कोई भी असाधारण नहीं मानता। क्या गौतम बुद्ध का पुत्र उतना ही महान् हुआ जितना वे स्वयं थे? क्या हीरालाल जी महात्मा गाँधी की असाधारण सन्तान थे?

आचार्य जी ने अंकित किया है कि जन्म के समय उनका वर्गीकरण उत्तम, मध्यम, निकृष्ट शरीरादि सामग्री वाले के रूप में ही महर्षि ने निरूपित किया है। इस वाक्य में ''शरीरादि सामग्री वाले'' वाक्यांश द्रष्टव्य है। निर्धनता, भुखमरी, मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव तथा शिक्षा के अभाव में उत्पन्न

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जीव को, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ जीन्स वाले माता-पिता कहाँ से और कैसे प्राप्त होंगे? शरीर की प्राप्ति जीवशास्त्र का एक अति कठिन विषय है। इस पर जीवशास्त्रियों की सम्मति लेना उचित होगा।

(क- ।।) आचार्य जी ने अत्यधिक कुशलता से निरूपित किया है कि गरीब ही अपराध नहीं करते, गरीबी की रेखा के ऊपर वाले भी अपराध करते हैं, पाप करते हैं। इस समाधान में आचार्य जी ने कारण और अनुपात का ध्यान नहीं रखा। गरीब, निर्धन के अपराध का कारण उसकी निर्धनता है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का कोई साधन न होना है, इसलिये उसके अपराध का प्रतिशत सर्वाधिक है। रहा सवाल, खाते-पीते, सम्पन्न लोगों के अपराध या पाप में संलग्न होने का। उसके दो कारण प्रमुख हैं-लोभ और कामनावासना। जहाँ तक दृष्टिपात कीजिये प्रमुखतया यही कारण मिलेंगे और इनके कर्ताओं की संख्या कुल सम्पन्न लोगों की संख्या का दस प्रतिशत से भी कम होगी।

(क - ।।।) आचार्य जी ने निर्धनता का कारण समाज व राष्ट्र द्वारा किये गये अन्याय को रेखांकित किया है। समाज या राष्ट्र, ये अन्याय क्या सिर्फ इसलिए कि वे प्रतिरोध की क्षमता रखते हैं? सम्पन्न लोगों के विरुद्ध क्यों नहीं कर पाता?

(ख) आचार्य जी का कथन है कि निर्धन वर्ग (यहाँ अति निर्धन वर्ग की चर्चा हो रही है) मनुष्य जीवन की 'महत्ता' को समझ सकता है। आचार्य जी का यह अभिमत सत्य से परे है, बहुत परे है। प्रतिदिन जब व्यक्ति का सम्पूर्ण सामर्थ्य रोजी-रोटी की जुगाड़ करने में ही व्यतीत हो जाता है। रात्रिकालीन समय खा-पीकर पत्नी के आगोश में बिताकर व्यतीत हो जाता है। और फिर अगली सुबह वही चिन्ता। तब उसके पास भजन-पूजन, चिन्तन-मनन, लोक कल्याण के लिये समय व शक्ति (धन तो उसके पास है नहीं) देने के लिये कुछ बचता है? आचार्य जी निर्धन वर्ग के जीवन के इस पहलू पर जरा ध्यान तो दीजिये?

(ग) इस बिन्दु के समाधान करते समय स्वयं आचार्य जी ही फंसे दिखाई देते हैं। जीव प्रवाह से अनादि है। मनुष्य जन्म मिलने पर अधिकांशत: जीव पाप (मनस, वाचा, कर्मणा) अधिक करते हैं। इसलिये उनके क्रियमाण कर्म जिनके परिणाम उसने अपने जीवनकाल में नहीं भोगे हैं, मृत्यूपरान्त संचित कर्मों में जुड़ जावेंगे। यह वृद्धि पापियों की, दुष्टों की ही अधिक होगी, धर्मात्माओं, सच्चरित्रों की नहीं होगी।

दूसरी बात, जीवन एक जैविक प्रक्रिया है। इसे पाप-पुण्य से जोड़ना उचित नहीं है। जीवित मनुष्य को ही सदाचारी भलामानुष, लोकहितैषी बनाने के लिये ही पाप-पुण्य का 'भय' दिखाया जाता रहा है। चाहे वह रौख नर्क के नाम पर हो, चाहे दोज़ख के नाम पर।

(घ) इस बिन्दु के अन्तर्गत आचार्य जी ने बहुत कुछ समेटने का प्रयत्न किया है। आचार्य जी का कथन है कि सामूहिक नरसंहार के जनक स्टालिन (२ करोड़ से अधिक) हिटलर (५०-६० लाख) को यह अतिमानवीय शक्ति उन्हें "कर्मानुसार" प्राप्त हुई थी और इस शक्ति को उन्होंने बढ़ा लिया था। यदि यह बात सत्य है तो ईश्वर के स्रष्टा और नियामक स्वरूप का क्या बना? ईश्वर अपनी समस्त रचना को 'ऋतु' में, शाश्वत, अटल नियमों में निबद्ध कर संचालित करता है। जब प्रलयावस्था में जीव भी परमात्मा के आश्रय में रहता है, तब उसे किसी भी जीव को अनियंत्रित, अपरिमित शक्ति सम्पन्न नहीं करना चाहिए। क्या इसका वेद सम्मत अन्य समाधान है? परमात्मा के इस कार्य-व्यापार को वेदज्ञ मनीषियों को सोचना, समझना चाहिये और वह ज्ञान हम जैसे अल्पज्ञों को हृदयंगम कराना चाहिये।

दूसरे आचार्य जी का यह कथन कि इतने बड़े नरसंहार "सैकड़ों-हजारों-लाखों" के एकजुट होने पर होते हैं, सही नहीं है। इनको एक जुट किसने किया? एक व्यक्ति ने। जर्मनी के हिटलर ने, रूस के लेनिन और स्टालिन ने राष्ट्रवाद का ऐसा उन्माद, ऐसा जुनून अपने देशवासियों में भर दिया कि वे उन व्यक्तियों के आदेशों को बिना ना नुकुर किए पालन करते गए। न्यूरेमबर्ग न्यायालय में जब हिटलर द्वारा आयोजित यहुदियों के कत्लेआम के एक प्रमुख व्यक्ति आईखमेन पर मुकद्दमा चला तो उसने पूरी गंभीरता से समस्त उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हुए कहा कि उसने कोई नरसंहार में हिस्सा नहीं लिया। उसने तो केवल फ्यूहरर के आदेशों का ही पालन किया। आज भी जर्मनी में हिटलर के हजारों कट्टर समर्थक, प्रशंसक मिल जावेंगे। यदि वहाँ गलती से भी हिटलर का उल्लेख अपमान जनक शब्दों में किया तो जान की खैर नहीं।

आचार्य जी का यह कथन-"गलत प्रेरणा आदि से दूसरे मनुष्य गलत कार्यों के लिये एक जुट हो जाते हैं, ठीक है। पर बात चल रही है पाप-पुण्य अवधारणा की। किन पापों के कारण इन लाखों-करोड़ों मानवों-आबालवृद्ध नरनारी को इतनी भीषण, भयावह, अकल्पनीय पीड़ा युक्त मृत्यु मिली? उनके पापों के कारण या इन नरसंहारों के जनक की अतिअमानवीय शक्ति के कारण? उत्तर इसका चाहिये था जो उन्होंने नहीं दिया।

आचार्य जी का यह कथन-"यदि आत्मा की कर्म की स्वतंत्रता को अस्वीकार करेंगे तो कहीं उचित समाधान नहीं होगा।" यही तो मेरा मन्तव्य है कि वेद मर्मज्ञ विद्वानों को, संन्यासियों को चिन्तन-मनन कर समाधान ढूँढना होगा? यहीं तो मुझे महर्षि दयानन्द याद आते हैं, बहुत याद आते हैं। महर्षि जैमिनी पर समाप्त हुई ऋषि परम्परा को उन्होंने पुनर्जीवित किया। उन्हें तो अपना कार्य चारों वेदों का भाष्य करने का समय ही नहीं मिला। कुल आयु मिली ५९ वर्ष १ माह १६ दिन।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

क्रियात्मक जीवन मिला लगभग १५ वर्ष। उसमें भी अधिकांश समय चला गया भ्रमण, प्रवचन व शास्त्रार्थ में। काश ! वह जीवित रहते और अपना कार्य पूर्ण कर जाते। जीवन काल में भाष्य के अतिरिक्त सम्भाषण, चर्चा में आने वाले अनेक प्रश्नों पर विचार और उनका समाधान करना पड़ता। संभवत: मेरा प्रश्न भी उन्हें समाधान अपेक्षित लगता और वे उसका वेदानुकूल समाधान दे पाते। उनका परलोकगमन हम भारतीयों का ही नहीं, सम्पूर्ण मानवजाति का दुर्भाग्य है। आदरणीय आचार्य सत्यजित् जी, जिज्ञासा समाधान ३८ (परोपकारी दिसम्बर-प्रथम-२०१२) के सम्बन्ध में अपना अभिमत सम्बन्धित पत्रिकाओं को प्रेषित किया था सम्भवत: आपको प्रेषित करना रहा गया था क्योंकि आपकी प्रतिक्रिया अभी तक परोपकारी में प्राप्त नहीं हुई है।

प्रश्न हल्का नहीं है। महोदय शिवनारायण उपाध्याय (कोटा) ने सूचित किया है कि मेरे द्वारा उठाए गए प्रश्न, पाप-पुण्य तुल्य होने की स्थिति में ही मनुष्य जन्म मिलता है, का समाधान आप नहीं दे पाए हैं, मेरा विनम्र अनुरोध है कि आप तथा परोपकारिणी सभा के दिग्गज विद्वान् इस पर विचार करने का कष्ट और एक सम्यक समाधान प्रस्तुत करने की कृपा करें।

-अभिमन्यु कुमार खुल्लर, वरिष्ठ (सेवानिवृत्त) लेखाधिकारी (केन्द्र) २२ नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर, म.प्र.। दूरभाष-०७५१-२४२५९३१

समाधान-लेखक का परोपकारी दिसम्बर (प्रथम) २०१२ में छपा लेख उनकी उलझनों व निर्णयों को संकेतित कर रहा था, किन्तु उनके पीछे के कारणों को बताते हुए भी पूरा स्पष्ट नहीं कर पाता था। पुनरपि उनकी उलझन व दृष्टि को जैसा समझ पाया तदनुरूप समाधान दिया था। इस अभिमत में भी लेखक अनेकत्र अस्पष्ट है। यदि मूल प्रश्न पर टिके रहें व शेष वर्णन उससे जोड़ते हुए ही संगतिपूर्ण रखे जायें, पूछे जायें, तो स्पष्टता रहेगी। पुनरपि प्रासंगिक प्रश्नों का भी समाधान यहां देने का प्रयास किया जा रहा है। स्पष्टता के लिए लेखक से प्रश्न भी पूछे जा रहे हैं। बिना इसके लेखक को समझा पाना कठिन है। लेखक के वर्गीकरण (क) ।, ॥ .... आदि के क्रम से ही समाधान दिया जा रहा है।

(क) यदि लेखक को 'संचित कर्म' ही अभिप्रेत है, तो ठीक है। किन्तु दिसम्बर (प्रथम) में छपे लेख में लेखक ने लिखा था-''महर्षि दयानन्द ने सूत्र दिया कि, पाप-पुण्य जब बराबर होते हैं, तब मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। बस समस्या इसी तुला पर मनुष्य जन्म को लेकर प्रारम्भ हुई''......''सोचिए क्या यह जनसंख्या वृद्धि पाप-पुण्य की समानता वाले मनुष्यों की हो रही है? जबकि इस १२१ करोड़ की जनसंख्या में ८० करोड़ से अधिक गरीबी रेखा से नीचे वाली मनुष्य संख्या है।''

लेखक से प्रश्न है कि जनसंख्या वृद्धि व उनकी निर्धनता को देखने से उन्हें महर्षि दयानन्द के सूत्र पर प्रश्न क्यों उठ खड़ा हुआ? कृपया प्रश्न का आधार स्पष्ट करें। आंख बंद करके किसी की बात स्वीकार न करना अच्छा है, किन्तु प्रश्न भी तो आंख बन्द करके नहीं करना चाहिए। आंख खुली रखने के प्रति लेखक जागरूक है, तो उसे प्रश्न के पीछे की अपनी खुली आंख की दृष्टि भी लिखनी चाहिए। यह दृष्टि पिछले लेख में जो लिखी गई थी वह गरीबी के साथ-साथ अपराधों की बहुलता व सामूहिक अत्याचार के वर्णन रूप में थी। 'अपराधों का करना व सामूहिक अत्याचार' क्रियमाण कर्म में आते हैं। यदि लेखक को स्पष्ट है कि मनुष्य जन्म के लिए संचित पाप-पुण्यों में ही तुल्यता देखी जाती है, तो इन वर्तमान के कर्मों का इस मनुष्य जन्म के पाने के प्रसंग में उल्लेख नहीं होना चाहिए था। यदि वर्तमान के अपराधों व अत्याचारों को इस मनुष्य जन्म की प्राप्ति से जोड़ कर देख रहे हैं, तो कैसे? कृपया स्पष्ट करें।

''जब पाप-पुण्य बराबर होता है साधारण मनुष्य जन्म होता है।'' महर्षि दयानन्द ने स.प्र. समु.-९ में यह लिखा है। लेखक को यहां 'साधारण' विशेषण भ्रमोत्पादक व अनावश्यक लगा, क्यों? क्यों कि उन्हें सब मनुष्य साधारण ही उत्पन्न होते दिखे, उनके माता-पिता भी साधारण ही दिखे, उन्हें विशेषता मात्र कर्म में दिखी। लेखक का कर्म से असाधारण बनने का कथन ठीक है, इस ओर उन्होंने आंखें खुली रखीं, पर साथ में उन्हें अपनी आंख जन्म से प्राप्त विशेषताओं की ओर भी खुली रखनी चाहिए। शरीर, इन्द्रियां, बुद्धि आदि में जन्म से भी भेद होता है, गुणसूत्रों में भी बहुत भिन्नता होती है, विभिन्न योग्यताओं के उभरने की संभावना भिन्न-भिन्न होती है, विभिन्न रोगों के उभरने के संभावना भी भिन्न-भिन्न होती है, यह विज्ञान से सिद्ध है। अत: यदि इस ओर भी आंख खुली रखी जाए तो यह कथन करना दु:साहस होगा कि जन्म से सभी साधारण होते हैं। स्वयं लेखक अपने इस कथन से विपरीत मन्तव्य आगे लिखते हैं-''निर्धनता........शिक्षा के अभाव में उत्पन्न जीव को, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ जीन्स वाले माता-पिता कहां से और कैसे प्राप्त होंगे?'' अर्थात् सब मनुष्य साधारण उत्पन्न नहीं होते। 'साधारण' शब्द को महर्षि के लेख से भी समझ सकते हैं। पुण्य की अधिकता में देव अर्थात् विद्वानों का शरीर मिलने की बात, स.प्र. समु.-९ में लिखी गई है। 'साधारण' शब्द से महर्षि का अभिप्राय 'विद्वान् न होना' लिया जा सकता है।

महर्षि के वाक्य-''इसमें भी पुण्य-पाप के उत्तम, मध्यम और निकृष्ट होने से मनुष्यादि में भी उत्तम, मध्यम, निकृष्ट शरीरादि सामग्री वाले होते हैं।'' में आये 'शरीरादि सामग्री वाले' वाक्यांश को लेखक ने द्रष्टव्य लिखा है। पर यहां उनकी उलझन-प्रश्न क्या है? यहां क्या अस्पष्टता है व इसका उनके मूल प्रश्न से किस प्रकार सम्बन्ध है? स्पष्ट होना चाहिए।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

यहाँ उनका प्रश्न भी विचित्र है, जब निर्धनता....अशिक्षा में जीव उत्पन्न हो गया है तो फिर यह पूछना कि उसे स्वस्थ जीन वाले माता-पिता कहाँ से और कैसे मिलेंगे, व्यर्थ है। कर्मानुसार ईश्वर ने जिस परिवार में जन्म दिया, उसी के जीन्स उसे मिल गये हैं। इस प्रश्न का लेखक के मूल प्रश्न या उसके समाधान से क्या सम्बन्ध है, स्पष्ट नहीं होता। जीव शास्त्रियों की सम्मति लेने का सुझाव लेखक ने दिया है, ठीक है। पर विचारणीय प्रसंग में किस बात पर उनकी सम्मति लेनी है, व क्यों? यदि उन्होंने जीवशास्त्रियों से सम्मति ली हो, तो उसे इस प्रसंग में देकर अपनी बात को स्पष्ट करते तो इस पर कुछ मन्तव्य रखा जा सकता था।

(क- ।।) गरीबों-अमीरों में अपराध के कारण व अनुपात की ओर लेखक ने ध्यान दिलाया। उनकी बात मान ली जाये, तो भी इस तथ्य का मनुष्य जन्म प्राप्त करने के पुण्य-पाप तुल्यता वाले महर्षि सूत्र के सन्दर्भ में वे क्या सम्बन्ध देख रहे हैं? इससे महर्षि के सूत्र का खण्डन कैसे होता है? कृपया वे स्पष्ट कर देवें, तब उनके प्रश्न का समाधान लिखा जा सकेगा।

(क- ।।।) निर्धनता का कारण समाज व राष्ट्र द्वारा किया गया अन्याय भी होता है। इसे लेखक ने उद्धृत तो किया, पर अपनी सहमति-असहमति स्पष्ट नहीं बताई। पर प्रश्न रखा है, इससे प्रतीत होता है कि वे पूर्वकृत पाप-कर्मों को भी इस अन्याय में कारण मानते हैं। यहां यह स्पष्ट समझना चाहिए कि दूसरे द्वारा किया गया अन्याय पीड़ित-व्यक्ति के पूर्वकृत पाप के अनुसार नहीं होता। हर अन्याय एक नया कर्म है व उसे करने वाला अपने कर्म करने की स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करके ऐसा करता है। यह अन्याय ईश्वन नहीं करवाता है। किसी को यह मानने की आशंका नहीं करनी चाहिए कि पीड़ित के पाप के कारण ही इसके साथ अन्याय हो सका है। पुरुषार्थी व समर्थ व्यक्ति अपने पर किये जाने वाले अन्याय को सामर्थ्यानुसार रोक सकता है, कम कर सकता है। असमर्थ व्यक्ति उसे झेलता रहता है। असमर्थता का कारण जहां पूर्व कर्मानुसार प्राप्त अल्प शक्ति-सामर्थ्य है, वहां वर्तमान के पुरुषार्थ की न्यूनता भी है। पीड़ित के पूर्वकृत पाप कर्मों को परोक्ष रूप से जोड़ा जाये, तो भी अन्याय करने वाला तो पीड़ित के पूर्वकृत पाप कर्मों से निरपेक्ष अपनी स्वतन्त्रता से ही अन्याय करता है।

(ख) यह प्रासंगिक चर्चा है। इसका मूल प्रश्न से क्या सम्बन्ध है, लेखक को स्पष्ट करना चाहिए। 'मनुष्य जन्म की महत्ता को समझ पाने या न समझ पाने' का सम्बन्ध पुण्य-पाप की तुल्यता वाले सूत्र से क्या है? इससे महर्षि के सूत्र पर प्रश्न कैसे खड़ा होता है? या उसका खण्डन कैसे होता है? स्पष्टता की आवश्यकता है।

यदि निर्धन की व्यस्तता को देखकर लेखक यह कह रहा है, तो ऐसी व्यस्तता तो अनेक धनिकों में भी रहती है। वैसे अनेक निर्धन इस लिए निर्धन होते हैं, क्योंकि वे कर्म नहीं करते, समय उनके पास बहुत रहता है, हर निर्धन व्यस्त नहीं होता।

(ग) लेखक मुझे यहां फंसा देख रहा है। किसमें, कैसे? स्पष्ट नहीं होता। दूसरी बात में लेखक लिखता है कि "जीवन एक जैविक प्रक्रिया है, इसे पाप-पुण्य से जोड़ना उचित नहीं।....." अपने इस कथन/मान्यता की पुष्टि में लेखक ने कोई प्रमाण-तर्क-युक्ति-आधार नहीं लिखा। जैसे वे आंखें खुली रखते हैं वैसे अन्य भी तो रखते हैं। बिना प्रमाण लिखी बात को सब स्वीकार नहीं कर सकते हैं, इस बात को भी तो आंख खोल देखना चाहिए।

(घ) सामूहिक नरसंहार को देखकर लेखक के मन में ईश्वर के स्रष्टा और नियामक स्वरूप पर प्रश्न उठा है। पर क्यों? सामूहिक नरसंहार से ईश्वर के स्रष्टा होने व नियामक होने पर कोई आक्षेप या संशय नहीं उठना चाहिए। यदि स्रष्टा व नियामक का स्वरूप गलत समझ रखा हो तो प्रश्न उठ सकता है। स्रष्टा व नियामक होने का यह अर्थ नहीं कि उसकी बनाई रचना को कोई विकृत या नष्ट नहीं कर सकता। यहां कर्म की स्वतन्त्रता को विस्मृत करना उचित नहीं, कर्म की स्वतन्त्रता परमात्मा ने ही दी है। स्वतन्त्र कर्म के बाद फल देने में वह नियामक रहता ही है।

परमात्मा द्वारा यदि किसी को जन्म से कर्मानुसार अधिक सामर्थ्य की सम्भावना प्रदान की गई है, तो क्या दोष है? परमात्मा के इस कार्य-व्यापार में लेखक को क्या दोष दिख रहा है? स्पष्ट करेंगे तो समाधान का प्रयास किया जा सकता है।

बड़े नरसंहारों में बहुतों की एकजुटता का लेखक ने खण्डन किया है, उसे एक द्वारा एकजुट कराने के कारण माना है। किन्तु इससे एक जुटता का तो खण्डन नहीं होता, बल्कि समर्थन होता है। प्रथम लेख में लेखक ने सामूहिक नरसंहारों के पीछे एक व्यक्ति को अनियन्त्रित अतिमानवीय शक्ति देने पर प्रश्न उठाया था। उसके समाधान में यह लिखा था कि इन बड़े सामूहिक नरसंहारों को मात्र एक की शक्ति द्वारा किया गया न समझें। इसमें बहुतों की एकजुटता भी रहती है। भले ही मूल में एक की प्रेरणा हो, पर नरसंहार का कार्य अनेकों के एकजुट होने पर ही होता है, इसे गलत कैसे कहा जा सकता है?

लेखक का अगला प्रश्न है कि नरसंहारों में प्राप्त कष्ट-मृत्यु का कारण उनके पाप-कर्म हैं या अन्यायकर्त्ता की शक्ति सामर्थ्य? इसका उत्तर ऊपर भी दिया जा चुका है। यह सब अन्याय है, इसे इनके मात्र पूर्वकृत कर्मों का फल नहीं कहा जा सकता। यह सब अन्याय की कोटि में आता है। यहां कर्म की स्वतन्त्रता का सिद्धान्त साथ में रखकर ही विचार करना चाहिए।

कर्म की स्वतन्त्रता-अस्वतन्त्रता पर महर्षि ने स्पष्ट लिखा है, विद्वान् व संन्यासी आदि भी चिंतन-मनन करते रहते हैं,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

बताते रहते हैं। लेखक को इसे स्वीकारने में क्या समस्या आ रही है? समस्या का कारण क्या है? कारणों को खुली आंख से देखकर उन्हें अभिव्यक्त करना चाहिए। तभी उनकी समस्या को ठीक समझकर उसका समाधान किया जा सकता है।

लेखक द्वारा अन्त में श्री शिवनारायण जी उपाध्याय (कोटा) का मन्तव्य भी दिया गया है, जिसमें "पाप-पुण्य तुल्य होने की स्थिति में ही मनुष्य जन्म मिलने" पर उठे प्रश्न का मेरे द्वारा समाधान न दे पाने की बात लिखी गई है। यहां स्पष्ट कर दूँ कि इस वाक्य में 'ही' शब्द जोड़ना उचित नहीं। ऐसा न तो महर्षि ने लिखा है, न मैंने अपने समाधन में। स्पष्ट रहना चाहिए कि मनुष्य जन्म पुण्य की अधिकता से भी मिलता है।

हो सकता है कि मेरे समाधान से लेखक को व श्री शिवनारायण जी उपाध्याय को सन्तोष न हुआ हो। ऐसे में यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि पाप-पुण्य की तुल्यता में मनुष्य जन्म होने की बात उन्हें स्वीकार्य क्यों नहीं हो रही है? क्यों यह गलत प्रतीत हो रहा है? इसे जाने बिना उनको समझ आ सकने वाला उत्तर देना कठिन है। हो सकता है वैसे ही प्रश्न उठा रखा हो। जब वे अपने प्रश्न/आक्षेप/आशंका के कारण/आधार को देखेंगे, समझेंगे व निश्चित करेंगे तो हो सकता है उन्हें स्वयं इसका आधार नहीं मिल पाये। पुनरपि यदि वे स्पष्टता से लिखते हैं तो पुनः समाधान का प्रयास किया जायेगा। लेखक से निवेदन है कि यदि इस प्रश्न का समाधान श्री शिवनारायण जी उपाध्याय ने भेजा हो तो उससे अवगत करायेंगे।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

।। ऋषि बोध ।।

-कवि सुनील आर्य 'सुनीर'

।। मनहरण धनाक्षरी छन्द ।।

जगत बनायो जिन जगत वसावै जोई।
जगत को पालन करत निसि दिन है॥
असुर सँहारे संत जन को ह्वै[१] तारै अरु।
मारे सब ब्रह्माण्ड लगत नहीं छिन[२] है॥
तिनिशूल[३] धारि उमापति त्रिपुरारि सुनो।
भूतगन भारी चमू[४] ताके अनगिन है॥
गाथा यहै शंकर की शंकर[५] कु तात[६] कहै।
शंकर पियारे भजे शंकर ह्वै धिन है॥ १॥

शंकर को नेह तब लाग्यो मन शंकर के।
शंकर की चाहि में डमगि[६] नैन बूँद रे॥
ब्रत तब राख्यो पिता जैसे ताहि भाख्यो[७] तिन।
भोजन न चाख्यो जाहि बैठ्यो शिव मंदिरे॥
दृग[८] नींद नांही इक सम्भुन की चाहि ह्दै।
ध्यान कु लगाहि आन[९] सबै नैन मूँद रे॥
अहो[१०] कछु भयो[११] तात जगाइ कै कह्यो यह।
कौन महादेव जांपै चढ़ि रहे ऊंदरे॥ २॥

पितुयों सुझाही प्रभु बैठे गिरि[१२] जा ही ये तो।
मूरत सजाही ताहि पूजन कुँ मन्दिरे॥
भजि आठों याम ताहि सम्भुन को नाम जांसो।
होत सिद्ध काम तारै भव बँध बाँधिरे[१३]॥
उत्तम-लच्छन[१४] सुनि तात के वचन अति।
संकि पर्‌योमन बूझै बारक-मुकुंद[१५] रे॥
शिव जो कैलासी नांही शिवल को वासी तो ये।
कौन महादेव जां पै चढि रहे ऊँदरे॥

ह्दै को विसाल मतिमान धर्मपाल फिर्‌यो।
गूहा गिरि ताल अति गहन विजन में॥
कंटक ते छिल्यो रिछ सादूल[१६] तैं मिल्यो कछू।
व्रत ते न हिल्यो सदा रल्यो[१७] सन्त जन में॥
नित्य ग्रन्थ लाग्यो हिमगिरि पै भी भाग्यो मठ।
मठ में ह्वै फिर्‌यो वहै फिर्‌यो बन-बन में॥
देवयान गामी गुरु दयानन्द स्वामी सत्य।
सत्य हौं वदामि तुम्हीं 'सुनीर' सुमन में॥

शब्दार्थ-१=वह, २=क्षण, ३=त्रिशूल, ४=सेना, ५=मूलशंकर, ६=भर आए, ७=कहा, ८=आँख, ९=अन्य, १०=आश्चर्य, ११=हुआ, १२=कैलाश, १३=बन्दियों के, १४=उत्तम लक्षणों वाले, १५=कर्षन जी का बालक, १६=शार्दूल (सिंह), १७=सम्मिलित हुआ।

-पाईप फैक्ट्री के पीछे, सर्वोदय बस्ती, बीकानेर, दूरभाष-९१६६८६२३१३

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मीमांसा-एक मनोहारी दर्शन

-शीतल

श्रद्धेय श्री आचार्य सत्यजित् जी के सान्निध्य में शाबर भाष्य व देवस्वामी भाष्य सहित जैमिनि-प्रणीत मीमांसा दर्शन के १६ अध्यायों के अध्ययन हेतु मेरा अजमेर में आगमन हुआ था। मनोहारी दर्शन की यह मनोहर यात्रा १ जनवरी २०११ से आरम्भ होकर ३ अप्रैल, २०१३ को समाप्त हुई। मीमांसा के संक्षिप्त परिचय हेतु, मीमांसा में वर्णित कुछ बातें लिखने के लिए लेखनी उठाई है। बेशक, शब्द मेरे हैं, लेकिन बातें मीमांसा दर्शन की हैं।

१. मीमांसा में **भाषा-विज्ञान**-आज प्राय: लोग मीमांसा को कर्मकाण्ड का ग्रन्थ समझते हैं। बहुत कम लोग यह जानते व मानते हैं कि मीमांसा वाक्य-शास्त्र भी हैं। जिस प्रकार वेदान्त-दर्शन, उपनिषद् के वाक्यों को लेकर ब्रह्म की चर्चा करता है, किन्तु उसको हम उपनिषद् का शास्त्र नहीं कहते। वैसे ही मीमांसा भी कर्मकाण्ड के ग्रन्थ-ब्राह्मण ग्रन्थ, श्रौतसूत्रादि के वाक्यों को लेकर, वाक्य-विवेचना व लोक व्यवहार के द्वारा याज्ञिक कर्मों की चर्चा करता है। अत:, उसको हम केवल कर्मकाण्ड का ही शास्त्र कहें, तो मेरी दृष्टि में यह मीमांसा के साथ अन्याय है। मीमांसा में यत्र-तत्र भाषा-विज्ञान के सिद्धान्तों का वर्णन है। शब्द की परिभाषा, वाक्यैकवाक्यता, शाब्दी भावना, आर्थी भावना, अभिधा व लक्षणा वृत्ति, विधि-अनुवाद, विधि-निषेध-परिसंख्याविधि, प्रसज्य व पर्युदास प्रतिषेध, समास व विभक्ति सम्बन्धित चर्चा, विशेष्य-विशेषण भाव, गौण-मुख्य भाव, शेष-शेषी भाव, तन्त्र-प्रसङ्ग-आवाप चर्चा, अर्थवाद, नित्यानुवाद, अनुषङ्ग, अध्याहार इत्यादि कई भाषाकीय सिद्धान्त मीमांसा में पाये जाते हैं। व्याकरण-शास्त्र क्रिया को प्रधान मानकर शाब्द-बोध करता है, जबकि मीमांसा एक कदम आगे बढ़कर, क्रिया जिसके लिये की जा रही है, उस प्रयोजन/उद्देश्य को ध्यान में रखकर शाब्द-बोध करता है। मेरी दृष्टि में मीमांसा व्याकरण-शास्त्र का विरोधी नहीं है, किन्तु व्याकरण की अपेक्षा से अधिक गहराई व सूक्ष्मता से वाक्य की विवेचना करता है।

२. मीमांसा में वेद व धर्म-मीमांसा की प्रबल मान्यता है कि वेद अनादि, अपौरुषेय व नित्य हैं। वेद में अनित्य इतिहास नहीं है। वेद के शब्द यौगिक हैं, नित्य अर्थ को बताने वाले हैं। वेद व ऋषिकृत शास्त्रों के प्रति मीमांसा की अगाध श्रद्धा है। मीमांसा के भाष्यकार शबर मुनि लिखते हैं-**शास्त्रं चानतिशङ्क्यं पितृमातृवचनाद् अपि प्रमाणतरम्। स्वयं हि तेम प्रत्येति, इन्द्रियस्थानीयं हि तत्** (मी. ४.१.३) अर्थात् शास्त्रवचन शङ्का के योग्य नहीं है, वह माता-पिता के वचन से भी अधिक प्रमाण है। उस शास्त्रवचन से पुरुष स्वयं ज्ञान प्राप्त करता है। वह शास्त्रवचन इन्द्रियस्थानी है, अर्थात् वह चक्षु आदि इन्द्रियों के समान संसार को दिखाने-जनाने वाला है।

धर्म को बताते हुए मीमांसा-दर्शन कहता है-''**चोदना लक्षणोऽर्थो धर्म:**' (मी.१.१.२) अर्थात् चोदना=विधि, वेद व ऋषिकृत ग्रन्थों में विधि के द्वारा जिस अर्थ=कर्म को लक्षित किया गया है अर्थात् बताया गया है, वही धर्म है। '**चोदना हि भूतं, भवन्तं, भविष्यन्तं सूक्ष्मं व्यवहितं विप्रकृष्टमित्येवञ्जातीयकम् अर्थं शक्नोत्यवगमयितुम्, नान्यत् किञ्चनेन्द्रियम्**' अर्थात् चोदना ही भूत, वर्तमान, भविष्यत्, सूक्ष्म (गहन), व्यवहित (अज्ञान से आवृत्त), विप्रकृष्ट (=अतीन्द्रिय) आदि सभी प्रकार के अर्थ को बोधित कराने में समर्थ है, अन्य कोई इन्द्रिय (=साधन) उक्त प्रकार के अर्थ को बताने में समर्थ नहीं है।

३. मीमांसा में याग का स्वरूप-'द्रव्यं देवता त्याग:' अर्थात् देवता विशेष को उद्दिष्ट करके किया गया द्रव्य का त्याग 'याग' है। जिसका द्रव्य होता है, याग का फल उसको ही मिलता है, चाहे आहुति कोई भी दे। याग में ऋत्विग् यजमान की जो सहायता करते हैं, उसका भुगतान यजमान 'दक्षिणा' देकर कर देता है। ऋत्विग् को दक्षिणा न देने से, याग में विगुणता का दोष आता है, अत: दक्षिणा देनी अनिवार्य है।

पूरे मीमांसा शास्त्र में कहीं भी मुहूर्त व फलित-ज्योतिष की चर्चा नहीं है। मीमांसा का मत है-**यदहरेवैनं श्रद्धोपनमेत्, तदहरादधीत** (मी. ५.४.१६)=जिस दिन व्यक्ति में यज्ञ के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाये, उसी दिन अग्न्याधान करे। अर्थात् याग आरम्भ करने के लिये 'श्रद्धा' का होना ही शुभमुहूर्त है।

४. मीमांसा में विग्रहवती (=शरीरधारी) देवता का निषेध-लोक में देवता को विग्रहवती (साकार, मूर्तिवाली), भोजन करने वाली, सम्पत्ति की स्वामिनी, सेवा-पूजा से प्रसन्न होने वाली तथा प्रसन्न होकर पूजक की इच्छाओं को पूरा करने वाली माना जाता है, जिसका मीमांसा (मी. ९.१.६-१०) में बहुत ही रोचक ढंग से प्रबल खण्डन किया है।

५. मीमांसा में स्त्रियों को यज्ञ का अधिकार-मीमांसा (६.१.६-१६) में इसका बहुत ही रोचक ढंग से वर्णन किया गया है। अत: इसको हम मीमांसा की शैली में ही समझेंगे।

यज्ञ का विधान करने वाला वाक्य है-स्वर्गकामो यजते=जिसको स्वर्ग (=सुख) की कामना हो वह यज्ञ करे।

पूर्वपक्षी-'स्वर्गकामो यजते' इस वाक्य में 'स्वर्गकाम:' यह शब्द पुल्लिङ्ग में है, अत: पुरुष को ही यज्ञ का अधिकार है, स्त्री को नहीं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सिद्धान्ती–'स्वर्गकाम:' इस शब्द से स्त्री व पुरुष दोनों का ग्रहण होता है। क्योंकि 'स्वर्गकाम:' शब्द यज्ञ करने वाले को लक्षित करता है। यज्ञ कौन करे? 'स्वर्गकाम:' करे। 'स्वर्गकाम:' का अर्थ है–'स्वर्गे कामो यस्य स: स्वर्गकाम:=जिसकी सुखप्राप्ति की इच्छा हो वह 'स्वर्गकाम:' है और ऐसा 'स्वर्गकाम' व्यक्ति यज्ञ करे। यह 'स्वर्गकाम:' लक्षण तो स्त्री व पुरुष दोनों में ही घटता है। स्त्री भी सुख को चाहती है। अत: स्त्री को भी यज्ञ का अधिकार है।

पूर्वपक्षी–पुरुष को ही यज्ञ का अधिकार होना चाहिये। क्योंकि पुरुष ही धनवाला होता है, न कि स्त्री। और यज्ञ बिना धन (=साधन) के होता नहीं है।

सिद्धान्ती–स्त्री निर्धना क्यों है?

पूर्वपक्षी–उसका क्रय-विक्रय देखा जाता है। पिता के द्वारा बेची जाती है और पति के द्वारा खरीदी जाती है। देखिये ऐसा सुना जाता है–'शतमधिरथं दुहितृमते दद्यात्, आर्षे गोमिथुनम्=कन्या के पिता को एक रथ तथा १०० गौवें देवें तथा आर्ष-विवाह में एक जोड़ी बैल देवें।

सिद्धान्ती–अपने पुरुषार्थ (नौकरी आदि) से जो धन स्त्री ने कमाया है, उससे यज्ञ कर लेगी?

पूर्वपक्षी–अरे, वह धन भी उसका नहीं है। जब वह (=खरीदी गई स्त्री) खरीदने वाले पति की स्वभूत=सम्पत्ति रूप है, तब उसका जो भी धन है, वह भी उस पति का ही है। और भी, खरीदी गई स्त्री को स्वामी=पति का कार्य करना चाहिये, पति को छोड़कर वह अपना कर्म नहीं कर सकती। स्मृति में भी कहा गया है='भार्या दासश्च पुत्रश्च निर्धना: सर्व एव ते। यत्ते समधिगच्छन्ति यस्य ते तस्य तद्धनम्॥ अर्थात् भार्या, दास और पुत्र, ये सब धनरहित होते हैं। वे जो कुछ प्राप्त करते हैं, वो सब वे लोग जिस व्यक्ति (=पति/स्वामी/पिता) के सम्पत्ति रूप हैं, उस व्यक्ति का वह धन होता है।

सिद्धान्ती–स्त्री निर्धन होती है, ऐसी बात नहीं है। वह भी धनवाली होती है। यज्ञ का फल=सुख की कामना, पुरुष के समान स्त्री में भी समान रूप से देखी जाती है। यदि स्मृति को प्रमाण मानेंगे तो स्त्री को सुख की इच्छा वाली होते हुए भी निर्धन रहना होगा। जबकि 'स्वर्गकामो यजते' इस श्रुति के अनुसार सुख की इच्छा वाली को याग करना चाहिये। (श्रुति शब्द मीमांसा का पारिभाषिक शब्द है। श्रुति अर्थात् वेद संहिता व ब्राह्मणग्रन्थ तथा श्रोतसूत्र। श्रुति से अतिरिक्त ऋषि-कृत ग्रन्थ 'स्मृति' है। मीमांसा में सिद्धान्ती के द्वारा स्वीकृत ही श्रुति व स्मृति मान्य है, पूर्वपक्षी की नहीं।) यदि स्मृति को प्रमाण मानती हुई स्त्री निर्धना होवे, वो श्रुति का आदेश 'स्वर्गकामो यजते' का पालन वह नहीं कर पायेगी (धनाभाव के कारण)। ऐसी स्थिति में स्मृति के कारण श्रुति के आदेश की बाधा होगी। जो कि अन्याय्य है। (मीमांसा में श्रुति को स्मृति से प्रबल माना गया है। श्रुति का विरोध/बाध करने वाली स्मृति अप्रामाणिक मानी गई है।) अत: स्वर्ग की इच्छा करती हुई स्त्री स्मृति को अप्रमाण मानकर धन का उपार्जन करे और उससे याग करे।

और भी सुनिये पूर्वपक्षी जी। धन से स्त्री का संयोग होता है। कन्यादान (न तु कन्या क्रय) के समय वर को ऐसा कहा जाता है–धर्म, अर्थ और काम में वधू का परित्याग नहीं होना चाहिये। अर्थात् पति जो भी धर्मादि प्राप्त करेगा, उसमें पत्नी का भी भाग होगा।

और जो आपने स्मृति का श्लोक देकर स्त्री का निर्धनत्व सिद्ध करना चाहा है, वह तो श्रुति-विरोधी होने अप्रामाणिक है। लोक में व्यवहार अच्छी तरह सिद्ध हो सके, इस हेतु से, लक्षणावृत्ति से, स्त्री के निर्धनत्व के द्वारा स्त्री का अस्वातन्त्र्य ही वहाँ कहा गया है।

और रही बात क्रय-विक्रय की, वह तो व्यवहार मात्र है। क्रय-विक्रय तो वो होता है, जहां वस्तु को देखकर सौदा (भावतोल) किया जाता है। कन्यादान के समय कन्या के पिता को जो चीजें दी जाती हैं, वे नियत हैं (कन्या के रूप को देखकर नहीं दी जाती)। अत: वह क्रय नहीं है।

और भी, श्रुति भी स्त्री के स्वामित्व को बताती है–पत्नी वै पारिणय्यस्येष्टे=पत्नी विवाह में प्राप्त धन की स्वामिनी है।

इस प्रकार, स्त्री भी धनवाली है, स्त्री को भी यज्ञ का अधिकार है।

६. मीमांसा में 'स्वर्ग' सुख विशेष को माना गया है। स्वर्ग शब्द से स्थान-विशेष व वस्तु विशेष का ग्रहण मीमांसा को स्वीकार्य नहीं है। इस बात का भी मीमांसा में बहुत ही रोचक ढंग से खण्डन किया गया है। (मी. ६.१. अ-१)

७. मीमांसा में **व्यावहारिक** व **आध्यात्मिक चर्चा**–मीमांसा में भाषा-विज्ञान के सिद्धान्तों की तरह, व्यावहारिक व आध्यात्मिक चर्चाएँ भी यत्र-तत्र प्राप्त होती हैं। उदाहरण के लिये-'दान' का स्वरूप बताते हुए मीमांसा में कहा है–**स्वस्वत्व त्यागपूर्वकं परस्वत्वोपादानं दानम्**=दान वह कहाता है कि व्यक्ति जिस वस्तु का दान कर रहा है, उस वस्तु पर से अपना स्वामित्व हटाकर, लेने वाले का स्वामित्व स्वीकार करे। अर्थात् दान कर देने के बाद वस्तु पर देने वाले का कोई अधिकार नहीं होता। अब उस वस्तु का स्वामी दान लेने वाला है। 'दान' की परिभाषा को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा–'**न च त्यागमात्रेण देवता स्वत्वं भवति। परिग्रहणेन हि स्वसामिसम्बन्ध आपद्यते**' (मी. ३.३.४४)=केवल (वस्तु के) त्यागमात्र से अर्थात् वस्तु के दे देने मात्र से ही 'दान' नहीं कहा जाता, जब तक कि लेने वाला उसको स्वीकार न कर ले। जैसे, समाज में देखा जाता है कि व्यक्ति घर का कबाड़ा हटाने के लिये घर की वस्तुओं को संस्थाओं में दे देता है। संस्था वाले लोक-लाज से अनिच्छा होते हुए भी रख लेते हैं। देने वाला सोचता है, मैंने

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था में ये-ये वस्तुएँ दान की। किन्तु, मीमांसा की दृष्टि में यह दान नहीं है। लेने वाले के लिये जो वस्तु अनावश्यक है, उसका देना मीमांसा में दोष माना गया है, उसके लिये देने वाले को प्रायश्चित करने का विधान है।

इस प्रकार मीमांसा में व्यावहारिक, आध्यात्मिक, भाषिक व याज्ञिक विषयों की उत्तम मीमांसा=विचारणा की गई है। मीमांसा की पठन-पाठन की प्रक्रिया, विशेषकर आर्यसमाज में प्राय: लुप्त सी हो गई है और इस दर्शन सम्बन्धित भाष्य व टीकाएँ भी बहुत कम व संक्षिप्त हैं। अत: कई स्थानों पर समझने में यद्यपि कठिनाई प्रतीत हुई है, फिर भी श्रद्धेय आचार्य सत्यजित् जी की पढ़ाने की रोचक शैली के कारण बहुत कुछ जानने व समझने को भी मिला है। इसके लिये श्रद्धेय आचार्य जी के हम ऋणी हैं।

वर्तमान में, उपलब्ध जैमिनि सूत्र व शाबर-भाष्य में पशु-याग का वर्णन पाया जाता है। 'गां मा हिंसी:' का उपदेश करने वाले वेद के प्रति जिस दर्शन की अगाध श्रद्धा हो और उसी दर्शन शास्त्र में पशु-बलि का भी विधान हो, तब यह विचारणीय विषय बन जाता है, गवेषणा की अपेक्षा रखता है।

डंके की चोट पर जो दर्शन वेद के अनादित्व, अपौरुषेयत्व व नित्यत्व को सिद्ध करता हो, उस दर्शन को अनीश्वरवादी मानना-कहना भी चिन्तनीय है। ।।**ओ३म्**।।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

आवासिकं संस्कृत-भाषा-शिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम्

लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखाया: परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।

अवधि: - १७-०५-२०१३ त: २६-०५-२०१३ (दश दिनात्मकम्)
(१६-०५-२०१३ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)

स्थानम् - ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्ग:, अजमेर-३०५००१, दूरभाष:- ०१४५-२६२१२७०

योग्यता - संस्कृते रुचिमन्त: संस्कृत-आचार्या:, अध्यापका:, संस्कृतछात्रा:, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।

शुल्कम् - ३०० रुप्यकाणि।

व्यवस्था - एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
- बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिन: नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्री: च आनयेयु:।

स्वरूपम्- शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
- संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यास:,

विशेष - **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

डॉ. धर्मवीर:	**डॉ. बद्रीप्रसाद पंचौली**	**डॉ. निरञ्जन साहु:**
अध्यक्ष:	कोषाध्यक्ष:	सचिव:
	०१४५-२४२५६६४	०९५१४७०९४९४

संपर्क- **१.** श्री जितेन्द्र थदानी, प्रध्यापक (संस्कृतम्), राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, मो. ९२१४५२३५०५ **२.** डॉ. कृष्णराम महिया, प्राध्यापक:, सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर, मो. ८१०४८४६४३४ **३.** डॉ. आशुतोष पारीक:, प्राध्यापक:, मो. ९४६०३५५१७२।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता
(१ से १५ अप्रैल २०१३ तक)

१. एम.एल. गोयल, अजमेर, २. अमरचन्द महेश्वरी, अजमेर, ३. सरला मेहता, अजमेर, ४. हनुमान कुमार, बीकानेर, ५. प्रेमरतन, बीकानेर, ६. विनोद कुमार, बीकानेर, ७. गंजाम गाँव, ८. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, ९. योगेश कुमार इन्दौरा, गुड़गाँव।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को निःशुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१ से १५ अप्रैल २०१३ तक)

१. राजेश त्यागी, अजमेर, २. विरधीचन्द गुप्त, जयपुर, ३. सुरेश सिंह, अजमेर, ४. थानाराम, बीकानेर, ५. आर्यसमाज, कोटपुतली, जयपुर, ६. केला प्रसाद, भरतपुर, ७. मयंक, अजमेर, ८. तुलसी बाई, अजमेर, ९. शशि भूषण मलहोत्रा, नई दिल्ली।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्य नवयुवकों से

–बनारसीदास चतुर्वेदी

आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति और भावी कार्यक्रम के विषय में लिखने का विचार बहुत दिनों से था, पर कई कारणों से कार्यरूप में परिणत नहीं हो सका था। अभी उस दिन एक महाशय से, जो पहले कट्टर आर्यसमाजी थे, बातचीत हुई तो उन्होंने कहा–"आर्यसमाज के विषय में खूब समझ–सोचकर लिखना, नहीं तो कहीं आपके पत्र के विरुद्ध भी फतवा न निकाल दिया जाए कि कोई आर्यसमाजी "विशाल भारत का ग्राहक न बने।" मैंने यही कहा–"नहीं–नहीं ऐसा नहीं हो सकता। आर्यसमाज सदुद्देश्य से भी लिखी गई आलोचना को बर्दाश्त कर सकता है, क्योंकि उसमें शक्ति है, मेरे मित्र इस बात से सहमत नहीं हुए। मैंने कहा–इस प्रश्न का फैसला तो लेख के छपने पर ही हो सकता है। इस डर से कि हमारी लोकप्रियता में बाधा पड़ेगी अथवा अमुक समुदाय नाराज जो जाएगा, अपने विचारों को प्रकट न करना भी तो एक प्रकार की कायरता है। खतरनाक होने पर भी यह प्रयोग करना ही चाहिए।" अतएव आर्यसमाज के हित को दृष्टि में रखते हुए ही निम्नलिखित बातें जनता के सम्मुख उपस्थित की जाती है।

प्रत्येक मनुष्य जाति तथा संस्था और समुदाय की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि कभी–कभी वह एकान्त में बैठकर आत्म–निरीक्षण करे। इस प्रकार विचार करे कि समय की परिवर्तित गति को दृष्टि में रखकर मुझे अपनी कार्य पद्धति में कुछ रद्दोबदल करना चाहिए या नहीं। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि "जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी कीजै" की नीति का अनुसरण किया जावे। आदर्श तथा लक्ष्य को तो सर्वदा सम्मुख ही रखना चाहिये। चतुराई केवल इस बात में है कि किस अवसर पर अपने कार्यक्रम के किस भाग पर अधिक जोर दिया जाए। प्राचीन भारतीय संस्कृति का उद्धार आर्यसमाज का लक्ष्य है, इसे न भूलते हुए भी वह अपनी कार्य–पद्धति में परिवर्तन कर सकता है।

परिवर्तन का अभाव–कोई भी न्यायप्रिय तथा विचारशील व्यक्ति इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि आज से दस वर्ष पहले जहाँ आर्यसमाज खड़ा था, वहाँ तक अब उदार हिन्दू लोग पहुँच चुके हैं, इसलिए आर्यसमाज के प्रोग्राम में अब किसी को नवीनता नजर नहीं भाती। लीडर का काम है कि वह आगे बढ़े, नेतृत्व करे। आर्यसमाज को भी अपनी कार्य–पद्धति में कुछ परिवर्तन करना चाहिए, कुछ नवीनता लानी चाहिए।

साहस की कमी–सबसे बड़ी कमी आर्यसमाज में यह आई है कि उसमें Adventure का प्रायः अभाव हो गया है। साहस पूर्वक नये कार्यों को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति जाती रही है। वे भी पुरानी लकीर के फकीर बन गये हैं। आर्यसमाज का जब तक घोर विरोध होता रहा, तब तक उसके नेताओं में चरित्र बल बढ़ता रहा, पर ज्योंहि आर्यसमाज की लोकप्रियता बढ़ी त्योंहि उसके नेताओं में आलस्य आ गया और वे सरल और निष्कंटक पथ के अनुयायी बनने लगे। सरकार से लोहा लेने के बजाय अपने गुरुकुल की नींव प्रान्तीय गवर्नर के हाथ से रखवाने में गौरव समझना आर्यसमाज की इसी मनोवृत्ति का सूचक था।

निर्बल नेता–आर्यसमाज की बागडोर पिछले वर्षों में ऐसे आदमियों के हाथों में रही है, जो प्रायः सरकारी प्रभाव में रहे हैं और जिनके कारण आर्यसमाज को नैतिक निर्बलता का शिकार होना पड़ा है। आर्य पुरुषों में नगर कीर्तन सम्बन्धी सत्याग्रह के लिए जोश पैदा होता है, तो ये नेता उसे ठण्डा कर देते हैं, क्योंकि इस प्रकार के आन्दोलनों का नेतृत्व ग्रहण करना उनके बूते का काम नहीं है। जिनकी मनोवृत्ति को क्लार्की, वकालत, सरकारी नौकरी या उपाधि–व्याधि ने कुचल रखा हो, वे भला क्या सत्याग्रह–संग्राम का संचालन कर सकते हैं?

नास्तिकता–आर्यसमाजी नेताओं तथा उपदेशकों में खतरे में पड़ने की प्रवृत्ति जाती रही है। समाज के एक अधिकारी उपदेशक महोदय से फिजी जाने के विषय में बातचीत हुई। आप बोले "जा तो हम सकते हैं, पर इस शर्त पर कि हमारे पास यहाँ से फिजी जाने और फिजी से भारत को लौटने का किराया अभी प्रारम्भ में ही जमा कर दिया जाए।" इन महाशय पर किसी प्रकार की गार्हस्थिक जिम्मेवारी नहीं थी, पर इन्हें इस बात का भय था कि कहीं फिजी वाले हमें घर लौटने का किराया न दें! इनकी तुलना कीजिये बौद्ध प्रचारकों से, जो सहस्रों कठिनाइयों को सहन करते हुए चीन, जापान, अफगानिस्तान इत्यादि सुदूर देशों को गये थे। कुमार जीव यहाँ से चीन जाते हैं और संसार की सबसे कठिन भाषा चीनी ज़बान को सीखकर उसमें संस्कृत के एक सौ महान ग्रन्थों का अनुवाद करते हैं। आज भी चीन में कुमार जीव की लेखन शैली सर्वोत्तम समझी जाती है। न जाने कितने बौद्ध प्रचारकों ने बर्फ से ढके स्थानों को पार करते हुए अपने प्राण गँवाये होंगे। उसी का परिणाम यह हुआ कि आज संसार में जितने बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं, उतने शायद ईसाई मत को छोड़कर किसी के भी नहीं है। दरअसल बात तो यह है कि आर्यसमाजी प्रचारकों के हृदय में नास्तिकता घर करती जा रही है। जो अपने ऊपर विश्वास नहीं कर सकता और जिसके हृदय में परमात्मा पर श्रद्धा नहीं, वह नास्तिक नहीं तो कौन है? कहने को लोग कहा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

करते हैं-

दुनिया में चारों वेदों का 'परचार' करेंगे।
जो कुछ कहा ऋषि ने उसे सरपै धरेंगे।।

पर इनके किये-कराये कुछ होता नहीं। अपने धर्म का प्रचार करने के लिए ईसाई-प्रचारक जो तप और त्याग करते हैं, उसका शतांश भी आर्यसमाजी प्रचारक नहीं करते। इसी सिलसिले में हमें शताब्दी-उत्सव की एक घटना याद आती है। प्रवासी भाईयों में शिक्षा और भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के लिए एक प्रस्ताव हम रखना चाहते थे। देश-देशान्तरों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्यसमाज की ओर से अर्थ-संग्रह के लिए अपील भी होने वाली थी। स्व. केशवदेव शास्त्री ने जो उस समय कार्यक्रम के चार्ज में थे, हमसे कहा-यदि आप लोग उपनिवेशों की ओर दस-पन्द्रह हज़ार रुपये का वायदा कर सकें, तो हम आपको इस प्रस्ताव के रखने की इजाज़त दे सकते हैं।" उस समय भाई देवीदयाल जी, (संन्यासी भवानी दयाल जी के अनुज) मैं और पण्डित तोताराम बड़े चक्कर में पड़े। हम लोग बड़ी दूर से इसी प्रस्ताव को रखने के लिए मथुरा गये थे और वहां शास्त्री महोदय ने यह अडंगा लगा दिया। आखिरकार महात्मा मुन्शीराम के पास जाकर सारी बातें कहीं, तब उन्होंने उपनिवेशों में शिक्षा और संस्कृति प्रचार-सम्बन्धी प्रस्ताव को शताब्दी के प्लेटफार्म पर से रखने की आज्ञा दिलवाई। और आप जानते हैं कि देश-देशान्तरों में प्रचार के लिए क्या किया गया? जो ५५ हजार रुपये चन्दे में एकत्रित हुए उनकी ब्याज से, जो शायद ४०० रुपया मासिक होता था, दुनिया में चारों वेदों का परचार करने की स्कीम बनाई गई। ब्याज से कार्य करने का अर्थ यही था कि आर्यसमाज के नेताओं को इस बात का विश्वास नहीं था कि फिर रुपया जमा हो सकेगा या नहीं। यदि फुटकर संस्थाओं के आदमी जाकर उपनिवेशों से दस-बीस हजार रुपये ले जाते हैं, तो क्या "आर्य-सार्वदेशिक सभा" के प्रतिष्ठित उपदेशकों के लिए ऐसा करना असम्भव था? पर किसी में आत्म-विश्वास या आस्तिकता तो हो।

परिमित दृष्टि-कुछ वर्ष पहले आगरे में हमें Australasian Methodist Mission के सेक्रेटरी रेवरेण्ड जे. डब्ल्यू. बर्टन के साथ बातचीत करने का मौका मिला था। आस्ट्रेलिया तथा एशिया में जहां-जहां मेथोडिस्ट मिशन हैं, वहां के कार्यों का निरीक्षण-कार्य आपके अधिकार में था। पांच वर्षों में आप पांच देशों के चक्कर लगाते हैं। एक वर्ष उत्तरी आस्ट्रेलिया जाते हैं, तो दूसरी साल फिजी को। तीसरे वर्ष भारत की यात्रा करते हैं तो चौथे वर्ष प्रशान्त महासागर के पापुआ द्वीप के मिशन-कार्य का निरीक्षण करते हैं और फिर पांचवे वर्ष इंग्लैण्ड की यात्रा करते हैं। पचपन वर्ष के बर्टन साहब में अपने धर्म के प्रति जो उत्साह और जो लगन दीख पड़ी उसका दशांश भी आर्यसमाज के बड़े से बड़े नेताओं में नहीं दीख पड़ती। यदि आर्यसमाज का कोई प्रतिष्ठित नेता यह निश्चय कर ले कि एक वर्ष फिजी जाऊँगा, तो दूसरे वर्ष मॉरिशस, तीसरे वर्ष पूर्व अफ्रीका, तो क्या उसके लिये किराये की कमी हो सकती है? पर इन लोगों की Mental horizon (मानसिक क्षितिज) तो बिलकुल परिमित है, इसलिये इतने दूर की उन्हें सूझ ही कैसे हो सकती है? कुछ दिनों पहले आर्य-सार्वदेशिक सभा के मुख पत्र 'सार्वदेशिक' में एक स्कीम छपा करती थी। 'रामदास टर्की-निधि' यदि रामदास नामक कोई आदमी टर्की में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ पांच हज़ार रुपये दे दे (ठीक-ठीक रकम हमें याद नहीं रही), तो उसके नाम पर रामदास टर्की-निधि कायम कर दी जायेगी। पचास हज़ार की ब्याज से देश-देशान्तरों में प्रचार करने वालों का रामदास या ओम्प्रकाश के भरोसे बैठे रहना हितोपदेश के सोम शर्मा के पिता के समान बुद्धिमानी का कार्य है।

निरर्थक उत्सव-पर देशान्तरों की ओर तो आर्यसमाज के नेताओं का ध्यान तब जा सकता है, जबकि देश के घरेलू झगड़ों और व्यर्थ की कार्यवाइयों से उन्हें फुरसत मिले। यदि आप आर्यसमाजियों की मनोवृत्ति को देखना चाहते हों, तो जाकर उनके जलसों को देख लीजिये, जिनमें समय और धन का व्यर्थ ही अपव्यय किया जाता है। आर्यसमाज का चन्दे का धन अधिकतर भाड़े, हंडे तथा भजनीकों के पेट में जाता है। वेद-प्रचार का तो केवल नाम ही भर है। अगर किसी वेदज्ञ पण्डित को पांच रुपये मिलते हैं तो भोंगा भजनीक को पचास। उत्सव और नगर-कीर्तन तमाशे बन गये हैं। यहां पर हमें एक बात याद आती है, जो हमने कहीं सुनी थी, पर जिसकी सत्यता की गारन्टी हम नहीं कर सकते। कहा जाता है कि दक्षिण-अफ्रीका से लौटने के थोड़े दिनों बाद महात्मा गांधी भूल से किसी आर्यसमाज के जलसे में जा फंसे। इन उत्सवों का उन्हें कुछ अनुभव नहीं था। छः घण्टे तक दनादन व्याख्यान होते रहे। जब कार्यवाई समाप्त हुई, तो किसी ने उनसे पूछा-"कहिये, आपकी क्या राय है?" महात्मा जी ने कहा-"मेरी समझ में जितने आदमी यहाँ इकट्ठे हुए हैं, यदि वे सब मिलकर इतनी देर तक सड़क कूटते, तो समय का उत्तमतर उपयोग होता।" यह बात इतनी मनोरंजक है कि यदि सत्य न हो, तो भी सत्य होनी चाहिए।

त्रटियों की भरमार-आर्यसमाज के विषय में अनेक कार्यकर्ताओं से बातचीत करने का अवसर हमें मिला है और उन्होंने जो त्रुटियां हमें बतलाई हैं, उन्हें हम बिना किसी क्रम के यहाँ लिखे देते हैं। यहाँ पर हम यह भी कह देना चाहते हैं कि ये त्रुटियाँ किसी बुरे-उद्देश्य से अथवा छिद्रान्वेषण की स्प्रिट में नहीं बतलाई गई। ये कार्यकर्ता लोग आर्यसमाज के परम शुभ-चिन्तक हैं और हर प्रकार से उसकी उन्नति चाहते हैं।

इक्कीस त्रुटियाँ- **१.** किसी धर्म के लिए श्रद्धा और तर्क दोनों की आवश्यकता होती है। अधिक श्रद्धा से अन्ध-विश्वास

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

और अधिक तार्किकता से नास्तिकता का जन्म होता है। तर्क का स्थान मस्तिष्क है और श्रद्धा का हृदय। इसका मतलब यह हुआ कि जिसे अच्छी तरह सोच-विचार लो, उस पर ईमान लाओ और अमल करो। स्वामी दयानन्द ने अपने उपदेश में श्रद्धा और तर्क का समन्वय किया था। परन्तु अब आर्यसमाज में तर्क तो बढ़ रहा है और श्रद्धा 'पोपलीला' का रूप धारण करती जा रही है। समाज से भावुकता और सहृदयता के नष्ट हो जाने का यही कारण है।

२. आर्यसमाज में पूँजीपतियों का अधिक मान है। दरिद्र सदाचारी की बिलकुल कद्र नहीं की जाती। पूंजीपति कैसे ही बुरे आचार-विचार का क्यों न हो, उसे सर्वगुण सम्पन्न मान लिया जाता है।

३. आर्यसमाज का नेतृत्व प्रायः उन हाथों में है जो धर्म के तत्त्व समझने से कोसों दूर हैं।

४. आर्यसमाज में धर्म का मर्म समझने वाले भी कुछ विद्वान् साधु-संन्यासी और उपदेशक मौजूद हैं, परन्तु वे समाजों के आश्रित हैं, संस्थाओं के अधीन हैं। उन पर अधिकार, लिप्सा या यशकामना का भूत सदैव सवार रहता है। कुछ बेचारे तो आर्यसमाज से रोज़ी कमाने या रोटी खाने के कारण सत्य-सत्य बात नहीं कह सकते। इस विषय में निःस्वार्थ कहे जाने वाले आर्य-संन्यासियों की मानसिक दासता सोचनीय है। उपदेशक लोग उन्हीं बातों को कहते हैं, सम्पादक लोग उन बातों को लिखते हैं, जिनसे उनके आका लोग खुश रहते हैं। समाज का संहार हो तो हो, पर आका लोगों की खुशी बनी रहे। जिस समुदाय में सच्चे समालोचक निष्पक्ष लेखक और निर्भय उपदेशक नहीं होते, उसका पतन अवश्यम्भावी है।

५. समाज में चन्दे का चमत्कार है। अधिक से अधिक चन्दा देने वाला ही सदाचार का स्तम्भ समझा जाता है, चाहे वह कितना ही पापी क्यों न हो, फिर उसके विरुद्ध बात कहना भी अपराध और दलबन्दी का कारण है।

६. समाजों में संस्थाएँ खुलती जाती हैं। इन्हें धार्मिक दुकान कहा जाए, तो अनुचित न होगा। उत्तरोत्तर बढ़ती हुई पार्टी बन्दी का मुख्य कारण यह संस्थावाद और पदों के लिए मर-मिटना है। निर्वाचनों के लिए महीनों पहले से कन्वेंसिंग होना समाज के मौत की निशानी है। संस्था खोलने के कारण कितने ही 'महाशयों' का स्वार्थपूर्ण स्वभाव भी हो सकता है।

७. कन्या-विक्रय के विरुद्ध आर्यसमाज बड़ा जोर लगाता है, परन्तु स्वयं विधवाश्रमों से ब्याही जाने वाली विधवाओं के बदले में दान के नाम पर सैकड़ों रुपये वसूल कर लेना अनुचित नहीं समझता।

८. आर्यसमाज में वेतन लेकर काम करने वालों की कद्र नहीं होती। ये वैतनिक लोग जब तक पार्टी बन्दी के अंग बनकर अपना पक्ष सुदृढ़ न कर लें, तब तक उनका अस्तित्व सदैव खतरे में रहता है। खासकर संयुक्त प्रान्त में यह मर्ज बुरी तरह बढ़ रहा है। निर्वाहार्थ धन लेकर अपना पूरा समय देकर काम करने वाले की अपेक्षा कुछ न लेकर, कुछ न करने वाला, नाम मात्र का उपाधिधारी अधिकारी उत्तम समझा जाता है। आर्यसमाज में सीधे-सादे सात्त्विक वृत्ति के लोगों की कद्र नहीं। कूटनीतिज्ञ का आदर होता है। कहने को तो आर्यसमाज जाति-पांति नहीं मानता, परन्तु जाति तो अलग रहे, कोई उपजाति तोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है। बड़े-बड़े, भयंकर-भयंकर जाति-पांति तोड़क ऐसे बताये जा सकते हैं, जो क्रियात्मक रूप से अपने बाप-दादा के रुढ़िवाद से एक इंच-भर भी इधर-उधर नहीं होना चाहते। हाँ, इस जाति-पांति तोड़क आन्दोलन ने कुछ वर्ण विशेष के विरुद्ध लोगों के दिलों में तास्सुव जरूर भर दिया है। एक जाति के लोग दूसरे से बाहरी नहीं तो अन्दरूनी Prejudice अवश्य रखते हैं। पहले तो अन्दरूनी और बाहरी दोनों तरह का पक्षपात था।

९. आर्यसमाज में सुधारकों (Reformers) की कमी नहीं, परन्तु सन्तों का (Saints) अभाव है। सुधारक तो एक डाकू भी बन सकता है, परन्तु सन्त बनना सबका काम नहीं। सन्त बनने के लिए हृदय की विशालता और आचार की उच्चता की आवश्यकता है।

१०. गुरुकुल-प्रणाली के विषय में इतना कहना पर्याप्त होगा कि गुरुकुल-विश्वविद्यालय के स्नातक (Graduates) मैट्रिक्युलेशन परीक्षा में बैठते हुए लज्जित नहीं होते। गुरुकुल में पढ़कर निकलने वालों में उसके प्रति श्रद्धा नहीं होती। गुरुकुल के संचालक तथा अधिकारी अपने बालकों को उसमें नहीं पढ़ाते। इससे अधिक उसकी निष्फलता का प्रमाण और क्या मिलेगा? गुरुकुलों में फीस भी ली जाती है, बारहों मास चन्दा भी मांगा जाता है और तो भी उनका पूरा नहीं पड़ता। इसका भी कुछ कारण होना चाहिए। स्वामी जी ने सादगी से गुरुकुल शिक्षा बताई थी, परन्तु गुरुकुलों में जितना ध्यान और धन भवन-निर्माण में दिया जाता है, उतना ब्रह्मचारियों को योग्य बनाने में नहीं।

१२. आर्यसमाज में स्वाध्याय की प्रवृत्ति बिलकुल नहीं है, है भी तो Light literature की। इसीलिए अच्छा साहित्य पैदा नहीं होता। अच्छे साहित्य मर्मज्ञों की समाज कदर भी नहीं करता। उसकी राय में एक भोंगा भजनीक और एक गायनाचार्य अथवा तुक्कड़ और महाकवि सब समान हैं। जो सभा को रिझाने की योग्यता रखता हो, वही श्रेष्ठ उपदेशक, संगीत-कलाविद् तथा साहित्य महारथी समझा जाता है।

१३. कहा जाता है कि आर्यसमाज ने गुरुडम का गढ़ गिरा दिया, परन्तु यह बात गलत है। केवल उसने गुरुडम का नाम बदल दिया और वह Leaderdom हो गया है। अभी कुछ दिन पूर्व जो स्वेच्छापूर्ण अधिकार गुरुओं को प्राप्त थे, वही

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

लीडरों को हैं। उनकी शान में कुछ कहना गुनाहे-अज़ीम समझा जाता है। आर्य-पुरुषों में सत्याग्रह के लिए जोश पैदा होता है, तो ये नेता उसे ठण्डा कर देते हैं, क्योंकि कहीं इन्हें मैदान में न जाना पड़े। इन नेताओं की नीति 'गोली तीस कदम, बन्दा बीस कदम' रहती है। अवश्य ही सब लीडरों के सम्बन्ध में यह General remark नहीं हो सकता, कुछ Exception (अपवाद) भी हैं।

१४. विचार-स्वातन्त्र्य को समाज में स्थान नहीं है। जिस प्रकार मुसलमानों की शरियत और हिन्दुओं का ईमान ठेस लगते ही टूट जाता है, उसी प्रकार स्वतन्त्र विचार आर्यों की 'सिद्धान्त-हत्या' कर देता है। आर्यसमाजी लकीर के फकीर बने रहना चाहते हैं। वे न स्वतन्त्रता पूर्वक किसी बात को सोचते हैं, न सोचने देते हैं। 'बाबा वाक्यम् प्रमाणम्' का दौर-दौरा है। जो उनके माननीय ग्रन्थों में लिखा है, उससे बाल बराबर भी इधर-उधर नहीं होना चाहते, परिस्थिति भले ही कितनी बदल जाए। Reasoning का सम्बन्ध दूसरों के लिए ही है, अपने लिए नहीं। अपनी समालोचना सुनने की भी समाज में शक्ति नहीं है।

१५. आर्यसमाज में कीर्तिकामना पराकाष्ठा को पहुँच गई है। चार आने देकर अपना चन्दा चन्द्रमा की तरह चमकाना चाहते हैं, जबकि सनातन धर्म में एक साधारण दानी हजारों रुपये की धर्मशाला बनवाकर भी किसी को अपना नाम-धाम तक मालूम नहीं होने देता।

१६. दूसरे सम्प्रदायों की तरह आर्यसमाज में भी गेरुआ कपड़े वालों की तादाद धड़ाधड़ बढ़ रही है। ये लोग गृहस्थ की गाढ़ी कमाई का धन खूब खाते और आनन्द से रहते हैं। साल-भर में जब-तब कभी व्याख्यान झाड़ दिया और बस। इन लोगों को अपने सुख का ख्याल और शरीर की चिन्ता बेचारे गृहस्थों से अधिक रहती है। शरीर-वर्द्धन ही इनका मुख्य उद्देश्य है। कुछ संन्यासी अच्छे भी हैं। इन रंगीले लोगों की बाढ़ कम होनी चाहिये।

१७. कितने ही ऐसे लोगों की कथा कही जा सकती है, जिन्होंने जन्म-भर बड़ी लग्न से समाज-सेवा की, परन्तु अन्त में उनके साथ कृतघ्नता का परिचय दिया गया। ऐसी हालत में लोगों की हिम्मत नहीं होती कि वे काम करने के लिए मैदान में बढ़ें।

१८. वैदिक संस्कारों का नाम मात्र ही शेष है। संस्कारों की Spirit पर ध्यान नहीं दिया जाता। केवल हवन कर देने और संस्थाओं को चन्दा दे देने का नाम ही 'वैदिकता' या 'पूर्णवैदिकता' है। कन्या भले ही बारह वर्ष की हो और वर अट्ठारह वर्ष का, जो वैदिक आदर्श के विरुद्ध है, परन्तु फिर भी वह वैदिक है।

यज्ञोपवीत का Farce ढोंग किया जाता है, न कोई गुरुकुल में पढ़ता है और न वेद पाठ करता है, फिर भी संस्कार 'पूर्णवैदिक'। यह अजीब हालत है।

१९. आर्यसमाजियों के पुत्र, आर्यसमाजी बहुधा नहीं होते, इसका कारण यही है कि वे अपने पिता से आर्यसमाज की सच्ची निष्ठा नहीं पाते। जो लोग स्वयं अपने पुत्रों को आर्य नहीं बना सकते, वे संसार को कैसे वैदिक झण्डे के नीचे ला सकेंगे, यह एक समस्या है।

२०. आर्यसमाज में संस्थागत दलबन्दी, जातिगत दलबन्दी, पदाधिकारी गत दलबन्दी और प्रान्तीय भागों की दलबन्दी आदि का बाजार सदैव गरम है। इसकी दशा उस नारंगी के समान है, जो बाहर से तो एक दिखाई देती है, परन्तु अन्दर उसकी अनेक शाखाएँ गुप्त रहती हैं।

२१. अनधिकारियों का मान और अधिकारियों की उपेक्षा देखकर समाज के अनेक शुभचिन्तक उससे उदासीन हो गये हैं। और उन्होंने अपना दूसरा कार्यक्षेत्र बना लिया।

मानसिक अजीर्ण-जिस समुदाय के शरीर में इतनी छोटी-मोटी बीमारियों ने घर कर लिया हो, उसके स्वास्थ्य का क्या ठिकाना हो सकता है? सच बात तो यह है कि आर्यसमाज के संचालकों ने इतने आवश्यक और अनावश्यक कार्य अपने सिर पर ले रखे हैं कि उन्हें स्पष्टता पूर्वक सोचने (Clear thinking) का समय ही नहीं मिलता। अंटसंट बेहद खा लेने पर आदमी की जो दशा होती है, वही इन लोगों की हुई है। भला मानसिक अजीर्ण में कोई साफ़ तौर पर सोच सकता है।

कुछ प्रस्ताव-हमारे समालोचक यह कह सकते हैं कि इन खण्डात्मक बातों के साथ तुम कुछ रचनात्मक प्रस्ताव भी रख सकते हो या यों ही बकते हो? उनके सन्तोष के लिए अपनी शुद्ध बुद्धि के अनुसार यहाँ हम कुछ प्रस्ताव रखते हैं।

नेताओं का विचार-परिवर्तन-सबसे पहला कार्य जो आर्यसमाज के नेताओं को करना चाहिए, वह यह है कि वे आपस में मिलकर आर्यसमाज के वर्तमान कार्य और भावी नीति पर विचार करें। जलसों तथा उत्सवों के समय यह कार्य असम्भव है। कहीं एकान्त में दस-पन्द्रह दिनों तक आर्य नेताओं का पारस्परिक विचार-परिवर्तन होना चाहिए। उस समय कितने ही प्रश्न उपस्थित किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ प्रचार-पद्धति को ही लीजिये।

ग्राम-संगठन-ग्राम-संगठन का कार्य इस समय समाज-सेवा की दृष्टि से तथा राजनैतिक दृष्टि से भी अत्यन्त आवश्यक है। आर्यसमाज को यह कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए। यह बात ध्यान-देने योग्य है कि 'यंगमैन क्रिश्चियन ऐसोसियेशन' (Y.M.C.A.) के दूरदर्शी अधिकारियों ने इस कार्य को आज से सत्रह-अट्ठारह वर्ष पहले उठाया था, और उन्होंने बहुत कुछ सफलता भी इस विषय में प्राप्त की है।

भारत वर्ष ग्रामों में रहता है-८० फीसदी आदमी ग्रामीण हैं-अतएव जो लोग अपने धर्म तथा सिद्धान्तों का प्रचार भारत-भर में चाहते हैं, उन्हें ग्राम-संगठन का कार्य अपने हाथ में उठा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

लेना चाहिए। यह एक स्वयं सिद्ध बात है, जिसके लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। क्या अच्छा हो, यदि आर्य-नेता उन स्थानों का भ्रमण करें, जहाँ 'यंगमैन क्रिश्चियन ऐसोसियेशन' ने अपने ग्राम-संगठन सम्बन्धी कार्य खोल रखे हैं। यदि उन लोगों के पास कोई अच्छी चीज़ है, तो उसे ग्रहण करने में क्या बुराई है? यदि आपको आर्यसमाज की निष्क्रियता और 'यंगमैन क्रिश्चियन एसोसियेशन' की कर्मशीलता के जीते-जागते दृष्टान्त देखने हों, तो कलकत्ते में देखिये। आर्यसमाज का काम न कुछ के बराबर हो रहा है। इतना बड़ा भवन व्यर्थ ही खड़ा हुआ है, न उसके पीछे कुछ व्यक्तित्व है और उसमें न कोई कल्पनाशील कार्यकर्ता। उधन वाइ.एम.सी.ए. का काम यों पहले से हो रहा है, पर यदि आप इतनी दूर कलकत्ते न जाना चाहें, तो आगरे में दयाल बाग का कार्य ही देख लें। यदि आर्यसमाज भी औद्योगिक कार्यों को प्रारम्भ कर दे, तो वह बहुत कुछ हित कर सकता है।

संख्या का मोह-सबसे अधिक आवश्यक बात यह है कि आर्यसमाज को संख्या का मोह सर्वथा छोड़ देना चाहिए। आर्यसमाज के रजिस्टर में दो सौ निकम्मे मेम्बरों का नाम लिखे होने के बनिस्पत यह कहीं अच्छा है कि समाज में इने-गिने आदमी हों, जो अपने चरित्र-बल से अधिक से अधिक जनता पर आर्य सामाजिक प्रभाव डाल सकें। चतुर ईसाई लोग अब ईसाइयत के प्रभाव को वसिस्मा देकर संख्या बढ़ाने की अपेक्षा कहीं अधिक महत्व देते हैं।

निरन्तर सेवा कार्य-भारत वर्ष की वर्तमान परिस्थितियों में वही समाज और वही संस्था आदर का पात्र बन सकती है, जो दीन समाज की सेवा करे। बीमारियों से मरने वाले किसान को दवाई देने वाले वैद्य की जितनी आवश्यकता है, उतनी ईश्वर को निराकर सिद्ध करने वाले उपदेशक की नहीं। जब उसे वस्त्र विहीन घर की देवी का तन ढाँकने के लिये आठ गज़ खादी की जरूरत हो, उस समय 'ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय:' का मन्त्र उसके अभीष्ट को सिद्ध नहीं कर सकता।

साम्प्रदायिक कलह का अन्त-साम्प्रदायिक कलह के फैलाने में आर्यसमाज के कुछ बेसमझ आदमियों का काफ़ी हाथ रहा है, इसलिए आर्यसमाज के समझदार नेताओं का कर्तव्य है कि वे साम्प्रदायिक झगड़ों को दूर करने का भरपूर प्रयत्न करें। अब समय आ गया है कि जब दूसरों के धर्मों का मज़ाक उड़ाने वाले उपदेशकों तथा भजनों का टिकट कटा दिया जाए। खण्डनात्मक नीति का जमाना कभी था-जब प्राचीन हिन्दू संस्कृति के नष्ट होने की आशंका थी-अब वह समय नहीं रहा। जो हिन्दू-समाज संसार के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य से टक्कर ले सकता है, उसे भय किस बात का है?

सांस्कृतिक मेल-यदि भारतवर्ष में सभी धर्मों और मतों के अनुयायियों को शान्तिपूर्वक रहना है, तो सांस्कृतिक मेल के महत्व को समझता होगा-चाहे वह मुस्लिम हो या आर्यसमाजी, सनातनी हो या ईसाई। जो अवश्यम्भावी सांस्कृतिक मेल के लिए प्रयत्न करेगा, वही अन्त में सबसे अधिक शक्तिशाली बनेगा, और जो इस प्रबल धारा को रोकने का निन्दनीय प्रयत्न करेगा, वह अपनी हस्ती को खो बैठेगा।

आशा की झलक-सरकारी मार से दबे हुए नेताओं से, साम्प्रदायिक चश्मा लगाये हुए उपदेशकों तथा भोंगा भजनीकों से और परिमित दृष्टि वाले पत्रकारों से हमें कुछ भी आशा नहीं है। इनके दिन तो गिने-गिनाये हैं। आशा की झलक दीख पड़ती है, उन आर्य नवयुवकों के हृदय में, जो अपने स्वतन्त्र विचार रखते हैं और जिन्होंने वर्तमान संग्राम में दिल खोलकर भाग लिया है। उन्हीं को हम आर्यसमाज का भावी नेता मानते हैं और उन्हीं की सेवा में यह निवेदन किया गया है। आशा है कि वे हमारे सद्भाव पर आशंका नहीं करेंगे और इसे उसी भावना से ग्रहण करेंगे, जिस भावना से प्रेरित होकर यह प्रार्थना उनसे की गई है।

-विशाल भारत,
अंक-मार्च १९३०, पृष्ठ-३१३-३२०

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १७ से २६ मई-**संस्कृत संभाषण शिविर**, सम्पर्क : ९४१४७०९४९४
२. २८ मई से ४ जून-**आर्यवीर दल शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१
३. ६ से १३ जून-**आर्य वीरांगना शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१
४. १६ से २३ जून-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४
५. विद्वद् गोष्ठी-'**आर्यसमाज की यज्ञपद्धति**' तृतीय, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए), २७ से ३० जून २०१३, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद, मध्यप्रदेश।
६. २० से २७ अक्टूबर-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ऋषि भक्ता, साहसी, वीरांगना-रेवती देवी

-हंसमुनि योगार्थी

संसार में हर स्त्री एक देवी है, त्याग की मूर्ति है, तपस्विनी भी है और गृहणी भी होती है, लेकिन ईश्वर किसी-किसी स्त्री में कोई विशेष गुण देता है। जिससे उसकी पहचान अन्यों से भिन्न होती है। ऐसे ही विशेष गुणों वाली रेवती देवी भी है।

परिचय-माता श्रीमती दांखा देवी एवं पिता श्री नूणाराम यादव, गाँव-कुतवापुर नारनौल, दादा श्री अभयराम की गोद में जन्म से पली और गुणवती बनी।

जन्म-आश्विन सम्वत् विक्रमी १९९५, कुतवापुर गाँव में जन्म हुआ।

विवाह-१८ वर्ष की आयु में वि.स. २०१३ में दौगड़ा अहीर, जनपद-महेन्द्रगढ़ के माता-जमना, पिता-मामराज के सुपुत्र श्री श्रीराम के साथ हुआ। इनके श्वसुर बोहरा कहलाते थे। श्रीराम के ५ बड़े भाई थे। सबसे छोटे श्रीराम बोहरा जी थे। ननद नहीं थी। इधर पीहर के परिवार में भी ५ भाई थे जो क्रमश: उमराव, ओंकार, जो सरपंच भी रहे थे, हरदयाल फौज में थे, शम्भुदयाल भी फौज में थे, छोटे भाई थे बलवन्त सिंह जो केन्द्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स में डी.एस.पी. पद से सेवानिवृत्त हुए। २ वर्ष बाद बिजली का करन्ट लगने से मृत्यु का ग्रास बन गए। पीछे पत्नी शांतिदेवी व पुत्र बलजीत को छोड़ गए। ५ भाइयों में रेवती ही एक लाड़ली बहन थी जिसकी शादी बड़े धूमधाम से की थी। श्रीराम बोहरा जी भी वन विभाग में कार्यरत थे पर उन्हें आर्य धार्मिक विचारों के कारण बेईमानी न करने से यह महकमा छोड़ना पड़ा और घर आकर कृषि कार्य करने लगे। ८ वर्ष की नौकरी की पेन्शन भी न बनी पर सत्य पथ के पथिक को इसकी चिन्ता नहीं थी। उनका रिश्ता गांव, घरों की ही एक महिला अपनी छोटी बहन से करवाना चाहती थी, बीच में सीता की तरह सूर्पनखा को रेवती आड़े आई दिखती थी। अत: इस कांटे को बीच से निकालने के लिए एक दूर की कुटनी (नन्ही जान की तरह) एक तील व कुछ धन का प्रलोभन देकर रेवती को दूध में जहर दे दिया। जहर ने तुरन्त असर दिखाया, रेवती बेहोश हो गई पर मरी नहीं। गांव के ही लाला हेमराज को श्रीराम बोहरा जी ने तुरन्त बुलाया, देवी को दवा दी, होश में आई, एक सप्ताह बाद ठीक हो जाने पर घर वालों को बताया और उस महिला को बाछोंद से उसकी लड़की के घर से पकड़ कर लाया गया, पूछा, बताया कि मैंने तील (घघरी ओढ़ना वस्त्र) के लोभ में यह कार्य किया था। रेवती ने उसे क्षमा करते हुए सन्दूक से अपनी शादी की सच्चे गोटे की तील निकाल कर दी और खबरदार आगे से किसी के साथ ऐसा कार्य न करना। जाते-जाते उसे १५ किलो गेहूँ भी देकर जाने दिया। अब १८८६ में श्रीराम बोहरा जी बीमार हो गए, भाइयों के सहयोग से जयपुर आदि कई जगह इलाज पति सेवा निष्ठा से, कष्टों को सहते हुए कराया, पर बोहरा जी बच न सके। प्राण त्यागते हुए बोहरा जी ने अपनी प्राण-प्रिया को हिम्मत रखना, आत्महत्या न करना, अपने धर्म पर कष्ट झेलकर भी जिन्दा रहना और समाज की सेवा करना, इन वचनों से उपदेश आदेश किया और प्राण त्याग दिये। प्राय: दाह समय स्त्रियाँ श्मशान भूमि में बाद में जाती हैं, पर रेवती वज्र सम हृदय कर अपने पति की अन्त्येष्टि में शामिल हुई।

जैसे बिना चन्द्रमा रात्रि सूनी, बिना सेनापति के सेना सूनी, बिना पंच के पंचायत सूनी होती है ऐसे ही बिना पति के पत्नी सूनी होकर भी रेवती ने हिम्मत न हारी और अपने हिस्से आई ७ किला (एकड़) जमीन को बेचकर आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञशाला, पिपली वाली राह पर पानी की टंकी खेल (पशुओं हेतु पानी पीने का स्थान) को सास-श्वसुर के नाम से बनवाया, तथा आर्यसमाज में एक कमरा भी बनवाया तथा जिसे अपने ज्येष्ठ भूपसिंह व जिठानी रामकौर के नाम समर्पित किया, जो नि:सन्तान थे। आर्यसमाज में ही जीना, रसोई, कमरे के साथ और भी बनवाई। स्कूल में भी कमरा बनवाया। एक एकड़ में भव्य किलानुमा, कुआँ, खेल, टंकी सहित एक बड़ी शानदार धर्मशाला भी सभी सुविधाओं सहित बनवाई। अब इस वर्ष ८-१० लाख रु. की लागत से २०''×२०''-१२ खम्बे वाली, ऊँची बड़ी यज्ञशाला भी बनवा दी, पेड़-पौधों से सज्जित शोभा देखने लायक ही बनती है। पीहर कुतवापुर में भी एक कमरा बनवाया है। धर्मशाला का उद्घाटन भी तत्कालीन उपायुक्त आर्य श्री रामभगत लांगायन के कर-कमलों द्वारा वेद-मन्त्रों से यज्ञ करके उत्सव करवाकर करवाया था। अब यज्ञशाला उद्घाटन के इन्तजार में है। ऋषि दयानन्द की १२५वाँ निर्वाण महासम्मेलन पं. ताराचन्द की अध्यक्षता में अपनी धर्मशाला में ७०-८० हजार रुपये का सहयोग देकर सम्पन्न कराया। नारनौल बस अड्डे के पास बन रही यादव धर्मशाला में भी ५६ हजार का दान दिया। २०१० में गांव के आर्यसम्मेलन में हरियाणा के मुख्यमन्त्री के आगमन के समय भी तीन दिन का भोजन लगभग १ लाख रुपये खर्च कर आपने ही दिया था। नारनौल आर्यसमाज मन्दिर मोहल्ला संघीवाड़ा में भी यज्ञशाला, नीचे पानी का टैंक भी बनवाया है। अब इस धर्मशाला की देखरेख हेतु (वृद्ध होने पर) एक ट्रस्ट बना दिया। जिसके ट्रस्टी दौगड़ा से भी हरिसिंह आर्य, बाबूलाल, होशियार, सूण्डाराम, रामौतार, यशपाल, स्वयं तथा पीहर कुतवापुर से बलजीत, रामचन्द्र आदि ट्रस्टी हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

समय-समय पर यज्ञ, सत्संग और सामाजिक कार्यक्रम भी होते रहते हैं। चोर एक बार घुस गये तो लठमार मुकाबला किया, साहसी महिला है। हर प्रकार से कष्ट सहकर भी महिला होते हुए अपने पति की आज्ञा का पालन प्राण-प्रण से कर रही है। कई सौ सत्यार्थप्रकाश, वस्त्र बाँट चुकी हैं, पता लगने पर हर आर्यसमाज को १-२ हजार रु. तो अवश्य ही भेजती हैं। लोभ छू भी नहीं सकता। उदार, साहसी, कर्मठ महिला है। परमात्मा इसे और आयु, बल, बुद्धि प्रदान करे, ऐसी कामना है।

-वैदिकाश्रम, कादीपुरी, नारनौल
चलभाष-०९४६६२२३३३६

ऋषि की दृष्टि

-सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'

मरणासन्न थी आर्य जाति,
पेंच लड़ाते मुस्लिम-ईसाई॥

तिनके बिखरे हुए दीखते,
कैसे नीड़ बने सुखदाई॥

दयानन्द ने श्रुति पंथ पर,
एक कर लिये जन आधार।

सत्यार्थप्रकाश की रचना करके,
खोल दिये मुक्ति के द्वार॥

जो दीखे सुखवर्द्धक कण-कण में,
चुन-चुन कर दे दिये उपहार॥

पीढ़ी दर पीढ़ी रहे लाभान्वित,
भेद भाव बिन-बिन तकरार॥

-आर्यसमाज मन्दिर, नेमदार गंज (नवादा)
बिहार-८०५१२१

बनूँ मैं प्रभु का प्यारा

-दाताराम आर्य 'आलोक'

प्रभु-कृपा से कुछ सुधरा,
कुछ और सुधर जाऊँगा।
सर्वशक्तिमान् बचकर तुमसे,
जगह कहाँ, किधर जाऊँगा॥

मकान जो आपने दिया मुझे,
किराएदार हूँ मालिक नहीं।
आपकी मर्जी से खाली,
हँसकर, कर जाऊँगा॥

मेरी तो क्या हस्ति है,
ओ मालिक दुनियाँ के,
जीवन बेदाग रहे मेरा,
यही इच्छा बताऊँगा।

कंटकाकीर्ण पथ देना,
दुर्गम वीरान जंगल-सा।
लहुलुहान पर हँसकर,
तेरे मंगल गान गाऊँगा॥

अकेला रहूँ चाहे दुनियाँ में,
न डर है, न कोई चिन्ता।
बचा मैं और प्रभु मेरा,
और क्यों बीच में लाऊँगा॥

दी किस्ती छोड़ सागर में,
है तूफान अंधियारा।
रहे 'आलोक' तेरा प्यारा,
अवश्य उस पार लगाऊँगा॥

-ग्रा.पो. बुटेरी, तहसील-बानसूर
जिला-अलवर, राज.
चलभाष-९८११७४१९७६

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि से छेड़छाड़ बन्द करें।

–शिवनारायण उपाध्याय

इधर कुछ समय से देखा जा रहा है कि आर्यसमाज को कुछ तथाकथित विद्वान् स्वामी दयानन्द द्वारा ऋग्वेदादिक भाष्य भूमिका में लिखित सृष्टि उत्पत्ति काल तथा उनकी जन्मतिथि के विषय में जानबूझकर अनर्गल विचार व्यक्त कर अपने आपको समाज में प्रतिष्ठित करने का प्रयास कर रहे हैं। गत वर्ष परोपकारी माह जुलाई (द्वितीय) २०१२ ई. में पाठकों के विचार शीर्षक के अन्तर्गत वैद्य रामनाथ आर्य का सृष्टि की आयु सम्बन्धी लेख प्रकाशित हुआ। अपने लेख में उन्होंने सृष्टि संवत् १९७२९४९११३ वर्ष तथा मानव वेद संवत् १९६०८५३११३ वर्ष माना। मुझे विवश होकर उनके विरोध में स्वामी दयानन्द की मान्यता के पक्ष में लिखना पड़ा। उसके उत्तर में वैद्य रामनाथ शास्त्री तथा स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने एक-एक लेख फिर लिख दिया। मैंने दोनों के प्रत्युत्तर में पुनः एक लेख लिखा तो वैद्य रामनाथ शास्त्री ने मेरे लेख पर व्यर्थ की व्यङ्ग्यात्मक टिप्पणियां की तथा स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने 'दयानन्द की जानिये-मानिये' शीर्षक से टंकारा समाचार-पत्र में एक लेख लिखकर स्वामीजी की मान्यता का विरोध किया। इसके बाद उन्होंने कोई लेख नहीं लिखा। वैद्य रामनाथ आर्य भी तीन लेख लिखकर चुप बैठ गये। मैंने कुल छः लेख लिखकर स्वामी जी की मान्यता को सत्य सिद्ध कर दिया। अब इंदौर से निकलने वाले पत्र वैदिक संसार के मार्च २०१३ के अङ्क में पं. इन्द्रदेव, १८/१८६, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म स्थान टंकारा में लिखित स्वामी जी के जन्म दिवस २४.०२.१८२४ के आधार पर उनका जीवन ५९ वर्ष ८ महिना ६ दिन माना है और 'महर्षि दयानन्द की १८९वीं जयन्ती (७ मार्च २०१३) शीर्षक से एक संक्षिप्त लेख लिख दिया है। उनका यह लेख आर्य जनता में भ्रम उत्पन्न कर सकता है इसलिये मुझे इस विषय में लिखने की आवश्यकता प्रतीत हुई है। स्वामी जी की जन्मतिथि के विषय में पं. लेखराम ने अनुमान करते हुए लिखा-संवत् १९०३ में उनकी अवस्था का २२वां वर्ष प्रारम्भ हो गया था। अतः उनका जन्म संवत् १८८१ की समाप्ति पर हुआ था। अर्थात् उसका एकाध मास अथवा कुछ दिन शेष रहे होंगे। यह निश्चित है कि माघ अथवा फाल्गुन मास में उनका जन्म हुआ था। पं. अखिलानन्द शर्मा ने भाद्रपद शुक्ल नवमी बृहस्पतिवार १८८१ विक्रमी को स्वामी जी की जन्मतिथि मानी है। श्री मामराजसिंह ने भी इसका समर्थन किया है। पं. श्री कृष्ण शर्मा ने भी स्वामी जी की जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ल नवमी मानी है। उन्होंने अपने पक्ष में स्वामी जी की एक जन्म कुण्डली भी दी है। जन्म तिथि के सम्बन्ध में कुछ अन्य मत भी प्रस्तुत हुए हैं। श्री हरविलास शारदा ने आश्विन कृष्ण सप्तमी १८८१ वि. बुधवार तदनुसार १५.९.१८२४ को स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि माना है। पं. इन्द्रदेव पीलीभीत ने १९ फरवरी १८२५ ई. को स्वामी जी की जन्मतिथि मानी है। श्री भवानीलाल भारतीय ने नवजागरण के पुरोधा-दयानन्द सरस्वती पुस्तक में इन सबका विस्तृत वर्णन किया है। श्री भीमसेन शास्त्री कोटा ने स्वामी जी के स्व कथित जीवन चरित्र से उनके आयु विषयक निर्देशकों का ऊहापोह करने के पश्चात् यह निश्चय किया था कि फाल्गुन कृष्ण दशमी (दक्षिणात्यों के अनुसार माघ कृष्ण दशमी) शनिवार मूल नक्षत्र तदनुसार १२ फरवरी १८२५ ई. स्वामी जी की जन्मतिथि है। आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत गठित धार्मिक विषयों पर अन्तिम स्वीकृति देने वाली धर्मार्य सभा ने अपनी २९.४.१९५६ की बैठक में इसे तर्कों के आधार पर स्वीकार कर लिया तथा बाद में इसी तिथि को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा ने अपनी १.४.१९६७ की बैठक में स्वीकार कर लिया है।

प्रारम्भ में श्री भवानीलाल भारतीय इस निर्णय के पक्ष में नहीं थे इसीलिए उन्होंने नव जागरक के पुरोधा-दयानन्द सरस्वती के पृष्ठ ११ के प्रथम पैरा में लिखा है, यह तो निश्चित है कि उनका जन्म विक्रमाब्द १८८१ में हुआ था। ख्रीष्टाब्द १८२४ तथा १८२५ के जो द्विविध लेख उनके विभिन्न जीवन चरितों में मिलते हैं उनका भी कारण उपर्युक्त भाद्रपद तथा फाल्गुन आश्रित दो विभिन्न तिथियों की उपस्थिति ही है। परन्तु स्वामी दयानन्द के प्राचीन जीवन चरितों में अधिक उल्लेख १८२४ ई. का ही उपलब्ध होता है। इस आधार पर भाद्रपद शुक्ला नवमी गुरुवार १८८१ वि. को स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि मानना अधिक उपयुक्त है।

फिर डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी निवासी ने एक पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रामाणिक जन्मतिथि लिख दी। डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने बड़े तर्क पूर्ण ढंग से अपने विचारों को रखकर सिद्ध कर दिया है कि वास्तव में स्वामी जी का जन्म दिवस १२.२.१८२५ ई. ही है। अपने विचार के बिन्दु आधारभूत सामग्री शीर्षक से लिखे गद्यांश में विद्वानों के विभिन्न मतों का परीक्षण किया और यथोचित निर्णय लिया है।

उनके अनुसार सभा के सामने इस विषय पर मत निम्न प्रकार के थे-

१. पं. भीमसेन शास्त्री-संवत् १८८१ फाल्गुन बदि दशमी, तदनुसार १२ फरवरी १८२५

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

२. पं. इन्द्रदेव जी जतीपुरा पीलीभीत–फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा तदननुसार १९ फरवरी १८२५

३. श्री अखिलानन्द शर्मा–भाद्रपद शुक्ला नवमी तदनुसार २ सितम्बर १८२४

४. श्री जगदीश सिंह गहलोत–आर्यसमाज जोधपुर की दीवार पर अंकित तिथि १० फरवरी १८२५

५. श्री भगवद्दत्त जी को जेसी राम मेरठ निवासी ने बताई तिथि १५ सितम्बर १८२४

धर्मार्य सभा ने इन तिथियों पर विचार किया। जहाँ तक ऊपर की पहली संख्या में वर्णित तिथि का सम्बन्ध है उसे ही धर्मार्य सभा ने ठीक और प्रामाणिक माना।

संख्या २. पं. इन्द्र देव जी द्वारा मानी गई तिथि में कई विरोध आते हैं–

(१) महर्षि का बालकपन का नाम दयाल जी ठहरता है जो तथ्य के विपरीत है क्योंकि उनका बालकपन का नाम मूलशंकर वा मूल जी ही था यही प्रमाणित भी है।

(२) इससे महर्षि के स्वकथित जीवन के तथ्यों का विरोध पड़ता है। तीसरा मत पं. अखिलानन्द जी का है। यह मत कल्पना पर आधारित है। चौथा मत ऐसा है कि जिस पर कोई सामग्री प्राप्त नहीं है। इससे अतिरिक्त प्रथम मत से इसका दो दिन का ही अन्तर पड़ता है जो गणना की दृष्टि से सम्भव है। पांचवा मत एक–एक सुनी–सुनाई बात पर आधारित है जिसका इतिहास और अनुसन्धान में कोई मूल्य नहीं है।

फिर डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री लिखते हैं कि श्री भीमसेन जी शास्त्री के मत को धर्माय सभा ने क्यों स्वीकार किया? इसके निम्न हेतु हैं–

(१) यह तिथि आत्मचरित की घटनाओं का मिलान करने और परीक्षण करने पर ठीक उतरती है।

(२) महर्षि के शिष्य पं. ज्वालादत्त ने महर्षि के नाम और जन्म के नक्षत्र के विषय में एक श्लोक लिखा है जिसका उदाहरण पं. भीमसेन शास्त्री ने दिया है। भारत सुदशा प्रवर्तक पत्र में महर्षि की एक दिनचर्या छपी थी। इसके अन्त में एक श्लोक छपा है।

क्षोणीभाहीन्दुमिरयुते वैक्रमे वत्सरे यः प्रादुर्भूतो द्विजवर कुले दक्षिणे देशवर्ये। मूलेनासौ जननविषये शंकरेणापरेण ख्यातिं प्रापयत् प्रथमवयसि प्रीतिदां सज्जनानाम्।।

अर्थात् स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उत्तम देश दक्षिण में श्रेष्ठ ब्राह्मणकुल में मूलशंकर नाम पाया जो सत्पुरुषों को अतीव हर्षप्रद है।

धर्मार्य सभा की बैठक दिनांक २९.४.५६ जो रविवार प्रातः ७ बजे श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में हुई थी, उसमें पं. श्री भीमसेन जी ने अपने विचार रखे। उन्होंने गणना और तर्क के आधार पर स्वामी जी का जन्मदिन १८८१ वि. फाल्गुन बदि दशमी शनिवार (१२ फरवरी १८२५ ई.) को सिद्ध किया जिसे सभा ने स्वीकार कर लिया। फिर सार्वदेशिक धर्मार्य सभा का २३.७.१९६० को यमुना नगर में अधिवेशन हुआ। उसमें सभा इस परिणाम पर पहुँची कि ऋषि की जन्मतिथि सं. १८८१ फाल्गुन बदि दशमी (१२ फरवरी १८२५) शनिवार है। इसकी पुष्टि सार्वदेशिक अन्तरंग सभा ने २ अप्रैल १९६७ को की है। कालान्तर में श्री भवानीलाल भारतीय ने भी अपने पत्र दिनांक २२ जून २००९ के द्वारा इस तिथि को मान्यता दे दी है। वे लिखते हैं कि शोध कार्य में न तो लेखक की मनमानी चलती है और न उसका कल्पना विलास। यही कारण है कि जिन लोगों ने स्वामी दयानन्द के जीवन के तथ्यों के चित्रण में स्वेच्छाचारिता बरती, उन्हें प्रामाणिक शोधकर्त्ताओं से निरन्तर मुँह की खानी पड़ी। निष्कर्षतः मैं ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि के सम्बन्ध में प्रो. भीमसेन शास्त्री तथा डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री के विवेचन और निर्णय को निर्दोष समझता हूँ। अब तो आर्यों की सर्वोपरि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इसे स्वीकार कर लिया है तथा वेदानुकूल आर्यसमाज के संस्थापक का इसी दिन फाल्गुन कृष्ण दशमी जन्म दिवस मनाने का आदेश दिया है जिसे हम सबको शिरोधार्य करना चाहिए। डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने यह पुस्तक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु को भेंट की है तथा प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने पुस्तक का प्राक्कथन भी लिखा है। अब मैं आदरणीय भाई रामनाथ जी सहगल से विनय करता हूँ कि वे टंकारा स्थित महर्षि के जन्म स्थान पर लिखी जन्म तिथि २४.४.१८२४ को शुद्ध करवाकर (१२.२.१८२५) लिखवा दें। साथ ही जोधपुर समाज के बन्धुओं से भी निवेदन है कि वे महर्षि की दीवार पर लिखित जन्म तिथि १० फरवरी १८२४ है उसे ठीक १२.२.१८२५ करवा दें। इससे समाज में सब भ्रम दूर हो जायेंगे।

–७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा, राजस्थान, पिन–३२४००९

सूचना

परोपकारी पत्रिका अपने लेख, कविताओं, प्रतिक्रियाओं, पाठकों के विचार, विज्ञप्ति के लिए आप लेखक–महानुभावों से अनुग्रहित होती रही है। आप सभी लेखक–महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख, प्रतिक्रिया, विचार, सुझाव, सूचना इत्यादि कुछ भी सामग्री, जो प्रकाशनार्थ भेजी जा रही है उसे मुद्रित कराकर, उसका प्रूफ–संशोधन कर ही भेजने की कृपा करें। जो महानुभाव अपनी प्रतिक्रिया पोस्टकार्ड में भेजना चाहते हैं, वे स्पष्ट, सुपाठ्य लिपि में लिखकर अथवा लिखवाकर ही भेजें। **–सम्पादक**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पुस्तक-परिचय

नाम-महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन परक संस्कृत-काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन, **लेखक**-डॉ. धर्मवीर, **प्रकाशक**-श्री घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य, धर्मार्थ न्यास, पृष्ठ संख्या-३१६, **मूल्य**-मात्र १४० रु.

महर्षि दयानन्द जी के जीवन विषय में अनेक लोगों ने लिखा, अनेक भाषाओं में लिखा, उनमें प्रमुख रूप से पं लेखराम जी, बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द जी, रामविलास शारदा, लाला लाजपतराय, पं. लक्ष्मणसिंह आर्योपदेशक (इनके ग्रन्थ के हिन्दी अनुवादक प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु) आदि। इन्हीं महानुभावों के ग्रन्थों को लेकर और अन्य लोगों ने भी बहुत लिखा।

महर्षि के जीवनपरक काव्य ग्रन्थ भी लिखे गये। उनमें पाञ्च महाकाव्य **१.** दयानन्ददिग्विजय (पं. अखिलानन्द शर्मा), **२.** दयानन्ददिग्विजय (पं. मेधाव्रत), **३.** मुनिचरितामृत (पं. दिलीदत्त), **४.** आर्योदयकाव्यम् (पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय), **५.** दयानन्दचरितम् (पं. रमाकान्त उपाध्याय)। पाञ्च खण्ड काव्य-दयानन्दलहरी (पं. अखिलानन्द) **२.** दयानन्दलहरी (पं. मेधाव्रत), **३.** यतीन्द्रशतकम् (पं. केवलानन्द शर्मा), **४.** श्रीमद्दयानन्दचरितामृतम् (पं. देवीदत्त शर्मा), **५.** जगज्योति (कु. सन्तोष श्रीवास्तवं)। एक लघु काव्य-"महर्षिदयानन्द-प्रशस्तिकाव्यम्" इसमें ३९ कवियों की ५० श्रद्धाञ्जलि संस्कृत कविताओं का संग्रह है।

इन सब काव्यों को लेकर लेखनी, विद्या व वाणी के धनी डॉ. धर्मवीर जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन परक संस्कृत-काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन शोध ग्रन्थ लिखा है। यह ग्रन्थ सात अध्यायों में विभक्त है। **प्रथम अध्याय** में संस्कृत काव्य परम्परा का सामान्य परिचय, **द्वितीय अध्याय**-संस्कृत साहित्य में जीवन परक काव्यों की परम्परा, **तृतीय अध्याय**-महर्षि दयानन्दः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, **चतुर्थ अध्याय**-स्वामी दयानन्द के जीवन परक महाकाव्य की शास्त्रीय समालोचना, **पंचम अध्याय**-स्वामी दयानन्द के जीवन परक लघुकाव्य, **षष्ठ अध्याय**-स्वामी दयानन्द जीवन परक खण्ड काव्य और सप्तम अध्याय में विषय का उपसंहार किया है।

पुस्तक का आमुख मराठी व अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक, शिक्षा शास्त्री, सांसद, समाजसेवी, स्वामी रामानन्द तीर्थ वि.वि. के पूर्व कुलपति, बहुभाषाविद् चिंतक प्राचार्य डॉ. जनार्दन वाघमारे जी ने विस्तार से विद्वत्तापूर्वक लिखा है। जिससे पुस्तक की महत्ता और बढ़ गई है।

सुन्दर आवरण से युक्त, विद्वान् लेखक की यह पुस्तक शोध कराने व करने वालों दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। गुरुकुलों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के संस्कृत छात्रों के लिए भी बहुपयोगी है। ऋषि दयानन्द के जीवन विषय में जो अनुराग रखने वाले पाठक हैं, उनके लिए भी उतनी ही रुचिकर है। पुस्तक पढ़कर पाठक गण लाभ उठावेंगे इसी आशा के साथ।

-सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर।

नाम-हितोपदेशः (प्रबोधचन्द्रिकाव्याख्योपेतः), **लेखक**-उदयनाचार्यः, **प्रकाशक**-रामलाल कपूर ट्रस्ट, **पृष्ठ**-१६८, **मूल्य**-मात्र ७० रु.

संसार में सबसे अधिक ज्ञान का भण्डार संस्कृत साहित्य में है। इससे अधिक मानव के उत्थान का ज्ञान, संसार की किसी भाषा में नहीं है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपवेद, स्मृति ग्रन्थ, श्रौत ग्रन्थ, नीति शास्त्र, धर्म-शास्त्र, रामायण, महाभारत आदि-आदि ग्रन्थ ज्ञान के अथाह सागर हैं।

मनुष्यों की आख्यान प्रियता को देखकर कुछ विद्वानों ने मनुष्यों को शिक्षा देने के लिए अपने ग्रन्थों में कथाओं का सहारा लिया। इन कथा ग्रन्थों में दो मुख्य ग्रन्थ माने जाते हैं, एक-पञ्चतन्त्र, दूसरा-हितोपदेश। इन दोनों ग्रन्थों का विश्व की विभिन्न भाषाओं में भाष्य व अनुवाद हो चुका है। हितोपदेश को लेकर हमारे योग्य विद्वान् आचार्य उदयन जी ने इस ग्रन्थ की "प्रबोध चन्द्रिका व्याख्या" लिखी है। इस व्याख्या में लेखक ने नीति, अन्वय, कोष, व्याकरण, अन्वयार्थ और भाषार्थ इतना सब लिखा है। छात्रों की सरलता के लिए व्याकरण में सन्धि, समास, कृदन्त, तद्धितान्त, सुबन्त, तिङ्गत इन सब को बड़ी योग्यता पूर्वक दर्शाया है। जिसके कारण छात्रों के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है।

हितोपदेश में कहीं-कहीं अश्लीलांश भी है, इस अश्लीलांश को पढ़ना हमारे विद्वान् उचित नहीं समझते हैं। इसी दृष्टि को लेकर विद्वान् लेखक ने जो व्याख्या की है वह अश्लीलांश से रहित है। भूमिका में लेखक ने इस व्याख्या की आवश्यकता और विशेषता को विस्तार से लिखा है। भूमिका में अध्यापकों से निवेदन व पढ़ने वाले छात्रों के लिए निर्देश भी दिये हैं।

सुन्दर आवरण व मुद्रण से युक्त यह ग्रन्थ संस्कृत अध्यापकों व छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा ऐसी आशा है।

-सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर।

नाम-पाणिनीय शिक्षा (शिक्षाभावप्रकाशोपेता), **लेखक**-उदयनाचार्य, **प्रकाशक**-रामलाल कपूर ट्रस्ट, **पृष्ठ**-८०, **मूल्य**-३० रु. मात्र।

शिक्षा का मनुष्य के जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

शिक्षा के बिना मनुष्य को पशुतुल्य कहा है। पशुओं में अपने जीवन यापन का स्वाभाविक ज्ञान होता है, किन्तु मनुष्य के पास स्वाभाविक ज्ञान उसका ठीक-ठीक जीवन चल सके इतना नहीं होता है। इसलिए मनुष्य को किसी न किसी निमित्त से ज्ञान प्राप्त करना होता है। मनुष्य ज्ञान प्राप्त मुख्य रूप से तीन प्रकार से करता है। **पहला**-किसी से किसी ग्रन्थ को पढ़कर, **दूसरा**-दूसरों के व्यवहारों को देखकर, **तीसरा**-सुनकर। इन तीनों में सबसे अधिक ज्ञान पढ़ने से होता है।

हमारे ऋषियों ने वर्णोच्चारण की विधि से लेकर वेद पर्यन्त ज्ञान कैसे हो सब लिखा है। वर्णोच्चारण के लिए प्रमुख ग्रन्थ ''पाणिनीय-शिक्षा'' है। इस ग्रन्थ में वर्णों के स्थान, कौन वर्ण किस स्थान से बोला जाता है। वर्णों का करण (साधन), वर्णों का अन्त:प्रयत्न, बाह्य प्रयत्न, वर्णों के उच्चारण में स्थान प्रपीड़न, वृत्तिकार, वर्णों में क्रम और नाभितल यह सब बतलाया है।

इस पाणिनीय शिक्षा पर आचार्य उदयन जी (अध्यक्ष: निगम-नीडम्) ने शिक्षा प्रकाश व्याख्या लिखी है। ग्रन्थ के पढ़ने से क्या लाभ होगा? लेखक ने स्वयं लिखा है-''इस ग्रन्थ के पढ़ने से शुद्ध उच्चारण की विधि ज्ञात हो जायेगी, जिससे अशुद्ध उच्चारण का निवारण होगा। अन्यथा यथोचित प्रयत्नों के अभाव में व्यक्ति अनेक प्रकार के अशुद्ध उच्चारण कर बैठता है। यथा-अल्पप्राण को महाप्राण बोलना, महाप्राण को अल्पप्राण, जैसे-कुत: को कुथ: ह्रस्व को दीर्घ, दीर्घ को ह्रस्व बोलना, यथा-पालयतु <> पलायतु। वैसे ही शब्द (=पद, आवाज) को सब्द (=दिन), शबद, सबद आदि, विष (=जहर) को विश (=प्रजा), भाषा को भासा (=दीप्ति) आदि बोलना। अक्षर को अच्छर, स्थान को अस्थान, स्थिति को इस्थिति, श्मशान को शमशान आदि विविध उच्चारण अशुद्ध अज्ञानवश करते हैं। उन सबका परिहार इस ग्रन्थ को पढ़कर अभ्यास करने से हो जाता है।''

इस पुस्तक को लिखकर लेखक ने छात्रों पर उपकार कर दिया है। इससे पहले ''शिक्षा शास्त्रम्'' नामक ग्रन्थ भी इस विषय में लेखक लिख चुके हैं। इस ग्रन्थ को पढ़कर पाठक गण अपनी वाणी को निश्चित ही परिष्कार कर लाभ उठावेंगे और लेखक का पुरुषार्थ सफल करेंगे, ऐसी कामना है।

-सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर।

सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी सुझाव विषयक विज्ञप्ति

परोपकारिणी सभा द्वारा सन् १९९२ में संशोधित सत्यार्थप्रकाश के रूप में जब ३७वां संस्करण प्रकाशित हुआ तो उससे पूर्व 'परोपकारी' पत्रिका के सन् १९८७ के अक्टूबर-नवम्बर अंक में एक सूचना प्रकाशित करके उसके लिए सभी आर्यजनों से सुझाव मांगे गये थे, किन्तु तब किसी भी व्यक्ति का कोई सुझाव प्राप्त नहीं हुआ था। उसके उपरान्त ही परोपकारिणी सभा ने औचित्य के आधार पर उस संस्करण का प्रकाशन करने का निर्णय लिया था।

परोपकारिणी सभा आगामी संस्करण के प्रकाशन से पूर्व विद्वानों से व स्वाध्यायी आर्यजनों से सत्यार्थप्रकाश के सम्पादन के विषय में पुन: लिखित सुझाव आमन्त्रित करती है। **सुझाव तर्क, प्रमाण और तथ्यों पर आधारित तथा संक्षिप्त होने चाहिएं।** परोपकारिणी सभा आवश्यकता होने पर विशेषज्ञ व्यक्तियों को संवाद हेतु भी सादर आमन्त्रित करेगी। उनकी दक्षिणा आदि का समस्त व्यय सभा वहन करेगी।

सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि वे अपने सुझाव परोपकारिणी सभा को यथाशीघ्र प्रेषित करें।

डॉ. वेदपाल (संयोजक)
चलभाष-०९८३७३७७९३८

मनुष्यों को योग्य है कि जो वह अच्छे प्रकार सेवन किया हुआ जठराग्नि सब की रक्षा करता और जो उपासना किया हुआ जगदीश्वर पापरूप कर्मों से अलग कर धर्म में प्रवृत्त कर वार-वार मनुष्यजन्म को प्राप्त कराकर दुष्टाचार वा दु:खों से पृथक् करके इस लोक वा परलोक के सुखों को प्राप्त कराता है, वह क्यों न उपयुक्त और उपास्य होना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.१५।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पाठकों के विचार

मृतक संस्कार एवं आर्यसमाज-पौराणिक-जन मृतक संस्कार, शान्ति यज्ञ के लिए आर्यसमाज का आश्रय लेते हैं, उनका एक मात्र प्रयोजन समय एवं धन की बचत करना होता है। विवाह आदि संस्कार के प्रति उदासीन होते हैं, विवाह प्रमाण-पत्र की मान्यता होने से पौराणिक एवं अन्तरजातीय विवाह वाले आर्यसमाज का ही आश्रय लेते हैं। आज आर्यसमाज ९९ प्रतिशत मृतक संस्कार का द्योतक बना है। पौराणिक लोग एवं कुछ आर्यसमाजी भी आर्य पुरोहित द्वारा मृतक संस्कार शान्ति यज्ञ पश्चात् थोड़ा दक्षिणा देकर पौराणिक मतानुसार एकादशा, हादसा से जयादान, मृतक-श्राद्ध भोज आदि का आयोजन करते हैं दान की वस्तुयें पौराणिक पण्डित एवं उनके मन्दिरों को देते हैं।

ईश्वर, जीव, प्रकृति, लोक-परलोक, जन्म-मृत्यु आदि उपदेश से प्रभावित करने वाले विद्वान् की समाज में अन्य संस्कारों के लिए मांग क्यों नहीं? अवश्य ही समझाने एवं प्रचार की कमी है। आवश्यकता है कि पुरोहित, आचार्य पारिश्रमिक, दक्षिणा के साथ प्रचार-प्रसार एवं संस्था के विकास के लिए आवश्यक दान की वस्तुएँ, राशि यजमान की स्थिति अनुसार अवश्य ही ले, यजमान को अन्य संस्कार के लिए प्रेरित कर उक्त संस्कार से सम्बन्धित पत्रक बाँटे।

पुरोहित, आचार्य स्वतन्त्र न होकर सम्बन्धित आर्यसमाज को दान, वस्तुएँ, सहयोग राशि, चन्दे की राशि दिलवाये, सम्भव हो तो सम्बन्धित आर्यसमाज से रजिस्ट्रेशन (निबन्धन) कराकर निश्चित राशि आर्यसमाज को दिलाकर पुरोहित कार्य करे। इससे आर्यसमाज एवं पुरोहित की पहचान बनेगी। आर्यसमाज की गतिविधि, निर्माण प्रचार को बल मिलेगा, संस्था का विचार, सन्देश आम लोगों तक जायेगा। हमने इस दिशा में कुछ कार्य किया है। हर संस्कारों पर पत्रक बँटवाया है।

-नन्दलाल आर्य, मन्त्री-आर्यसमाज बेतिया।
चलभाष-०९४३०२६२९३५

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

कृपया ''परोपकारी'' पाक्षिक शुल्क, अन्य दान व वैदिक-पुस्तकालय के भुगतान इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर से ना भेजें

निवेदन है कि ई.एम.ओ. द्वारा ''परोपकारी'' शुल्क, अन्य दान व वैदिक पुस्तकालय के पुस्तकों के भुगतान भेजने का कष्ट न करें, क्योंकि इस फार्म में न तो ग्राहक संख्या का उल्लेख होता है और न ही पैसे भेजने के उद्देश्य का। सभा कर्मचारी उचित खाता शीर्ष में राशि नहीं जमा कर पाते हैं क्योंकि पैसे भिजवाने का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो पाता है। इस मनीऑर्डर फार्म में संदेश का स्थान रिक्त रहता है। कृपया साधारण एम.ओ. द्वारा ही राशि भिजवाने का कष्ट करें तथा फार्म में संलग्न समाचार वाली स्लिप पर ग्राहक संख्या, दान सम्बन्धी सूचना व पुस्तकों के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। **यदि ई.एम.ओ. से भेजना है तो संपूर्ण स्पष्ट विवरण लिखा पत्र भी अलग से अवश्य प्रेषित करें।**

-व्यवस्थापक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. आर्यसमाज में युवाशक्ति का ह्रास-कारण व निवारण-श्री बृजेन्द्र सिंह वत्स द्वारा लिखित उपर्युक्त शीर्षक से एक विचारोत्तेजक लेख 'परोपकारी' के फरवरी (द्वितीय) २०१३ अंक में प्रकाशित हुआ है। अधिसंख्य आर्यों की भी यही मानसिक पीड़ा है कि एक आदित्य ब्रह्मचारी, सर्वस्व त्यागी, योग-निष्णात, वेदज्ञ संन्यासी द्वारा धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक-सभी क्षेत्रों में चलाया गया सत्याधारित, सर्वहितकारी, सफल क्रान्तिकारी आन्दोलन शिथिल और दिशाविहीन होता क्यों जा रहा है? आश्चर्यप्रद तथ्य तो यह है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के पश्चात् आर्यसमाज के प्रारम्भिक नेता और कार्यकर्ता विदेशी शासन के रहते हुए विपरीत परिस्थितियों में भी जितना उल्लेखनीय कार्य कर गए हैं, उतना स्वाधीन भारत में समस्त सुविधाओं के होते हुए विद्वानों, प्रचारकों, संस्थाओं व कार्यकर्त्ताओं की बड़ी संख्या भी करने में समर्थ नहीं हो पा रही है। हैदराबाद सत्याग्रह जैसे बड़े आन्दोलनों की तो बात क्या, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध प्रभावशाली ढंग से आवाज़ उठा पाने में भी हम पीछे ही रहते हैं। यह सत्य है कि आर्यसमाज द्वारा प्रारम्भ किए गए नारी-शिक्षा, अछूतोद्धार, विधवा-विवाह एवं बाल-विवाह-विरोध जैसे आन्दोलनों को सामान्यत: सामाजिक मान्यता प्राप्त हो चुकी है, तथापि नशाखोरी, भ्रष्टाचार एवं अन्धविश्वास जैसी अनेकों बुराइयाँ पहले की अपेक्षा बढ़ती ही जा रही हैं, जिनके विरुद्ध प्रभावी आन्दोलन चलाने में यदि आर्यसमाज सक्रिय भूमिका निभाए, तो भारत का शिक्षित युवा वर्ग अवश्य ही उसके साथ होगा। सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे व स्वामी रामदेव के नेतृत्व में चलाए गए आन्दोलनों ने इसकी पुष्टि कर दी है। आज का युवा वर्ग सड़ी-गली अतार्किक परम्पराओं, धार्मिक अन्धविश्वासों तथा (जन्मना) जातिगत भेदभाव को समाप्त होते देखना चाहता है, किन्तु कोई सैद्धान्तिक मार्गदर्शक न होने से उसका आक्रोश दिशा-विहीन हो जाता है। ईशोपासना के स्थान पर विवेकहीन पूजा पद्धति को देखकर ईश्वर की सत्ता से ही विश्वास उठ रहा है, जातिगत ऊँच-नीच के व्यवहार से पीड़ित तथा कथित नीची जातियों में सवर्ण के विरुद्ध द्वेष और आक्रोश बढ़ रहा है, जिससे भारत का बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय खण्ड-खण्ड बँटता हुआ अल्पसंख्यक होकर उपेक्षित होता जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में उनकी रक्षा और सहायता हेतु न तो मठ-मन्दिरों के भोगी-विलासी सन्त-महन्त आगे आएँगे और न सत्ता-लोलुप राजनेतागण। अत: यह दायित्व कोई ग्रहण कर सकता है, तो वह है-संसार का उपकार करने का उद्देश्य रखने वाला, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने वाला, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोषक, वीतराग विश्वबन्धु देव दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज।

निश्चय ही, आर्यसमाज की भटकी हुई युवा पीढ़ी को सही दिशा दिखला सकता है, उसे अन्धविश्वास और नास्तिकता-दोनों से बचाते हुए वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रूप से सहायक बना सकता है, क्योंकि वैदिक मान्यताएँ बुद्धि और तर्क संगत हैं। परन्तु इसके लिए अभ्युत्थान के स्तम्भत्रय-ज्ञान, कर्म और उपासना को साथ-साथ लेकर सिद्धान्तों से समझौता न करने की निश्चित नीति अपनानी होगी। वेदज्ञान ईश्वर-प्रदत्त होने से पूर्ण शुद्ध और निर्भ्रम है। इसका व्यापक प्रचार-प्रसार करना आवश्यक है, साथ ही आर्यसमाज से सम्बद्ध लोगों को भी श्रवण-मनन और स्वाध्याय द्वारा अपना सैद्धान्तिक ज्ञान बढ़ाते रहना चाहिये। बहुधा आर्यसमाज के प्रधान, मन्त्री जैसे पदाधिकारी भी वैदिक सिद्धान्तों से अनभिज्ञ, केवल व्यवस्था कार्यों में ही अपने को व्यस्त रखते हैं। वे किसी जिज्ञासु नवागन्तुक की शंकाओं का समाधान नहीं कर पाते, जिससे शिक्षित युवक आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर भी सम्बन्ध स्थायी नहीं रख पाते। साप्ताहिक सत्संगों में ऐसे 'बाहरी' व्यक्तियों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार भी आर्यसमाज के संगठन को बढ़ाने में एक बड़ी बाधा है। वार्षिकोत्सवों में भी वक्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अवैदिक मतों की आलोचना न करें, जिससे किसी भी श्रोता की मान्यता का खण्डन न हो। ऐसे आयोजनों से भीड़ तो एकत्र की जा सकती है, किन्तु आर्यसमाज के मंच से कुछ भी 'नया' प्राप्त न होने से नए सहयोगी नहीं मिल पाते हैं। यदि आर्यसमाज के सार्वजनिक मंचों से अवैदिक मतों के खण्डन के साथ-साथ वैदिक मान्यताओं को तार्किक, बुद्धिगम्य रूप से प्रस्तुत किया जाए, तो अनेक श्रोता-विशेषकर युवक-युवतियाँ आर्यसमाज की ओर आकर्षित हो सकते हैं-यह मेरा ४०-५० वर्षों का अनुभव है। आर्यसमाज में पर्याप्त आर्ष-ग्रन्थों की उपलब्धता और नियमित स्वाध्याय की व्यवस्था नवागन्तुकों को शुद्ध वैदिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होगी।

शुद्ध ज्ञान के प्रसार के साथ-साथ समाज की सामयिक आवश्यकताओं के अनुरूप परहितकारी कार्य किसी भी संस्था को जनप्रिय बनाते हैं। जिस समाज का मुख्य उद्देश्य ही संसार का उपकार करना है, वह लोगों को दिग्भ्रमित व दु:खी होते किस प्रकार देखते रह सकता है? आज जहाँ धार्मिक अन्धविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों के परिणामस्वरूप लोग नाना प्रकार के दु:ख और यातनाएँ झेलने को विवश हो रहे हैं, वहीं टी.वी. और इन्टरनेट के माध्यम से आ रही पाश्चात्य अप-संस्कृति की

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आंधी भारतीय-संस्कृति और सभ्यता के वरणीय वातावरण को विषाक्त कर रही है। ऐसी परिस्थिति में आर्यसमाज को आगे आकर न केवल उन्हें अज्ञान-जनित दु:खों से बचाना है, अपितु उनमें भारतीयता का स्वाभिमान भी जगाना है। इसके लिए निरन्तर योजनाएँ बनाकर अलग-अलग अभियान चलाने होंगे, तभी युवाशक्ति उनमें सहयोग देने के लिए आर्यसमाज के पीछे खड़ी दिखलाई देगी।

महर्षि ने संसार के उपकार हेतु शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना अनिवार्य बतलाया है। बिना शारीरिक और आत्मिक उन्नति किए सामाजिक उन्नति संभव नहीं है। आत्मिक उन्नति के लिए ईशोपासना का शुद्ध स्वरूप जानना और अपनाना अपरिहार्य है। अत: आर्यसमजों में आसन, प्राणायाम तथा ध्यान योग के प्रशिक्षण की नियमित व्यवस्था होनी चाहिये। आर्यसमाज के सदस्यों को भी स्वयं यम-नियमों का पालन सुनिश्चित करते हुए नियमित उपासना द्वारा स्वदोषों का निरीक्षण और उन्मूलन करना चाहिये। तभी समाज में उनकी प्रतिष्ठा पूर्ववत् हो सकती है। समाजों और प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों के चयन में भी आचरण को प्रमुखता देना चाहिये। आर्यसमाज मन्दिरों के भाग को किराये पर देकर धनोपार्जन और धनसंग्रह की वणिक् वृत्ति को तिलाञ्जलि देकर वेद प्रचार व समाज सुधार में मुक्तहस्त धन व्यय करने की प्रवृत्ति ही स्वार्थी व्यक्तियों से छुटकारा दिलाकर नि:स्वार्थी आर्यों को सक्रिय बनाएगी।

क्या हम सामान्य आर्यजन उपर्युक्त उपायों से युवाशक्ति को आकर्षित करते हुए और उन्हें प्रभावी भूमिका में लाकर आर्यसमाज को पुन: प्राचीन गौरव प्राप्त कराने हेतु तैयार होंगे?

प्रताप कुमार 'साधक'-एम-३३१, आशियाना, लखनऊ-१२, चलभाष-९४५०००१४४१

२. पूज्य श्रीयुत सम्पादक-प्रो. धर्मवीर जी, सादर चरणाभिवन्दनम्। परोपकारी प्रतिमाह यथा समय उपलब्ध हो जाती है। यदा-कदा कोई अङ्क नहीं मिलता। तब मैं यह सोचकर सन्तुष्ट रहता हूँ कि ऐसी पत्रिका को यदि कोई लोभवश ज्ञान पिपासु होकर पठनार्थ रख लेता होगा, तब भी शुभ ही है।

परोपकारी पत्र का **आवरण पृष्ठ** अतीव दर्शनीय एवं प्रेरणाप्रद होता है-क्योंकि यह कभी पूर्व महापुरुषों की स्मृति लिए हुए, तो कभी वर्तमान संन्यासियों, आचार्यों एवं पण्डितों की निराली छटा लिए हुए होता है। कभी शिविरों के दृश्य से संचलित तो कभी आर्यवीरों के लाठी, भाले, तीर, तलवार-बाजी एवं व्यायाम प्रदर्शनों से सजा अति आकर्षक होता है। स्वयं में बड़ी गतिविधि का जीवन्त दर्शन करवाने वाला होता है। **सम्पादकीय** पर टिप्पणी क्या करूँ, सूर्य को दीप दिखाने के तुल्य लगता है-(टिप्पणी करना) तथापि प्रत्येक बार देश की किसी न किसी ज्वलन्त समस्या पर प्रो. धर्मवीर जी की धारदार लेखनी तथा कथित बुद्धिजीवियों, विज्ञानियों, पत्रकारों एवं अन्य उच्च शिक्षितों के लिए बहु आयामी तथा सन्तुलित स्पष्ट दिशा बोध करवाती है। और रुग्ण मानसिकता वालों के लिए किसी संजीवनी औषधी से न्यून नहीं होती। तर्क-प्रमाण-विश्लेषण युक्त सम्पादकीय देश की धड़कनों को समझने-समझाने वाला और समस्या की जड़ तक जाकर उत्तम समाधान प्रस्तुत करता है। सम्पादक धन्य है, स्वनाम धन्य हैं, श्री **धर्मवीर गहरी पकड़** और **सरल प्रस्तुतीकरण** आपकी विलक्षणता के द्योतक हैं।

एक आशाजनक और सुखद समाचार मार्च १३ के द्वितीय अङ्क में देख-पढ़कर हृदय गदगद हो रहा है। इतनी विभूतियों का एकत्र होना भी किसी सुखद आश्चर्य से कम नहीं है। और वह भी अध्यात्म को लेकर।

आर्य संस्थाओं में इस पक्ष पर प्राय: न्यूनता दिखलाई पड़ रही थी। आर्यसमाज जैसी संस्था को अभी तक मात्र सामाजिक सुधारवादी संस्था ही माना जाता रहा है। ''वैदिक आध्यात्मिक न्यास'' इस मिथक को तोड़कर आत्मोन्नति की इच्छा वाले अन्तर्मुखी जिज्ञासुओं का पथ-प्रदर्शन करने में समर्थ होगा। अध्यात्म पर अधिक केन्द्रित नहीं होने के कारण अनेक मोती आर्यसमाज से छिटक भी गये।

सिद्धान्त, साधना (एवं योग शिविर), शारीरिक-शिविर, संस्कृत-शिविर, आ.स. का इतिहास, यज्ञ, पत्रोत्तर एवं समीक्षा, पुस्तक-परिचय, संस्था-समाचार एवं आर्यजगत् के समाचार आदि सभी उत्तम स्तम्भ एवं परोपकारिणी सभा के गुरुत्तर, शुभ प्रकल्प हैं। साथ ही कविताओं एवं पाठकों की प्रतिक्रिया देकर इसमें चार चाँद लगाने के प्रशंसनीय प्रयास-परिश्रम के लिए पूरी टीम (दल) साधु वाद की पात्र है।

गुरुकुलीय आभा सम्पन्न ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थों, संन्यासियों, सद्‌गृहस्थों का यह समूह-सम्मेलन नव-क्रान्ति का सूत्रपात करता हुआ ऋषि-ऋण से उऋण, अनृण होने का स्तुत्य प्रयास कर रहा है। ऐसे महत्तर-बृहत्तर कार्य सम्पृक्त सभी विद्वानों, भ्राता-बहनों को परोपकारी के इस ''.......वैपाश'' पाठक का हृदय की अतल गहराइयों से नमन, अभिनन्दन इस प्रकल्प में बहनों की संख्या का अनुपात कम होना हमारी चिन्ता व चिन्तन का विषय हो तो उत्तम रहे।

मत वैभिन्य (सिद्धान्तत: नहीं), व्याख्या भिन्नता, प्रस्तुतीकरण की भिन्न विधा जैसी विवादों की जन्मदात्री स्थितियों से विद्वान् लोग (जन) पूर्व तैयारी के रूप में मिल बैठकर निष्कर्ष पर पहुँचे तो मेरे विचार से आप हम सभी समाज का अधिक हित कर सकेंगे। शक्ति जो बचेगी-उसका भद्रतर के लिए उपयोग हो सकेगा।

वेद-ज्ञान एवं आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य जो एक-दूसरे को गालियाँ भी देता है। मेरे लिए समान रूप से सम्माननीय

शेष पृष्ठ ४२ पर...........

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

–१ से १५ अप्रैल तक

१. वैदिक ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर–परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में ११ से १७ अप्रैल २०१३ तक ऋषि उद्यान, अजमेर में वैदिक ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें सभा के ही तत्त्वावधान में पूर्व में सम्पन्न ध्यान विषयक तीन विद्वत् गोष्ठियों में १५ मिनट तथा ३० मिनट के 'वैदिक ध्यान' के जिस प्रारूप को सभी विद्वानों ने स्वीकार किया, उस प्रारूप को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए योग्य उम्मीदवारों को प्रशिक्षण दिया गया। ५० शिविरार्थियों की सीमित संख्या वाले इस शिविर में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उ.प्र., बिहार, राजस्थान, म.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र, केरल, उड़ीसा आदि प्रान्तों से शिविरार्थियों की उपस्थिति रही। सभा को इस शिविर के लिए लगभग ५० आवेदन और भी प्राप्त हुए लेकिन प्रत्येक शिविरार्थी को व्यक्तिगत रूप से ध्यान देकर ध्यान–प्रशिक्षक के रूप में तैयार करने के अपने लक्ष्य के कारण, संख्या सीमित रखते हुए इन आवेदनों को अस्वीकार कर दिया गया। यह शिविर पूर्णत: नि:शुल्क था जिसमें पंजीयन शुल्क, भोजन शुल्क या आवास शुल्क के रूप में किसी भी प्रकार का कोई भुगतान शिविरार्थियों से नहीं लिया गया। शिविर में शिविरार्थियों को स्वामी अमृतानन्द जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, डॉ. धर्मवीर जी, आचार्य सत्यव्रत जी, आचार्य सत्यजित् जी, आचार्य आशीष जी, स्वामी सत्यानन्द जी, श्री तपेन्द्र कुमार जी (वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी), डॉ. के.एस. उदावत जी (सी.एच.एम.ओ. के पद से सेवानिवृत्त) आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में तैयार प्रशिक्षक वैदिक ध्यान की निर्णित पद्धति का एकरूपता से प्रचार करेंगे व इसे आर्यसमाज की ध्यान पद्धति के रूप में स्थापित करेंगे–ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है। (शिविर की विस्तृत सूचना अलग से प्रकाशित की जाएगी)।

२. सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार-प्रसार कार्यक्रम–**१६ मार्च**–जयपुर श्री सज्जनसिंह जी की माता श्रीमती मदन कुमारी कोठारी जी के शान्ति यज्ञ में आत्मा की नित्यता पर चर्चा व श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। **२६ मार्च**–महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली (एम.डी.एच.) के ९०वें अमृत महोत्सव में शामिल हुए। **२८ से ३१ मार्च**–लोहारु आर्यसमाज हरियाणा में आर्यवीर दल शिविर और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन संघर्ष के बारे में चर्चा व उनकी ७२वाँ प्रेरणा दिवस मनाया। डॉ. राजेन्द्र जी जिज्ञासु, आचार्य बलदेव जी, आचार्य विजयपाल आदि गणमान्य विद्वान् भी उपस्थित रहे। **३१ मार्च**–शाम को श्री महेश विद्यालंकार जी (दिल्ली) के सुपुत्र के विवाह संस्कार में सम्मिलित हुए। **७ अप्रैल**–उ.प्र. आर्यसमाज मुरादाबाद के कार्यक्रम में। **९ से ११ अप्रैल**–करनाल लाडवार आर्यसमाज उत्सव में। **१२ से १४**–ध्यान प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर, ऋषि उद्यान अजमेर में।

३. यज्ञ एवं प्रवचन–जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान, आर्यजगत की उन संस्थाओं में से एक है जहाँ पूरे वर्ष दोनों समय अपरिहार्य रूप से यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम होता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय भी किया जाता है। प्रात: प्रवचन के क्रम में सामान्य दिनों में डॉ. धर्मवीर जी जहाँ पुरुषाध्याय (यजु. ३१वाँ अध्याय) पर व्याख्यान करते हैं, वहीं स्वामी विष्वङ् जी अपने योगदर्शन के क्रम को आगे बढ़ाते हैं तथा सायं सत्संग में आचार्य सोमदेव जी ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका का स्वाध्याय कराते हैं।

प्रात: यज्ञोपरान्त प्रवचन क्रम में **स्वामी विष्वङ् जी** ने योगदर्शन विभूतिपाद की चर्चा में शंका समाधान करते हुए बताया कि पिछले जन्म की याद हमें क्यों नहीं रहती? इस जन्म में ही किसी के द्वारा किया गया अपकार उसके माफी माँग लेने पर भी नहीं भूला जाता। ईश्वर की ओर से बहुत अच्छी व्यवस्था है कि हमें पिछला जीवन याद नहीं रहता, नहीं तो जीना कठिन हो जाता। परन्तु योगी चित्त में संयम कर पूर्वजन्म के बारे में जान लेता है।

डॉ. धर्मवीर जी ने कुरुक्षेत्र के पास लोहारु गाँव का अनुभव सुनाते हुए बताया कि वहाँ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने २९ मार्च १९४१ में शोभा यात्रा निकाली थी। जिसमें नमाज के समय जुलुस के लोगों ने वहीं खड़े-खड़े संध्या की थी। बाद में आगे जाने पर कट्टरपन्थी मुसलमान गुण्डों ने जुलूस पर हमला कर सबको घायल कर दिया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को कुल्हाड़े का ३ इंच का गहरा घाव लगा, परन्तु वे विचलित न होकर स्वयं स्टेशन जाकर रेल से अगले स्टेशन पर उतरकर अस्पताल पहुँचे। उनके लहुलुहान कपड़े आज भी गुरुकुल झज्जर में रखे हैं। इस जुलूस के बाद आर्यसमाज का कभी जुलूस नहीं निकला। मान्य प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी की प्रेरणा से इस वर्ष ही २९ मार्च को जुलूस निकाला गया।

आचार्या शीतल जी ने मीमांसा दर्शन की समाप्ति पर अनुभव सुनाते हुए बताया कि १६ अध्याय वाला मीमांसा कर्मकाण्ड को आधार बनाकर वाक्यार्थ बोध कराता है। भाषा-शास्त्र की दृष्टि से मीमांसा व्याकरण-शास्त्र से एक कदम आगे है।

–ब्र. ज्ञानचन्द्र व दीपक आर्य।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आपसी-झगड़े

१. भाई-बहिन की आपसी लड़ाई चिंता और अवसाद बढ़ाती है और आगे चलकर इससे मनोबल कम होने की आशंका भी होती है, लेकिन माता-पिता को अपने बच्चों के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए, वरना इससे दूसरी मानसिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं। एक शोध के अनुसार बच्चों की लड़ाई में माता-पिता के हस्तक्षेप से दूरगामी भावनात्मक नुकसान पहुंच सकता है। इसकी बजाय माता-पिता बच्चों के लिए कुछ स्पष्ट नियम बना दें, ताकि झगड़े की संभावना कम हो जाए। पूर्व के अध्ययनों की तरह ही इस शोध का भी यही निष्कर्ष है कि माता-पिता घर में नियम बना दें, घर के सभी बच्चे उन नियमों का पालन करें। इससे झगड़े निपटाने में माता-पिता को मदद मिल सकती है। मिसौरी युनिवर्सिटी की निकोल कैम्पियॉन ने कहा कि "माता-पिता को कभी भी पक्षपात नहीं करना चाहिए। वीडियो गेम, कम्प्यूटर या टीवी के लिये समय निर्धारित कर देना चाहिए। इस प्रकार बच्चों के झगड़े की संभावना को कम किया जा सकता है।" **सौजन्य-राष्ट्रदूत-२८.१२.२०१२**

नींद की अवधि

२.. एक अध्ययन से पता चला है कि रात में एक घंटा जल्दी सोने से उच्च रक्तचाप (बीपी) को दूर रखा जा सकता है। इस अध्ययन के दौरान पाया गया कि उच्च रक्तचाप की शुरुआती स्थिति वाले लोगों के एक घंटा ज्यादा सोने से उनका रक्तचाप सिर्फ छह सप्ताह में स्वस्थ स्तर पर आ गया। अध्ययन में उन पुरुषों और महिलाओं के आंकड़ों पर नजर रखी गई, जो रात में सात घंटे या उससे कम सोते थे, उनके रक्तचाप के आंकड़े उच्च रक्तचाप की सीमा में प्रवेश कर रहे थे। उच्च रक्तचाप को हृदयाघात का एक बड़ा कारण माना जाता है। नींद की कमी और तनावपूर्ण जीवनशैली को लंबे समय से उच्च रक्तचाप पैदा करने वाली स्थिति माना जाता है। लेकिन ताजा अध्ययन से पता चला है कि यदि नींद की अवधि बढ़ा दी जाए, तो उच्च रक्तचाप पर काबू पाया जा सकता है।

सौजन्य-राष्ट्रदूत-१७.१२.२०१२

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

मनुष्य लोग विद्वानों से पूछकर सब विद्याओं का ग्रहण करें तथा विद्वान् लोग इन विद्याओं का यथावत् ग्रहण करावें। परस्पर अनुग्रह करने वा कराने से सब वृद्धियों को प्राप्त होकर विद्या और चक्रवर्ति आदि राज्य को सेवन करें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.२४।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर-आपको जानकर अपार हर्ष होगा कि गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि-महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार वाले बनाने हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियाएँ करायी जाती हैं। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। नये सत्र के प्रवेश आरम्भ हो रहे हैं। यहाँ पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएं उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद्, लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का ५वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यहाँ के स्नातक शिक्षक, पुरोहित तथा सैन्य, पुलिस पी.ए.सी. वन विभाग, लोक सेवा आयोग आदि विभागों में कार्यरत हैं। यहाँ पर छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष बल दिया जाता है। प्रवेश के लिए संपर्क करें।

-आचार्य इन्द्रपाल (मुख्य अधिष्ठाता),
चलभाष-०९४११९२९५२८

२. आर्यसमाज डोहरिया, तह-शाहपुरा, जिला-भीलवाड़ा का वार्षिक उत्सव दिनांक २९ से ३१ मार्च २०१३ तक कराया गया। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रतिदिन इस प्रकार रही। **१.** चतुर्वेद शतकम यज्ञ प्रातः ८ से १० बजे तक। **२.** भजनोपदेश प्रातः १० से १२ बजे तक। **३.** सायंकालीन यज्ञ ४ से ५.३० बजे तक। **४.** भजनोपदेश रात्रि ८ से १० बजे तक।

भजनोपदेश का कार्य पं. अमर सिंह जी विद्यावाचस्पति ब्यावर के द्वारा सम्पन्न हुआ। रात्रि कार्यक्रम ग्राम राजपुरा में कराया जो यहाँ से १० कि.मी. दूर है। वहाँ के नवयुवकों को सत्यार्थप्रकाश निःशुल्क वितरित की गई। वरिष्ठ नागरिकों को दयानन्द-ग्रन्थमाला, गौकरुणानिधि, वैदिक रश्मियाँ भेंट की गईं। यज्ञ के ब्रह्मा पं. नवरत्नमल शर्मा रहे जो आर्यसमाज डोहरिया के पुरोहित हैं।

३. आर्यसमाज नागल का होलिकोत्सव-वर्तमान में हमारे जिन पर्वों का स्वरूप विकृत हुआ है उनमें होली को विशेष रूप से उद्धृत किया जा सकता है। होली के नाम पर अत्यन्त अभद्र व्यवहारों का प्रचलन प्रतिवर्ष बढ़ता ही जा रहा है। ऐसे में इन कुरीतियों को चुनौती देते हुए, सद्परम्परा को चलाने का दायित्व आर्यसमाज बढेड़ी, नागल (सहारनपुर, उ.प्र.) जैसी आर्य संस्थाएँ उठा रही हैं। यहाँ होली पर्व के अवसर पर एक वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें लगभग ४००-५०० की संख्या में धर्मप्रेमी सज्जन उपस्थित थे। आचार्य कर्मवीर जी के निर्देशन में समाज की बच्चियों यथा सृष्टि आर्या, सिमरन, विदुषी व राशि ने यज्ञ कुशलता पूर्वक संपन्न कराया। कार्यक्रम में पधारने वाले प्रत्येक सज्जन ने इस प्रयास व कार्यक्रम की सराहना की।

४. गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास, राउरकेला-४, ओड़िशा का ५३वाँ वार्षिकोत्सव व ऋषिबोध महोत्सव विगत् ८ मार्च, २०१३ से प्रारम्भ होकर १० मार्च २०१३ को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस ३ दिवसीय महोत्सव में वेदपारायण महायज्ञ, वेदप्रवचन, भजन समारोह, ब्रह्मचारियों की व्यायाम क्रीड़ा प्रदर्शन का आयोजन किया गया। परिव्राजक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने **'ओ३म्'** ध्वजारोहण की। पं. वीरेन्द्र कुमार पण्डा, पं. नकुल देव शास्त्री व पं. सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने यज्ञ-संचालन किये। आचार्य कर्मवीर, सम्पादक, अग्निदूत जी ने अपने उद्बोधन में आदर्श गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था और आर्यसमाज से सफल मानव जीवन निर्माण पर बल दिया। मुख्याधिष्ठाता आचार्य डॉ. देवव्रत ने कार्यक्रम का संचालन किया। मथुरा से आचार्य अरविन्द जी ने भाग लेकर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार हेतु सुझाव दिया। आचार्य सुदर्शन देव जी (गुरुकुल हरिपुर)ने भी अपना उद्बोधन प्रदान किया। स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, श्री रघुनाथ नायक, श्री दीनबंधु साहु, स्वामी सोमवेश आदि आर्य नेताओं ने अपने-अपने वक्तव्य में वेद मार्ग पर चलने को कहा। गुरुकुल के आचार्य भीमसेन पण्डा जी ने समाज सुधार मार्ग पर बल दिया। श्री रामचन्द्र साहु व श्री सुभाष चन्द्र साहु ने भोजन की व्यवस्था का संचालन किया। आचार्य शंकर मित्र जी और साथियों ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। पं. धनेश्वर बेहेरा ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया।

५. आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर-सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आर्ष महाविद्यालय गत ९८ वर्षों से निरन्तर आर्षपाठ विधि के प्रचार-प्रसार में लगा हुआ है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके अनेक विद्वान् राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य कर रहे हैं। इस समय गुरुकुल में सुयोग्य अध्यापक के नेतृत्व में गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारी विद्या बल व चरित्र की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। गुरुकुल में आर्ष पाठविधि के अध्ययन के

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

साथ-साथ अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, भूगोल आदि शिक्षा की उचित व्यवस्था है। तथा ब्रह्मचारियों के शारीरिक विकास के लिए मल्लयुद्ध (कुश्ती), पादकन्दुक (फुटबाल), हस्तकन्दुक (वॉलीबाल), मुक्केबाजी (बॉक्सिंग), खो-खो आदि खेलों की व्यवस्था के साथ मल्लखम्भ व योगासन, रस्सा मल्लखम्भ व यौगिक क्रिया का अभ्यास करवाया जाता है। आत्मरक्षा के लिए लाठी, खड्ग, शूल, परशु, छुरिका, धनुष-बाण, मुग्दर (मोगरी), शारीरिक कलां (जिम्नास्टिक) इत्यादि के प्रशिक्षण की पूर्ण व्यवस्था है। आप सभी अपने बच्चों को विद्वान्, बलवान् व चरित्रवान् तथा देशभक्त बनाने के लिये गुरुकुल में अवश्य प्रवेश करवायें। विद्यार्थी अपने साथ दो पासपोर्ट साइज फोटो लावें। प्रवेश तिथि निम्नलिखित है-**०७ अप्रैल, ०१३**, रविवार, प्रात: १० बजे, **२८ अप्रैल, ०१३**, रविवार, प्रात: १० बजे, **२६ मई, ०१३**, रविवार, प्रात: १० बजे, **३० जून, ०१३**, रविवार, प्रात: १० बजे।

सम्पर्क : आचार्य, चलभाष-९४१६०५५०४४

६. श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवम् आदर्श गौशाला, खेड़ा खुर्द, दिल्ली-दिल्ली की प्रसिद्ध संस्था व महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध गुरुकुल खेड़ा-खुर्द, दिल्ली में प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ प्राथमिक कक्षा से ही आधुनिक विषय अंग्रेजी, साइन्स व कम्प्युटर की शिक्षा दी जाती है। प्रवेश के लिए सम्पर्क करें।

-आचार्य सुधांशु (प्राचार्य), चलभाष-९३५०५३८९५२

७. परोपकारिणी सभा द्वारा नागौर जिले में वेद प्रचार-दिनांक ६ से २५ अप्रैल २०१३ तक नागौर जिले में वेद प्रचार और साथ-साथ गो रक्षा, नशामुक्ति, भ्रूणहत्या, पाखण्ड-खण्डन व सत्यार्थप्रकाश इत्यादि विषयों पर उपदेशों व व्याख्यानों के माध्यम से जनता में जागृति फैलाना, ईश्वर का सच्चा स्वरूप, धर्म का सच्चा स्वरूप आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस कार्यक्रम को संयोजन व नेतृत्व चौ. किशनराम आर्य (बिल्लू) व श्री यशमुनि जी (पर्वतसर) तथा विद्वान् भजनोपदेशक भूपेन्द्र सिंह आर्य (अलीगढ़), लेखराज आर्य (भरतपुर) ब्र. सुरेश कुमार आर्य (अजमेर ऋषि उद्यान) ने प्रदान किया। सैकड़ों लोगों ने इस कार्यक्रम का लाभ उठाया, कार्यक्रम में भाग लेने वाले मुख्य अतिथियों में नगरपालिका के अध्यक्ष श्री भगवान बंग, व्यापार मण्डल के अध्यक्ष श्री रामस्वरूप जी मोदी, प्रधानाचार्य श्री सुरेश कुमार जी, ब्राह्मण पारिक के अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर जी, विकलांग सेवा समिति के मन्त्री श्री बल्लभ जी पुरोहित आदि सम्मिलित थे। ६.४.२०१३ को रात्रि माहेश्वरी भवन में सत्संग व प्रात: हवन हुआ। ०७.०४.२०१३ रात्रि को वैदिक आश्रम बगीची पर्वतसर में सत्संग व प्रात: हवन हुआ। १०.४.२०१३ को रात्रि ८ से ११ बजे तक बागड़ा निडम में व १७.४.२०१३ को भी यहीं निडम में ही ९ से ३ बजे तक कार्यक्रम हुआ जिसमें 'स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती' पधारे थे, जिसको सुनने के लिए उपखण्ड अधिकारी श्री जगदीश प्रसाद शर्मा जी व तहसीलदार श्री रघुनाथ सिंह फौजदार इत्यादि महानुभाव उपस्थित हुए तथा बहुतायत संख्या में स्त्री-पुरुष ने उत्साहित होकर भाग लिया।

८. मानव कल्याण एवं प्रदूषण-निवारक यज्ञ सम्पन्न-जयपुर : मानसरोवर कॉलोनी की सामाजिक संस्था श्रीकृष्ण चेतना मंच ने रामकृष्ण पार्क में आर्यसमाज जयपुर (दक्षिण) के सान्निध्य में ''मानव कल्याण एवं प्रदूषण निवारक यज्ञ'' दिनांक ३१.०३.१३ को सम्पन्न कराया। ब्रह्मा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने अथर्ववेद के मन्त्रों से सुग्राह्य व्याख्या के साथ आहुतियाँ दिलवाई।

श्री कृष्ण चेतना समिति के संयोजक नन्दकिशोर काम्बोज तथा उत्तम अग्रवाल दम्पत्ति होता बने तथा स्थानीय सैकड़ों निवासी भी आहुतियाँ अर्पित कर हर्षित हुए। सरस भजन श्रीमती गायत्री, नीलम-कनक जैन, डॉ. अशोक मित्तल तथा रामकिशोर शर्मा-पुनीत द्वारा प्रस्तुत किये गए। मंदिर पुरोहित राकेश शर्मा एवं जगदीश मास्टर ने सभी उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया।

९. सोजत, ११ अप्रैल-नवसंवत्सर के अभिनन्दन अवसर पर आर्यसमाज के तत्त्वावधान में स्थानीय मोदी मोहल्ले में विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। स्वतन्त्रता सेनानी कवि-पत्रकार स्व. यशवंत ''रुचिर'' की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती भटनागर के सान्निध्य में आयोजित यज्ञ में पौरोहित्य पद से उपदेश देती हुई आर्यसमाज की राष्ट्रीय नैत्री श्रीमती लीलावती आर्या ने कहा कि यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

इस अवसर पर स्वामी श्री वासुदेव गुरुकुल, खोखरा के मुख्य आचार्य चतराराम आर्य ने बालिकाओं को आर्ष संस्कारित शिक्षा दिलवाने हेतु सोजत में कन्या गुरुकुल खोलने की जरूरत को इंगित किया। कार्यक्रम में आर्यसमाज के प्रधान दलवीर राय, मन्त्री हीरालाल आर्य सहित बच्चन बाबू, हरिकृष्ण टॉक, रवीन्द्र भटनागर ने यज्ञमान के रूप में आहुतियाँ दी वहीं मुख्य यजमान के रूप में नवनीत राय ''रूचिर'' ने परिवार सहित अपनी भागीदारी निभाई।

समारोह में खोखरा गुरुकुल के ३५ ब्रह्मचारियों ने संवेत् स्वरों में वेद मन्त्रों का पाठकर सभी को भाव विभोर किया।

१०. कार्यालय आर्यसमाज शाहपुरा-आर्यसमाज का **१३८ वाँ स्थापना दिवस** स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में मनाया गया। विशेष यज्ञ का आयोजन रखा गया, जिसमें नवसंवतसर एवं आर्यसमाज स्थापना के उपलक्ष्य पर विशेष वैदिक मन्त्रों की आहुतियां दी गई। यज्ञ के मुख्य यजमान सत्यनारायण तोलम्बिया, रामप्रसाद छीपा, गोपाल राजगुरु, रामधन काबरा थे। यज्ञ के पश्चात् ध्वज फहराया गया। सभा आयोजित

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

की गई, जिसकी अध्यक्षता शिक्षाविद् राजेन्द्र प्रसाद डांगी थे। आर्यसमाज की स्थापना के बारे में हीरा लाल आर्य, सोहनलाल शारदा, सत्यनारायण तोलम्बिया, कन्हैयालाल आर्य ने विचार रखकर महोत्सव पर प्रकाश डाला। दयानन्द विद्यालय के छात्रों ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में हनुमान प्रसाद पुरोहित, बाल मुकुंद बगेरवाल, जयशंकर पाराशर, अखिर व्यास आदि उपस्थित थे। शान्ति पाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

११. गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा, ओड़िशा- होली के पावन पर्व पर आदर्श कन्या गुरुकुल की दो विदुषी कन्याओं ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की- आर्यजगत के प्रसिद्ध संन्यासी, गुरुकुल आश्रम आमसेना आदि अनेकों संस्थाओं के संस्थापक, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने वैदिक धर्म एवं देश की सेवा करने के लिए नए कार्यकर्ताओं को तैयार करने के लिए नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा दिलवाने की परम्परा प्रारम्भ कर रखी है, इस पर अब तक पचासों युवक दीक्षा लेकर देश के विभिन्न भागों में एवं गुरुकुल द्वारा संचालित संस्थाओं को संचालन करने में संलग्न हैं। गत दिसम्बर महीने में नैष्ठिक दीक्षा के स्वर्ण जयन्ती पर ही दो ब्रह्मचारियों ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अपना जीवन समाज के लिए अर्पित किया था, परन्तु कन्यायें प्रायः नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेती, पहले सन् २००२ में २-३ कन्याओं ने नैष्ठिक दीक्षा ली थी अब स्वामी जी की प्रेरणा से उत्साहित होकर शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण ब्रह्मचारिणी निशा आर्या एवं ब्रह्मचारिणी सुव्रता आर्या ने अत्यन्त श्रद्धा के साथ पूज्य स्वामी जी के प्रत्यक्ष सान्निध्य में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण कर अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार एवं नारी जाति के उत्थान के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया।

१२. गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा, ओड़िशा- सुन्दरगढ़ जिले के गुलईबहाल ग्राम में वैदिक धर्म दीक्षा का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न- होली महोत्सव के शुभावसर पर २४ मार्च को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ प्रधान श्री वानप्रस्थ विशिकेशन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में विभिन्न मतावलम्बी २०० से अधिक परिवारों ने अत्यन्त उत्साह और श्रद्धापूर्वक वैदिक धर्म की दीक्षा ली। इस अवसर पर आशीर्वाद देने के लिए गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य पूज्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने भारी संख्या में उपस्थित श्रद्धालु सज्जनों से आग्रह किया कि देश की अखण्डता और एकता की रक्षा करना है तथा देश में सुख और शान्ति स्थापित करनी है तो हम सभी को सत्य सनातन वैदिक धर्म अपनाने का यत्न करना चाहिए। यह सारा आयोजन सुन्दरगढ़ जिले में सम्पन्न हुआ।

श्री परमानन्द राऊत एवं श्री वासुदेव होता, पं. कृष्ण शास्त्री आदि के पुरुषार्थ से हुआ। यह कार्यक्रम आर्यजगत के सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासी एवं उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

१३. गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ- योगिराज भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली एवं युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रजभूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्रप्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा-६ एवं ७ में ही योग्यतानुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम चार अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर कक्षा-८ में भी प्रवेश पा सकता है। गुरुकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अतः छात्र का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिये अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लायें। गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है, आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी सन्तानों की शिक्षित, सक्षम, संस्कारवान्, चरित्रवान् एवं राष्ट्रभक्त बनाकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें। **आचार्य हरिप्रकाश (प्राचार्य),**

चलभाष-९४५७३३३४२५, ९८३७६४३४५८

१४. आर्यसमाज बारां (राजस्थान)- बारां ३१ मार्च। ऋषि बोध पर्व के अवसर पर चल रहे तीन दिवसीय यज्ञ, भजन एवं उपदेश कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में सैकड़ों धर्म प्रेमियों ने भाग लिया।

समापन सत्र के अन्त में आर्यसमाज बारां के प्रधान श्री योगेश्वर स्वरूप भटनागर तथा मन्त्री श्रीमती गायत्री नागर ने आचार्य वेद प्रिय शास्त्री केलवाड़ा एवं भजनोपदेशक कुलदीप आर्य बिजनौर, श्री अर्जुन देव चड्ढा कोटा तथा विभिन्न आर्यसमाज से पधारे एवं बारां शहर के सभी भद्र पुरुषों एवं मातृशक्ति को कार्यक्रम की सफलता के लिए सधन्यवाद आभार व्यक्त किया।

१५. आर्यसमाज सैक्टर ९, पंचकुला में ११ से १४ जुलाई को वैदिक विद्वत्परिषद् द्वारा द्वितीय विद्वत्समावेश का आयोजन किया जा रहा है। वैदिकविद्वत्परिषद् द्वारा आयोजित इस द्वितीय विद्वत्समावेश में शास्त्रीय चर्चा हेतु हम आप सभी विद्वानों को आदरपूर्वक आमन्त्रित करते हैं। आपके इन विद्वत्समावेशों में पूर्ण रूप से संस्कृत भाषा में शास्त्रीय विषयों को अधिकृत करके संवाद करते हुए एक शुद्ध वैदिक परम्परा, विद्वानों में प्रेम व समन्वय को स्थापित करना हमारा उद्देश्य है। हमारे प्रथम प्रयास के अन्तर्गत प्रतिमास INTERNET पर

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

SKYPE के माध्यम से प्रथम रविवार को २ से ४ बजे तक शास्त्रीय चर्चा की जाती है, द्वितीय प्रयास में हमने २, ३ दिसम्बर २०१२ को आर्यसमाज पंजाबी बाग दिल्ली में अत्यन्त सफल विद्वत्समावेश का आयोजन किया जिसमें लगभग ३५ विद्वानों ने मात्र संस्कृत भाषा का आलम्बन करके अनेक शास्त्रीय विषयों पर चर्चा की।

चर्चा के साथ आयोज्यमान इस विद्ववत्समावेश के निमित्त आप सबसे निवेदन है कि व्याकरण, ब्राह्मण, दर्शन, धर्मशास्त्र, वेद आदि के विषयों में इच्छित विषय ३० अप्रैल तक हमे भेजने का अनुग्रह करें। आपका विषय स्वीकृत होने पर आप अपने विषय का संक्षिप्त लिखित रूप ३१ मई तक हमें निमन्त्रण पत्र के अनुसार प्रेषित करने का अनुग्रह करें।

१६. जीवन कल्याण साधना केन्द्र द्वारा संचालित गुरुकुल हरिपुर, नुआपाड़ा, ओड़िशा-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर गुरुकुल हरिपुर जुनवानी, जिला नुआपाड़ा, ओड़िशा में ११ अप्रैल को उल्लासमय वातावरण में नूतन वर्ष का स्वागत किया गया। सर्वप्रथम आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में बृहद्यज्ञ पूर्वक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। जिसमें ओड़िशा एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों के विभिन्न ग्रामों से पधारे हुए शताधिक धर्मानुरागी सज्जनों ने नई प्रेरणा, नये उत्साह की प्राप्ति के लिये यज्ञ भगवान् में आहुति प्रदानकर नववर्ष को आह्वान किया।

इस अवसर पर गुरुकुल के उपप्रधान श्री सोमनाथ जी पात्र (ओड़िशा), श्रीमती विनोदिनी पण्डा जी (बी.डी.ओ.) जयपाटना सपरिवार तथा नुआपड़ा शहर के अनेक गणमान्य महानुभाव एवं पत्रकार बन्धु कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे। यह सारा कार्यक्रम गुरुकुल के आचार्यों एवं सहयोगियों के कुशल प्रबन्धन में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

१७. आर्यसमाज विज्ञान नगर-कोटा, १० अप्रैल। माता-पिता की सेवा करना भी ईश्वर भक्ति का ही रूप है। हम अपने माता-पिता की सेवा उसी प्रकार करें जैसे ईश्वर भक्ति कर रहे हों। यह बात आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चढ्डा ने बुधवार को गोविन्द धाम परिसर की यज्ञशाला में आयोजित अमावस्या यज्ञ वैदिक सत्संग के अवसर पर कही।

आर्यसमाज विज्ञान नगर द्वारा किशोरपुरा स्थित गोविंद धाम में अमावस्या के अवसर पर यज्ञ किया गया। जिसके मुख्य पुरोहित शिवराज वशिष्ट थे। वहीं मुख्य यजमान समाज सेवी संजय साहनी दम्पत्ति व श्रीमती भसीन, आर्य विद्वान् पण्डित रामदेव शर्मा, जे.एस. दुबे, राजीव आर्य आदि वेद मन्त्रों के साथ यज्ञ में आहुतियाँ दीं।

१८. वैदिक परम्पराओं के संवर्द्धन हेतु आर्ष गुरुकुलों के आचार्यों की बैठक सम्पन्न-दिनांक २४ मार्च रविवार को आर्ष गुरुकुल आर्यसमाज गुरु तेग बहादुर नगर दिल्ली में वैदिक परम्पराओं के विस्तार एवं संवर्द्धन हेतु आर्ष गुरुकुलों के आचार्यों की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण गोष्ठी सम्पन्न हुई। गोष्ठी में आर्ष परम्पराओं के संवाहक गुरुकुलों में छात्रों के प्रवेश को केन्द्रीकृत करना, छात्रों के एक गुरुकुल से दूसरे गुरुकुल में स्थानान्तरण, गुरुकुलों का अनेक सम्बन्धित विषयों में समन्वय तथा आर्ष परम्परा के छात्रों की उत्तमता हेतु एकीकृत परीक्षा व्यवस्था आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई तथा सैद्धान्तिक रूप से सर्वसम्मति बनी। विस्तारपूर्वक व्यवस्था की कल्पना हेतु इस क्रम में आगे अनेक बैठकें होना निश्चित हुआ है। अगली बैठक ११ से १४ जुलाई को वैदिक विद्वत्परिषद् की आर्यसमाज सै. ९ पंचकूला में होने वाली गोष्ठी के साथ होना निश्चित हुआ है।

श्रुति विज्ञान आचार्यकुलम्, ग्राम छपरा, शाहाबाद मारकण्डा के आचार्य वेदव्रत जी के संयोजन में हुई इस अनौपचारिक बैठक में अजमेर से आचार्य सत्यजित् जी, करनाल से आचार्य प्रदीप कुमार जी, कुरुक्षेत्र से आचार्य सत्यप्रकाश जी, जुआं कलां से आचार्य वेदनिष्ठ जी, रेवली से आचार्य सुरेन्द्र जी, दिल्ली से आचार्य रामचन्द्र जी, आचार्य हरीश जी, आचार्य ऋषिदेव जी तथा आचार्य रवीन्द्र जी एवं आचार्य सन्दीप जी ने भाग लिया।

१९. लोहारु में मनाया गया स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मृति-प्रेरणा दिवस-२९ मार्च सन् १९४१ को लोहारु में आर्यों के नगर कीर्तन (शोभयात्रा) पर क्रूर नवाब ने हमला करवा दिया था। इस हमले में आर्यसमाज के वीर संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी नित्यानन्द, महात्मा फूलसिंह सहित अनेक आर्य विद्वानों व आर्यजनों का खून बहा था। लाठियाँ खाने वाले भी बहुत से आर्यजन थे। उस घटना तथा उन क्रान्तिवीरों की स्मृति में प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' की प्रेरणा से आर्यसमाज लोहारु व आर्यवीर दल भिवानी के संयुक्त तत्वावधान में 'स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मृति-प्रेरणा दिवस' मनाया गया। आर्यसमाज मन्दिर लोहारु में आयोजित प्रेरणा दिवस से पूर्व २८ से ३० मार्च २०१३ तक सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रचार मन्त्री चन्द्रदेव (चाँदसिंह आर्य) के नेतृत्व में व्यायाम प्रशिक्षण एवं आर्यवीर चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें लोहारु क्षेत्र के अनेक गाँवों के लगभग ७० आर्यवीरों ने सदाचार, व्यायाम आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस शिविर में आर्यवीर दल भिवानी के व्यायाम शिक्षक सतेन्द्र आर्य, जेवली का उल्लेखनीय योगदान रहा। आर्यसमाज के ओजस्वी विचारक व विद्वान् डॉ. धर्मवीर जी अजमेर, इन्द्रसिंह आर्य पूर्व-एस.डी.एम., धर्मपाल आर्य 'धीर' शास्त्री भाण्डवा, वेद प्रचार मण्डल भिवानी के अध्यक्ष रामफल आर्य भाण्डवा आदि आर्य विद्वानों के वैदिक सिद्धान्तों पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

आचार्य ऊषर्बुद्ध जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। पश्चात्

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

तपोनिष्ठ महात्मा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य बलदेव जी महाराज की अध्यक्षता में, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी महाराज एवं दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज की पावन एवं भव्य उपस्थिति में स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मृति-प्रेरणा दिवस मनाया गया।

२०. क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर, वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात द्वारा दिनांक ३१ मार्च से ०७ अप्रैल २०१३ तक ८ दिवसीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध योगनिष्ठ, तपस्वी स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में आयोजित इस शिविर में देश के १२-१३ विभिन्न प्रान्तों से लगभग २७५ शिविरार्थियों ने भाग लिया तथा प्रतिदिन १०-१२ विभिन्न विषयों की कक्षाओं द्वारा प्रशिक्षकों ने मार्गदर्शन दिया। शिविरकाल में प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञोपरान्त प्रवचन पूजनीय स्वामी सत्यपति जी द्वारा दिए गए, जिससे शिविरार्थियों को अद्‌भुत आनन्द प्राप्त हुआ।

२१. वैदिक बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, आदर्शनगर, जयपुर-आर्य वीरांगना दल राजस्थान की ओर से दिनांक ११ से १९ मई २०१३ को **व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर** का आयोजन होगा। **उदघाटन**-११ मई, सायं ५.३० बजे व **समापन**-१९ मई प्रात: १० बजे से होगा। शिविर के माध्यम से बालिकाओं में शारीरिक-बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा आदि गुणों को उत्पन्न करना है। **निवेदन**-सभी आर्यजनों से निवेदन है कि इस शिविर हेतु अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य के अनुसार आर्थिक सहयोग प्रदान कर पुण्य का लाभ उठायें। **संयोजक-साध्वी उत्तमा यति, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल, मो.-९६७२२८६८६३**

चुनाव समाचार

आर्यसमाज, अग्रवाल मण्डी, टटीरी जनपद-बागपत, उ.प्र. का चुनाव-**प्रधान**-आर्य ब्रिजेश सिंह, **उपप्रधान**-आर्या पुष्पा देवी, **मन्त्री**-आर्य अवतार सिंह, **उपमन्त्री**-आर्य आदित्य, **कोषाध्यक्ष**-आर्य बीर सिंह।

१९. आर्यसमाज सज्जन नगर स्वामी श्रद्धानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) की कार्यकारिणी के वार्षिक चुनाव सम्पन्न-**प्रधान**-हुकम चंद शास्त्री, **उपप्रधान**-भुवनेश जोशी, **मन्त्री**-सौरभ देव आर्य, **उपमन्त्री**-हेमांग जोशी, **प्रचार मन्त्री**-रवीन्द्र तिवारी, **कोषाध्यक्ष**-अशोक उदावत, **पुस्तकालयाध्यक्ष**-आचार्य प्रमोद शास्त्री।

२०. आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर की कार्यकारिणी के चुनाव दिनांक ०७.०४.२०१३ को सम्पन्न हुए। **प्रधान**-अर्जुन देव कालड़ा, **उपप्रधान**-ईश्वर दयाल माथर व विनोद मेहरा, **मन्त्री**-सुरेश साहनी, **उपमन्त्री**-भूषण धवन, **कोषाध्यक्ष**-ओम प्रकाश गुप्ता, **पुस्तकाध्यक्ष**-मोहनलाल लुहाना।

२१. आर्यसमाज पवनपुरी, पटेल नगर, बीकानेर-प्रधान-राधा चरण शर्मा, **मन्त्री**-गौतम सिंह, **कोषाध्यक्ष**-विवेक कुमार कुशवाहा।

शोक सूचना

२२. आर्यसमाज हरीनगर, नई दिल्ली-६४ के वयोवृद्ध पूर्व मन्त्री आनन्द प्रकाश वर्मा का दिनांक २४ मार्च २०१३ को अस्पताल में निधन हो गया। पूर्ण वैदिक रीति से दाह संस्कार किया गया। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्‌गति, शान्ति प्रदान करें।

२३. श्री भोमाराम जी आर्य का दिनांक २०.०४.२०१३ को हृदयाघात से निधन हो गया। आप परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य रहे और सामाजिक, धार्मिक कार्यकर्त्ता रहे। आपके पिता श्री धर्माराम विधायक भी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं। आप भी उन्हीं के पदचिह्नों पर तत्पर रहे।

परोपकारिणी सभा की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि प्रदान कर परिवार के लिए धैर्य प्रदान करने की परमेश्वर से प्रार्थना है। ❋

पाठकों की प्रतिक्रिया, पृष्ठ-३५ का शेष..................

है। क्योंकि हर व्यक्ति (आर्य) ज्योतिस्वरूपता का कुछ तो परिचय देता ही है। मेरा मानस वैदिक-आध्यात्मिक न्यास के वार्षिक स्नेह सम्मेलन एवं संगोष्ठी के विषय में बधाई देना भर है। परोपकारी एवं परोपकारिणी की गतिविधियों की समीक्षा-प्रतिक्रिया तो सहजतया ही हो गई है।

पुनश्च धन्यवाद, आभार, साधुवाद एवं विनम्र नमन सहित। आपका अपना। **-आचार्य वेदमित्र ''वैपाश''**

आनन्द भवन, ३६९ सुभाष नगर, पाल मार्ग, जोधपुर, चलभाष-९४१३६०९००३

वैवाहिकी

इन्दौर (म.प्र.) निवासी, २८ वर्षीय एम.ए., पीएच.डी. अध्ययनरत् योग थेरेपिस्ट, इन्दौर में कार्यरत, वार्षिक आय ३.५० लाख, आर्य (जाट) युवक हेतु आर्य परिवार की सुशीला, सुसंस्कृता एवं संस्कारवती कन्या पक्ष के प्रस्ताव आमन्त्रित हैं। बायोडाटा एवं फोटो भेजें। **सम्पर्क-सुश्री मनोरमा साहू, इन्दौर, चलभाष- ९७१३९१९४६२**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.